

દરે ૧

२२। प्रमीक्षा के एक दृष्टिो हासिल करने का उद्योग।

हनु दण्डी के सम्बन्धी विचारान्तर ।

• २३। नर्या के हक णमीन के रसणिमाठ. की बावत ।

૨૪૧. નશ્વળ પત્ર માઠગુણની દેને કો પાવજહો ।

२५। नश्यत की हितागत वे-व्यवस्था से सिवाय उन हाथों के जो मनुष्य-सुखार्थ कार्य करते हैं।

२६। मनने पर हृत्. द्युति जिस को पहुँचता है।

માણુખાની કા વહાળા ।

૨૭૧ ક્રિસ્ત હાઇળ મેં માઠગુજારો વ્રાજિવ ઓન મુનાસિવ કયાસ કો ખાણી ।

૨૮ । જલદી માણસોનારી વધારે બે ઇલ જૈદ યા રીક ।

२८ । कौठ-कृतान्तो नू से माठगुणारी वढाना ।

उ० । नागिश की नू से माछगुजारी बढ़ावा ।

કર ૧ મામુઠો સનહ કો વુઝિયાદ પન માઠગુજારી વઢાને કો ગિસવળ કાપદે ।

उ० । मात्र यद्वादे को वजह से माओझानो वद्वादे को जिसका ज्ञापन ।

उ३। जमींदार को कोशिश से जमीन को ठियाकर बेचो होवे के समय भागजगारी बढ़ावे के कायदे।

३४। जमीन को ठियाकर दिया के असर से पेसी होने के समय माछाजानी चढावे के कायदे।

उप १. वाणिज्य की नू. से बढ़ाई हुई मातृशालाओं का निधन गौर करना
इत्यादि होनी ।

સર : કમ સે માઠગુણીની વધારે જે દુનમ દેવે જા સ્થપિયાન ।

૩૭૧ માઠગુણનો વહાલો કો વાઙિય વાન વાન દાનન જનને જે દેખે તો દેખે ।
માઠગુણનો ઘટાળા ।

ક્રમ ૧ માહાગુજારીની ઘટાના ૧

ଅଧ୍ୟାୟ ୧ ।

२३ । धाम ध्याते की शरणानं वा निर्मिता ।

ଏଠି ଦିଆ ।

४०। हम माधुपुत्री की जो जिवन में जीती है, वह हमारे
वधवा या माँ की पत्र-व्यवहार में ही है।

छठा वाव ।

ग़ैर दम्पतिकान नश्यत ।

दशे ।

४१ । येह वाव किस पन आयद होगी या ठोगी ।

४२ । ग़ैर दम्पतिकान नश्यत की शूनू की माठगुज़ारी ।

४३ । माठगुज़ारी बढ़ाने की शूनू ।

४४ । ब्रजूरान जिन पन ग़ैर दम्पतिकान नश्यत वे-दम्पति हो सकगा है ।

४५ । पट्टे की मियाद पुरान होने की ब्रजूर से वे-दम्पति की शूनू ।

४६ । माठगुज़ारी बढ़ाने से नानाजी की ब्रजूर वे-दम्पति की शूनू ।

४७ । " ज़मीन पन दम्पति पाया " इस की भगव ।

सातवां वाव ।

शिकमी नश्यत ।

४८ । शिकमी नश्यत से माठगुज़ारी बसूठ बनने की हद ।

४९ । शिकमी नश्यतों की वे-दम्पति के छिए नोके ।

आठवां वाव ।

माठगुज़ारी की निसवग आम कायदे ।

माठगुज़ारी का ग़ादद की निसवग क़यास और कायदे ।

५० । माठगुज़ारी के मुक़नुन होने की निसवग क़यास और कायदे ।

५१ । माठगुज़ारी की ग़ादद और ज़मीन नषने की शूनू की निसवग क़यास ।

ज़मीन को नक़्वा वददने पन माठगुज़ारी को वददना ।

५२ । ज़मीन को नक़्वा वददने की निसवग माठगुज़ारी को वददना ।

अदाय माठगुज़ारी ।

५३ । माठगुज़ारी की किसमें ।

५४ । माठगुज़ारी अदा करने के छिए ब्रक़ और ज़ग़ह ।

५५ । अदा हुई माठगुज़ारी की हिसाब में ठाना ।

नसीद और हिसाब ।

५६ । बासाओ ज़मींदार को रुपया अदा करने के ब्रक़ नसीद पावे का हक़दार है ।

दृष्टे ।

५७ । साठ आधारी पन नश्यत धानिगु-भूगो या जमा वासिष्ठ वाकी का हिसाव पावे का हकदार है ।

५८ । नसीद और हिसाव न देने और उन की पन सानो न नश्यने के ठिये सजा और जुमाना ।

५९ । सनकात नसीद और हिसाव वही का नमूना पश्यात कनके विकरी के ठिये नयेगी ।

६० । गिजस्टी किआ हुआ भाठिक या कोनपनदाण या मुनगहिन की नसीद का असत ।

भाठगुजारी अदात में अमान नयना ।

६१ । अदात में भाठगुजारी अमान नयने के ठिये दन्यासा ।

६२ । अमान नयो भाठगुजारी की नसीद जो अदात से हो गई पक्का सद्धा होगी ।

६३ । भाठगुजारी अमान होने का रसिहात ।

६४ । अमान नये रुपये का अदा होना या वापस देना ।

वाकी भाठगुजारी ।

६५ । द्वाभी हक दनियागी की जमोन या जोग, जो सनह मुकनन पन जोगो जागे है, या जिस पन हक द्युगी है वाकी भाठगुजारी के ठिए नोठाम हो जा सकरी है ।

६६ । और हाठणों में वाकी भाठगुजारी के ठिए ये-दयुगी ।

६७ । वाकी भाठगुजारी पन भूद ।

६८ । बिठा वजह भाठगुजारी अदा न कनने के ठिए, या बिठा सवव किसी मुद्दाथवेह पन नाठिम कनने के ठिये हनजा दिगवे का रपणियात ।

भाठगो भाठगुजारी ।

६९ । पैदावान की कनकूण या वटार के ठिए हुकम ।

७० । कोन-नवाह जहाँ अङ्कन मुकनन किया जाए ।

७१ । जिनस पन द्युग का हक और जसोवहि ।

जमोदान वदवे पन या दनियागी हक या जाग के रणकाठ नाने पन भाठगुजारी अदा कनने को जसोवहि ।

७२ । आसामो उस भाठगुजारी के ठिए कि जो उस ने यगो जनीदान को बिठा पावे गणिता गणकाठ के दिया हा, उस अङ्कन के पास जसोव-देह नोठा कि जिसको भाठिक के जनीदान ने अपना हक दे दिया ।

छठा वाव ।

ग़ैर दम्पतिकान नश्यत ।

दृष्टे ।

४१ । येह वाव किस पन आयद होजा या भोजी ।

४२ । ग़ैर दम्पतिकान नश्यत की शूनू की भाठगुजानी ।

४३ । भाठगुजानी बढ़ावे की शूनू ।

४४ । ब्रजूरान जिन पन ग़ैर दम्पतिकान नश्यत वे-दम्पती हो सकगा है ।

४५ । पट्टे की भियाद पणम होने की ब्रजूर से वे-दम्पती की शूनू ।

४६ । भाठगुजानी बढ़ावे से नानाजी की ब्रजूर वे-दम्पती की शूनू ।

४७ । " ज़मीन पन दम्पती पाया " इस का भगव ।

सातवां वाव ।

शिकमी नश्यत ।

४८ । शिकमी नश्यत से भाठगुजानी ब्रसूठ बनवे की हद ।

४९ । शिकमी नश्यतों की वे-दम्पती के विष्ट नोक ।

आठवां वाव ।

भाठगुजानी की निसवण आम क़ायदे ।

भाठगुजानी का ग़ादा की निसवण क़्यास और क़ायदे ।

५० । भाठगुजानी के मुक़नन होने की निसवण क़्यास और क़ायदे ।

५१ । भाठगुजानी की ग़ादा और ज़मीन नश्यवे की शूनू की निसवण क़्यास ।

ज़मीन का नक़्वा वदवे पन भाठगुजानी का वदवना ।

५२ । ज़मीन का नक़्वा वदवे की निसवण भाठगुजानी का वदवना ।

बदाय भाठगुजानी ।

५३ । भाठगुजानी की क़िसमें ।

५४ । भाठगुजानी बदा बनवे के विष्ट ब्रजूर और ज़ाह ।

५५ । बदा हरे भाठगुजानी की निसाव में नाना ।

नसीद और निसाव ।

५६ । बदा की ज़मीन को लपवा बदा बनवे के ब्रजूर नसीद पावे का नसीद है ।

दृष्टे ।

५७ । साठ आयुषी पर नश्यत द्वाविगुण्यो या जमा वासिष्ठ वाक्ते का
हिंसाव पावे का हकदान है ।

५८ । नसीद और हिंसाव न देने और उन की पर सांगी न नष्यने के विषे
सजा और छुटमाणा ।

५९ । सनका नसीद और हिंसाव वही का नमूना पश्यत कनके विकनी
के विषे नष्येगी ।

६० । नजिस्ती क्रिया हुआ माठिऊ या क्षानपनदाण या मुनरहिन की नसीद
का असत ।

माठगुणानी अदाण में अमान नष्यना ।

६१ । अदाण में माठगुणानी अमान नष्यने के विषे दण्डासत ।

६२ । अमान नष्यो माठगुणानी की नसीद जो अदाण से हो गई पकती
संशर्द्ध होगी ।

६३ । माठगुणानी अमान होने का रक्षणदान ।

६४ । अमान नष्ये रुपये का अदा होना या वापस देना ।

वाक्ते माठगुणानी ।

६५ । दक्षभी हक दानियावी की जमोन या जोग, जो शत मुकनन पर
जोगी जागे है, या जिस पर हक दण्डी है वाक्ते माठगुणानी
के विषे दोषात हो जा सकगी है ।

६६ । और हाठगो में वाक्ते माठगुणानी के विषे वे-दण्डी ।

६७ । वाक्ते माठगुणानी पर नूद ।

६८ । विठा ब्रजह माकूठ माठगुणानी अदा न करने के विषे, या विठा सबब किसी
मुददायदे पर वाठिअ करने के विषे दण्डा विठावे का रक्षणदान ।

माठगो माठगुणानी ।

६९ । पैदादान को कनकूण या वटारि के विषे हुकन ।

७० । क्षान-नवार्ध जहाँ भयन्त मुकनन किया जाए ।

७१ । जिवन्त पर दण्ड का हक और जज्ञावहि ।

जमींदान वटवे पर या दानियावी हक या जोग के रणकाठ लेते पर
माठगुणानी अदा करने को जज्ञावहि ।

७२ । याचामी क्षम माठगुणानी के विषे कि जो क्षम वे यज्ञो जमींदान को
विठा पावे रणिका रणकाठ के दिया या, क्षम यज्ञ के पात्र जज्ञाव-
हेद्वे लोगा कि जिस को रणिक के जमींदान वे अपना हक दे दिया ।

है।

वे-इच्छा करना।

८८। सिद्ध रजनीय डिग्री के प्रति से आसामी की वे-इच्छा नहीं हो सकती।

पैमाश।

८९। प्रमोदान का एक प्रमोव पैमाश करने का।

९०। नश्वर पर हाज़िर होने का और यौहूदी वग़ावे का कुलम अदावा सादिन कर सकती है।

९१। पैमाश का पैमाना।

मवेज़न।

९२। शरीकदारों से ज़ाव ग़व करने का श्यगियान कि रजमाठी मवेज़न मुक़र्रन करने में क़या उज़न है।

९३। उज़न नहीं दिखाने से रजमाठी मवेज़न मुक़र्रन करने के बिचे कुलम देने का श्यगियान।

९४। कुलम ग़ामीठ न होने से मवेज़न मुक़र्रन करने का श्यगियान।

९५। पिछले हज़े के क़ठाज़ (व) की नू से हर मुक़द्दमे में काम करने के लिए किसी श्यस को ज़ामज़द करने का श्यगियान।

९६। कोर्ट आज़ व़ाउंस ऐक सन १८७५ ई० कोर्ट आज़ व़ाउंस के रजगिज़ाम पर आयद होज़ा या ठोज़ा।

९७। वह शूगे ज़ो मवेज़न पर आयद होज़ी।

९८। रजगिज़ाम का काम शरीक माठिकों के हाथ में वापस देने का श्यगियान।

९९। क़ायदा वग़ावे का श्यगियान।

हसनां वाव।

नूयदा हज़क और माठगुज़ानी का वद-ओ-वश।

१००। नूयदा हज़क परशान करने और प्रमोव की पैमाश करने के बिचे कुलम देने का श्यगियान।

१०१। कौन र मनागिव नूयदा में मुवज़न होज़ी।

१०२। माठिक या दामियानी हज़दान की दन्यास पर अइसन माठ (नेज़गिजे अइसन) का गइसीठ बिचने का श्यगियान।

१०३। माठगुज़ानी के इनावे और कठमवद करने की कान-नवाइ।

दृष्टे ।

७३ । एक दृष्टि की जोग शक्तिमान होने पर भाग्यजानों के विषे ज्ञान-
विही ।

वे-भक्ति अवसाय भोजन ।

७४ । अवसाय भोजन भक्ति के विनाश है ।

७५ । जो भाग्यजानों काचित अर्थात् जेभावे रूपका जमींदार विनाश भक्ति
आसामी से वे उस के विष्ट साजा ।

नवां वाव ।

जमींदार और आसामी के विषे ज्ञानमय मुण्डनता ।

जमीन की विधाकरण बढ़ाना या सुधानवे का सामान करना ।

७६ । जमीन की विधाकरण बढ़ाने की गरीब ।

७७ । सनह मुकनन पर जमीन नष्टने की हाथ में, और जहाँ एक दृष्टि
है, उन हाथों में जमीन की विधाकरण बढ़ाने का एक ।

७८ । साहित्य कठिन जमीन की विधाकरण बढ़ाने के एक के जाने में
रुसठा करने ।

७९ । एक दृष्टि न होने की हाथ में जमीन की विधाकरण बढ़ाने का एक ।

८० । जमींदार की कोशिश से जो जमीन की विधाकरण बढ़ो है उस की
नजिस्टरी ।

८१ । जमीन की विधाकरण बढ़ाने की निस्वय सुधूरा कठमवन होने की
दृष्ट्यासा ।

८२ । नश्वर को कोशिश से जो जमीन की विधाकरण बढ़ो है उस के विषे
गठायी ।

८३ । गठायी विधान के ज्ञान है ।

मकान बनाने और और कामों के विषे जमीन हासिल करना ।

८४ । मकान बनाने और दूसरे कामों के विषे जमीन हासिल करना ।
शिकमी पट्टा देना ।

८५ । शिकमी पट्टा देने के विषे कैद ।

संगीथा देना और जमीन छोड़ देना ।

८६ । संगीथा देना ।

८७ । जमीन छोड़ देना ।

जोग की एकसीम करना ।

८८ । अग्न विठा मगधूनी जमींदार जोग एकसीम किया जाय तो वह
उस का पावन न होगा ।

है।

वे-हप्पु करवा।

८८। सिद्ध रणनीय डिग्री के प्रिये से आसामी की वे-हप्पु नहीं हो सकती।

पैमाश।

८९। प्रमोदान का एक प्रमोव पैमाश करने का।

९०। नश्वर पर हाथिने होने का और औरही वगैरह का हुकम अदावर सादिन कर सकती है।

९१। पैमाश का पैमाना।

मवेजन।

९२। अनौकशनों से जवाब गठव करने का रणगियान कि रणमाओ मवेजन मुकनन करने में क्या उज्जुन है।

९३। उज्जुन नहीं दिखाने से रणमाओ मवेजन मुकनन करने के विषे हुकम देने का रणगियान।

९४। हुकम गामोठ व होने से मवेजन मुकनन करने का रणगियान।

९५। पिछले हप्पे के कठाण (व) को नू से हन मुकहमे में काम करने के विषे किसी शप्पस को नामजद करने का रणगियान।

९६। कोर्ट आश वार्डस ऐक सन १८७५ ई० कोर्ट आश वार्डस के रणगियाम पर आयद होजा या ठोरोजा।

९७। वह शनों जो मवेजन पर आयद होजा।

९८। रणगियाम का काम अनौक माठिकों के हाथ में वापस देने का रणगियान।

९९। कथदा वगैरह का रणगियान।

हससां वाव।

नूयदा हकुक और माठगुजानी का वन्द-धो-वर्ण।

१००। नूयदा हकुक परमान करने और प्रमोव को पैमाश करने के विषे हुकम देने का रणगियान।

१०१। कौन व मनागिव नूयदा में मुनदनज होजा।

१०२। माठिक या दानियानी हकदान की दनुपासण पर अद्वन माठ (नेत्रनिजे अद्वन) का गइसीठ विषये का रणगियान।

१०३। माठगुजानी के इनावे और कठमवन्द करने को कान-नदाद।

६३ १

१०५ १ हकी के नूयदाद का मुशफह काना १

१०६ १ नूयदाद की मदी की निसवा गकान की हाठ में कान-नवा १

१०७ १ भाठ के अथसन (जेवनिज अथसन) की कान-नवा १

१०८ १ अथसन भाठ (जेवनिज अथसन) के छेसठे की अपीठ १

१०९ १ नूयदाद की वर मदे जिण के छिपे कुछ हाड़ा नहीं है सुव
कानावन होगा १

११० १ जिस गानीष से भाठगुजानी का वन्द-ओ-वसन जारी होगा १

१११ १ गा पशानी नूयदाद दोनानी अहाठ में मुकदमा जुग या छेसठ
नहीं हो सका १

११२ १ प्यास हाठों में प्यास वन्द-ओ-वसन काने के छिपे हुकम देने का
रूपिया १

११३ १ जिस अनसे एक भाठगुजानी जो उहनाई गई है बिठा गवदी
वहाठ रहेगी १

११४ १ इस वाव की नू से कान-नवा का प्यो १

११५ १ भाठगुजानी के मुकदमा होने का कयास उस दरमियानी हक पर नहीं
होगा जिस के छिपे नूयदाद पशान हुआ है १

ग्यानहवां वाव १

भाठिक की जिण दप्यो जमीन की नूयदाद १

११६ १ पशान जमीन की निसवा वयात्र या रसगिसना १

११७ १ सनकान को येह रूपिया है कि भाठिक की जिण जमीनों की पैमाश
काने थीर उन के जमवन्द काने का हुकम है १

११८ १ अथसन भाठ को येह रूपिया है कि भाठिक या आसाभी की दवापुस
पर उन की जिण जमीनों की जमवन्द करे १

११९ १ जिण जमीन के जमवन्द काने के छिपे कान-नवा १

१२० १ भाठिक की जिण जमीन की गणनीज काने के छिपे कायदे १

वानहवां वाव १

कुर्ती १

१२१ १ जिण हाठों में कुर्ती के छिपे दवापुस हो जा सका है १

१२२ १ दवापुस का नूयदाद १

१२३ १ दवापुस हाठों में पशान कान-नवा १

- ६३६ ।
 १२४ । कुर्की के हुकम की गामोठ ।
 १२५ । गठवी और हिसाब की रणनाथ ।
 १२६ । इसठ काटवे बगौनह बनवे का हुकम ।
 १२७ । जन गठवी अदा न होवे से बीठानी रसगिहान जानी किया जायगा ।
 १२८ । बीठाम की जगह ।
 १२९ । कव इसठ पडी बीठाम हो सकगी है ।
 १३० । बीठाम का जावना ।
 १३१ । बीठाम की मुठगवी नथवा ।
 १३२ । भोठ के रुपये का अदा बनवा ।
 १३३ । पुरीदान की सन्टिशिफेट दिया जायगा ।
 १३४ । जन बीठाम जिस पनह पसुंथु होगा ।
 १३५ । वाण अयुक्त पुरीद वही कर सकते हैं ।
 १३६ । बीठाम के आगे गठवी अदा होवे से कान-नवाह ।
 १३७ । वह रुपया कि अपने पाटे देवे-वाठे के लिए भिक्तमी आसामी ने अदा किया है भाठगुजानी से मुजना हो सकगा है ।
 १३८ । जमीदान भाईक और जमीदान भागहर के हकक का हठाडा ।
 १३९ । उस भाठ की कुर्की जो जवगी गठे हैं ।
 १४० । वे-आरिव कुर्की के लिए हनजा पावे की नाठिय ।
 १४१ । वाण हाठगों में कुर्की का हुकम देवे के लिए ठीकठ जववमेठ का रसगिहान ।
 १४२ । कायदा वजादे के ठिये हार कोट का रसगिहान ।

गैरहवां वाव ।

अदागरी कान-नवाह ।

- १४३ । आरिव कान-नवाह हावादी की जमीदान और कासानी के दानियाण के मुकदमाग ने गननाम बनवे का रसगिहान ।
 १४४ । इस ऐज की नू से की हुई कान-नवाह ने हठ रसगिहान ।
 १४५ । नाथव या गुमासगे कायपनवाण बनहे पायेगे ।
 १४६ । मुकदमों का पास नजिरान ।
 १४७ । भाठगुजानी के मुकदमाग जो हक वद हुकमे के दान नये जाते हैं ।
 १४८ । भाठगुजानी के मुकदमों ने कान-नवाह ।

दृष्टे १

१४८ । जो सुपमा गोसने सभ्यता को अंदा करने के लिये कबूट्र किया ।
उस को अंदाज में अंदा करना ।

१४९ । अंदाज में उस सुपमे को अंदा करना जो निर्मोहान की वाणिज्य-
अंदा कबूट्र किया गया है ।

१५० । सुपमे के एक छुट्ट अंदा करने की शक्ति ।

१५१ । अंदाज नसीब देनी ।

१५२ । भाग्यजानी के मुकदमों में अपील ।

१५३ । जिस पानीपु से भाग्यजानी बढ़ाने की डिग्री का असर होता ।

१५४ । जवनी निश्चित्य का शोध ।

१५५ । वे-दृष्टि किये हुए नश्य के हक दूसरे और जमीन की निश्च-
जो बोने के लिये पश्या की गई है ।

१५६ । वे-दृष्टि के एकज वाणिज्य भाग्यजानी मुकदम करने का अंदा-
का रणधिया ।

१५७ । जमीन नश्य के अंदाज मुकदम करने के लिये दृष्टि ।

यौदहनां वाव ।

वाकी भाग्यजानी की डिग्री जानी का नोताम ।

१५८ । दैन को नद करने का ग्राम रणधिया न्यौदान का ।

१५९ । वंयाये हुए हक ।

१६० । "दैन" और "नजिस्ट्री" की हुई और मुसगहन दैन के माने" ।

१६१ । दैनधिया की हक या जोग के नोताम के लिये दृष्ट्यास ।

१६२ । जवनी का हुकम और नोतामी रणधिया एक साथ जानी हो ।

१६३ । नजिस्ट्री की हुई और मुसगहन दैन का वाज नश्य के दैनधिया
हक या जोग का नोताम और उस को पानी ।

१६४ । दैन को नद करने के रणधिया के साथ दैनधिया की हक या जोग
का नोताम और उस की पानी ।

१६५ । दैन को नद करने के रणधिया के साथ दृष्टि जोग का नोताम
और उस की पानी ।

१६६ । पिछले दृष्टि की नू से दैन को नद करने की जान-न्याय ।

१६७ । ये हुकम देने का रणधिया कि दृष्टि जोग पिछले दृष्टि की नू से
दैनधिया की हक के गौर पर मुसगहन होकर काम में आवे ।

है १

१६६। तसर्तुषु जन नोठाम के कायदे १

१७०। दनमियाकी हक या जोग कुर्की से सिद्ध उस हाठन में निहारि
पावेगा कि जन डिजानी प्यरे के साथ अदावर में दायिम होगा
या जब कि डिजानीदान वसूली कबूठ करेगा १

१७१। नोठाम मौजूद नयने के ठिये अदावर में अदा किया हुआ रुपया
वाण हाठनों में दनमियाकी हक या जोग पर जन नेहन होगा १

१७२। आसामी भागहार जो रुपया अदावर में अदा करने भाठगुजारी से
मुजना कर सकता है १

१७३। डिजानीदान नोठाम में डाक वोठ सकता है पर मध्यून नहीं
वोठ सकता १

१७४। नोठाम नद करने के ठिये मध्यून की दन्यासन १

१७५। दैन पैदा करने-वाले वाण दसगात्रेजों की नजिस्ट्री १

१७६। डिजानीदान के यहाँ दैन की रगिठा १

१७७। दैन पैदा करने का रगिथान नहीं बढ़ाया गया १

पनदनहनां वाव १

कौठ-कनान और निवाण १

१७८। कौठ-कनान के जनिपे से इस ऐक का सगों के वे-कान करने
पर कैद १

१७९। दवाभी मुकनरी पट्टा १

१८०। उगवन्दी यन और दियाना जमीन १

१८१। याकनान जमीन की रसगिसना १

१८२। वसगिर जमीन १

१८३। निवाण-मुठक की रसगिसना १

सोठहनां वाव १

गमादे १

१८४। गोसने सिद्ध में मुनदनजे मुकईने मपोठ और दन्यासन की
गमादे १

१८५। रजियन रिनिटेसन ऐक के कोव फडाए देने मुकईने जमीन
पर बाध नहीं होगी १

६६ ।

१४८ । जो रुपया गोधरे मंडल को बघ करने के लिये कपड़ों में बांधा जाय
उस को बघाव में बघ करना ।

१४९ । बघाव में इस रुपये का बघ करना जो फर्मातान को बांधकर
बघ करके दिया गया है ।

१५० । रुपये के एक छुल बघ करने को कहें ।

१५१ । बघाव नभोद छोड़ो ।

१५२ । भाग्युज्जानी के मुकदमों में बरीग ।

१५३ । मित्र पानीज से भाग्युज्जानी पड़ावे की डिग्री का बंधन है ।

१५४ । जयपी निगमिष का राजा ।

१५५ । दे-हच्छे हिये हुए नवम के एक कच्छे कीन जमीन को मित्र
जो बोने के हिये पसवान को ग्रह है ।

१५६ । दे-हच्छे के दसम शीतल भाग्युज्जानी मुकदम करने का बघाव
का इच्छिधान ।

१५७ । जमीन नवमे के बहाव मुकदम करने के हिये ह्वावर ।

यौदह्यां पान ।

काने भाग्युज्जानी की डिग्री भारी का बीगल ।

१५८ । ह्व को नः करने का नाम इच्छिधान पुरोचन का ।

१५९ । बंधाये हुए ह्व ।

१६० । "ह्व" और "निल्ली" को ह्व और मुकदम ह्व के भावे" ।

१६१ । दमिषादी ह्व या जोर के बीगल के हिये दमिषादी ।

१६२ । जयपी का ह्व और बीगल इच्छिधान एक सार भारी ह्वे ।

१६३ । निल्ली को ह्व और मुकदम ह्व को वात नव के दमिषादी
ह्व या जोर का बीगल और ह्व को पानी ।

१६४ । ह्व को नः करने के इच्छिधान के सार दमिषादी ह्व या जोर
का बीगल और ह्व को पानी ।

१६५ । ह्व को नः करने के इच्छिधान के सार ह्वी जोर का बीगल
और ह्व को पानी ।

१६६ । सिक्के ह्वों को नू से ह्व को नः करने को बान-भार ।

१६७ । ये ह्व ह्वे का इच्छिधान कि ह्वी जोर सिक्के ह्वों को नू से
दमिषादी ह्व के पान पर मुकदम होकर काम में आवें ।

दृष्टे ।

१६६ । गसर्गुष्ठ जन नीलाम के कायदे ।

१७ । दनमियावी हक या जोग कुर्की से सिंगे उस हाथ में निहारि
पावेगा कि जन डिजारी प्यरे के साथ अदातन में दायिम होगा
या जब कि डिजारीदान वसूली कबूठ कनेगा ।

१७२ । नीलाम मौकूथ नयने के छिये अदातन में अदा किया हुआ रुपैया
वाण हाथों में दनमियावी हक या जोग पन जन नेहन होगा ।

१७२ । आसामी भागहन जो रुपया अदातन में अदा कने भाठगुजारी से
मुजना कन सकना है ।

१७३ । डिजारीदान नीलाम में डाक वोठ सकना हे पन मध्यून नहीं
वोठ सकना ।

१७४ । नीलाम नद कने के छिये मध्यून की दनप्राप्त ।

१७५ । दैन पेदा कने-वाठे वाण दसगावेजों की नजिस्टी ।

१७६ । प्रमोदान के यहा दैन की रगिठा ।

१७७ । दैन पैदा कने की रगियायन नहीं बढ़ाया गया ।

पलदनहवां वाव ।

कौठ-कनान और निवाण ।

१७८ । कौठ-कनान के जिनिये से इस ऐक को सगों के वे-कान कने
पन कैद ।

१७९ । दवाभी मुकननी पट्टा ।

१८० । उगवन्दी यन और दिशाना प्रमोव ।

१८१ । याकनान प्रमोव की रसगिसना ।

१८२ । वसगिण प्रमोव ।

१८३ । निवाण-मुठक की रसगिसना ।

सोठहवां वाव ।

गमाही ।

१८४ । गोसने सिद्ध में मुनदनजे मुकईमे अपीठ और दनप्राप्त को
गमाही ।

१८५ । रजियन रिमिटेशन ऐक के कोन द्वाण ऐसे ...
पन बाहर कही ...

सातहवां वाव ।

गणमा ।

सण्मा ।

६३ ।

१८६ । पैदावान में आरिज के वरिष्ठाशु दसग-अनंदाजी करने की सजा ।

जमींदारों के एजेण्ट और कानपनदाज ।

१८७ । कानपनदाज के मानशुग जमींदार को काम करने का श्रमियान ।

१८८ । शरीफदान जमींदार रजमाठन या मानशुग कानपनदाज रजमाठो काम करने जों ।

कायदे इस ऐक की नू से ।

१८९ । कान-नवाइ अशुसनों के श्रमियान और रजनाय रसगिहान के वागे में कायदे वनावे का श्रमियान ।

१९० । कायदों के वनावे और उन के मसहून करने और मजबून करने की कान-नवाइ ।

मियादी वगद-ओ-वसगी रजठा के ठिये शनूगे ।

१९१ । उस जमोन को रसगिसना जो मियादी वगद-ओ-वसग के जिठे में बाके है ।

१९२ । सनकानी जमा का नया वगद-ओ-वसग होने से माठगुजारी वगदने का श्रमियान ।

यनागार सजोनह के हक ।

१९३ । यनागार के हक वगकन सजोनह ।

उन मनुगों के लिए बयास कि जिन का जमींदार पावगद है ।

१९४ । सामानो रस ऐक की नू से उन मनुगों को नहीं तोड़ सकना जिन का जमींदार पावगद है ।

घाम ऐसो का बयाना ।

१९५ । घाम ऐसो के ठिये रसगिसना ।

मगदव की मनुह ।

१९६ । जो रस दसरत-अवतन वजावे रजठाम कीवसिठ रस के वाद कामा करने उन पर ठेकाज करने पैर ऐक पड़ा जायगा ।

जिहूद रस-ऐसो की मनुह ।

जिहूद रस-ऐसो की मनुह वगद के मनुगे ।

जिहूद रस-ऐसो ।

बंगाल की प्रमोद नयने की आँखें ।

पहला वाव पहली वागें ।

ये एक ऐक है ऐसे बाग ऐनों को मनमीम और एकटा करने के लिए, जो आँख प्रमोदान और आसामी से ऐसे मुक्त के भोगन, जिस का वनद-ओ-वसग ठसठनठ-गवनन साहिब बहादुर बंगाली करने हैं, जिसका नयने हैं—

यू के ये मुनासिब भागूम होगा है, कि वह यनद ऐक जो आँख प्रमोदान और आसामी से उस मुक्त के भोगन, जिस का वनद-ओ-वसग ठसठनठ-गवनन साहिब बहादुर बंगाली करने हैं, जिसका नयने हैं, मनमीम और एकटा सिध जायें, इस लिए आगे वगारि हुई आँख वगारि जायें है ।

पहला वाव ।

पहली वागें ।

१ । (१) इस आँख को बंगाल की प्रमोद नयने की आँख सब रच्य कर सकते हैं ।

मुयनसर नाम ।

(२) यह ऐसे दिन से जानी होगी (जो इस के पोछे इस ऐक के जानी होने का दिन कहलाया जायगा) कि ठीकठ गवनमेनठ, गवनन-गेवनन साहिब बहादुर राजास कौनसिठ की मगपूनी पढे हासिठ करने, ठीकठ गजठ में रसगिदान व्याप कर, इस काम के लिए उद्गाए ।

जानोहोकीपानीपु।

(३) यह आँख अपने कवन से उन सब जगहों में जानी होगी, जिन का वनद-ओ-वसग ठसठनठ-गवनन साहिब बहादुर बंगाली करने हैं, पर कवन कठकपुता, उड़ीसा गोजन और उन किस्मिदग किए हुए (हिंदु) जिहों को इन कि हिंदु जिहों के ऐक कवन रच्य किहों के पढे हुए के गोसने जिहों में बगाए गए हैं, और ठीकठ गवनमेनठ गवनन-गेवनन साहिब बहादुर राजास कौनसिठ की मगपूनी पढे ठीकठ गजठ में रसगिदान व्याप

जिस जिस जिहों में जानी होगा ।

कन. यह जाना ऐल या कोई इस का हिस्सा उड़ीसा डिब्रीज
में या उस के किसी हिस्से में जानी कन सकती है ।

६ होना ।

२। (१) वह ऐल जो इस के साथ गंगाए हुए पहले सिद्ध
में दिखाए गए हैं, उन जगहों के लिए नए लिए गए
हैं जिन में यह ऐल अपने असन से काम में आता है ।

(२) जब यह ऐल उड़ीसा डिब्रीज में या उस के
किसी हिस्से में जानी किया जाए, तो उन भागों में से ऐसे
जो उस डिब्रीज में या उस के हिस्से में जानी हैं, या
जहाँ इस ऐल का सिद्ध एक हिस्सा उस गहर से जानी
किया जाए, तो उन भागों में से ऐसे, जो उस हिस्से
के वरिष्ठता हैं, उस डिब्रीज या उस के हिस्से के लिए
नए लिए जाएंगे ।

(३) कोई भाग या हस्ताभेज, कि उस भाग से निस्-
वग नष्पता है जो इस को नू से नए की गई है, ऐसा
अमदा जाएगा, कि इस ऐल से या उस के जोत मुनासिब
हिस्से में गमगुन नष्पता है ।

(४) इस भाग को नू से किसी भी भाग का
नए होना किसी एक, वरिष्ठता, मुनासिब, या बाग को जो
इस ऐल के जानी होने के प्रकृत अमद में नही है, या वही
हुई नही है, किन कारण न करनेगा ।

३। इस भाग में जो गमगुन भी कनोने में कुछ
होता न हो गो-

(१) अमद में एक जनात अमदा जागी है जो एक
बा के गठे अरकावे जमा कन कनो-प्राप्ति भी मुनासिब
कनोने के ऐसे, कन वरिष्ठता में दिखाई हुई है जिनको
गठे के कटकर ने एक प्रकृत के भाग को नू से वना
कम है, कोन एक में कनोने का अमद नी अमदा
होता है कोन अरकावे जमा जागी में मुनासिब जनात
का, कनोने वरिष्ठता के अमद कनोने है ।

(२) कोनो के एक वरिष्ठता अमदा जागी है
कोनो के अमद का अमद के वरिष्ठता एक कनोने नमद
है, कोनो के एक वरिष्ठता के अमद का अमद कनोने के वरिष्ठता
है, कोनो के वरिष्ठता के अमद का अमद जागी है जो वरिष्ठता
वरिष्ठता के अमद का अमद नमद है, कोनो के एक वरिष्ठता

है जिस को किसी भूखाने ने, कि लोक गवर्नमेन्ट को गलब से इस काम के लिए मुकदमा किया गया है, वह करने ऐसी गलतीकाग सत्यमीन ज्ञाया है, जो ऐसा इतिहास देखने की जरूर है, जिस को लोक गवर्नमेन्ट उन लोगों की इच्छा के लिए काड़ी समझते हैं, जो उस से गवर्नमेन्ट नष्पते हैं ।

(११) पेटो के वनस से जहाँ बंजारी वनस यठना है वह वनस समझा जागा है कि वैसाय के पहिले दिन से शुरू होगा है और जहाँ दूसरी या ममरी वनस जानी है, वह वनस कि यासन के पहिले दिन से ठागा है और जहाँ कोई और वनस पेटो के काम के लिए यठना है तो वह वनस समझा जागा है ।

(१२) वनस-बो-वसुग इतिहासानी से बंजारा, बिहार और उड़ीसा का दलामी वनस-बो-वसुग जो सन १८८० में किया गया था, समझा जागा है ।

(१३) ब्रसां मिठवे में वे-बसीधर और बसीधर की नू से ब्रसां मिठवा दोनों शामिल है ।

(१४) दसगुणर किए हुए में उस ब्रकण निशान किया हुआ भी शामिल है, जब निशान करने-बादा आदमी अपना नाम नहीं लिख सका; और इस में लिखने किए हुए आदमी के नाम का मुहर छापा हुआ भी शामिल है ।

(१५) ज्ञायाए हुए से, लोक गवर्नमेन्ट की गलब से इतिहास सनकानी गण्ट में छाप कर, ब्रकण ब्रकण पर ज्ञायाए हुआ समझा जागा है ।

(१६) कठजान से कठजान जिठे या और ऐसा कोई अखसत समझा जागा है, जिस को लोक गवर्नमेन्ट ने, इस ऐज की नू से, कठजान का इच्छियान काम में ठाने के लिए मुकदमा किया है ।

(१७) अखसत माठ (नेत्रेनि ज-अखसत) से इस ऐज के किसी दलमें ऐसा अखसत समझा जागा है, जिस को लोक गवर्नमेन्ट नाम या उस के ओहदे की नू से अखसत माठ का इच्छियान उस दल की नू से, काम में ठाने के लिए मुकदमा करने ।

(१८) निजिस्त्री किए हुए से ऐसे किसी ऐज की नू से निजिस्त्री किया हुआ समझा जागा है, जो उस सकल वसगावेजों की निजिस्त्री के लिए जानी है ।

हूसनी वाव ।

आसाभिओ की-किसमें ।

४। इस ऐज के मनागिव के लिए आसाभी आगे ठिप्यो हुरे किसमों की हांजी, यावे :-

(१) हनियानी हकदान जिन में हनूनी हकदान शामिल है ।

(२) नश्यन-श्रीन

(३) सिकमो नश्यन, यावे ऐसे आसाभी जो बिठा गवस्तुन या व-गवस्तुन हूसने के, नश्यनों के मागहन जोग नप्यगे हैं, श्रीन आगे ठिप्यो हुरे किसम के नश्यन, जैसे

(अ) नश्यन जो शनह मुक्तन पन जोग नप्यगा है, जिस इवान में सह नश्यन शामिल है, जो माठगुजानी मुक्तन पन, या एक मुक्तन शनह माठगुजानी पन जोग नप्यगा है ।

(व) ह्यठकान नश्यन, यावे ऐसे नश्यन जो मपनो नप्यो हुरे जमीन पन हक ह्यठो नप्यगे हैं ।

(स) जौन ह्यठकान नश्यन, यावि सह नश्यन जो ऐसा हक ह्यठो नहीं नप्यगे हैं ।

प । जहाँ जोग का नकवा किसी आसाभी के ह्यठ में कानूनी रू विधि से चड कर है, तो आसानो उस सकल गक हनियानी हकदान कयास किया जाएगा जब गक कि उस के बर्षिठाव न हियगया जाए ।

हनियानी हकदान
श्रीन नश्यन के माने ।

(१) हनियानी हकदान से अन्त में सह आदनी समझा जागा है, जिस वे किसी मागिक या श्रीन हनियानी हकदान से माठगुजानी गहसोड करने के लिए, या उन पन नश्यन वसा कर उस को जोगने के लिए, जमीन नप्यगे का हक हासिल किया है, श्रीन इस में ऐसे आसानों के जानशेन भी शामिल हैं, जिन्होंने वे ऐसा हक पाया है ।

(२) नयमन से मन्त्रों में वह गण्यता समझा जाया है, जिस से आप या अपने घर के लोगों से, या किसी कला के नौकरों की मान्यता, या किसी हिस्से-दार की मदद से जमीन खोदने के लिए हासिल की है, और इस में ऐसे गण्यता के जानयोग भी शामिल हैं, जिनमें वे ऐसा हक पाया है ।

नशरोह-जहाँ जमीन की आसामी को उस के खोदने का हक है, तो ऐसा समझा जायगा कि, उस ने खोदने के लिए उस के नयने का हक हासिल किया है, अतः वह उस से उस की पैदावार इकट्ठा करे, या उस को भरेखो खनाने के लिए काम में लाए ।

(३) कोई आसामी नशरा न समझा जायगा, पर उस हाथ में कि जब वह किसी भादिक के या किसी दलियानी हकदार के मागहण, बिना वस्तुतः और किसी के जमीन नयना है,

(४) इस बात के उद्देश्य के लिए कि आसामी दलियानी हकदार या नशरा है, अतः आगे छिपी हुई बातों पर विचार करनेगी-

(अ) जगह के निवाज पर; और

(व) उस भगवत पर जिस के लिए जमीन नयने का हक पहले हासिल किया गया था ।

रीसना बाव ।

दलियानी हकदार ।

मागुजानी का बढ़ाना ।

यानी हक की नीजो इस्ति-
मूल-ओ-वस्तु
से खरा आया
गए हाथों में
सकता है ।

ह । जहाँ दलियानी हक का दखल दलामी वन-ओ-वस्तु के प्रकरण से खरा आया है, उस की मागुजानी नहीं बढ़ाई जा सकती है, पर आगे छिपी हुई बातों के साधन होने पर-

(अ) कि वह प्रमीदान जिस के मागहण वह दलियानी हक नया गया है, उस जगह के निवाज की नू से, या ऐसी शर्तों की नू से, जिन पर वह दलियानी हक नया गया है, उस की मागुजानी बढ़ाने का हक नयना है ।

(व) उस दनमियानी हकदार ने अपनी माओगुजानी ऐसे किसी समय से जो दनमियानी हक को जमीन के घटने से रोकना नहीं नयना है, घटाती है, और याही हक वढ़नी माओगुजानी अदा करने के लिए नयना को ठारक किया है, और उस को जमीन उस के देने ठारक है ।

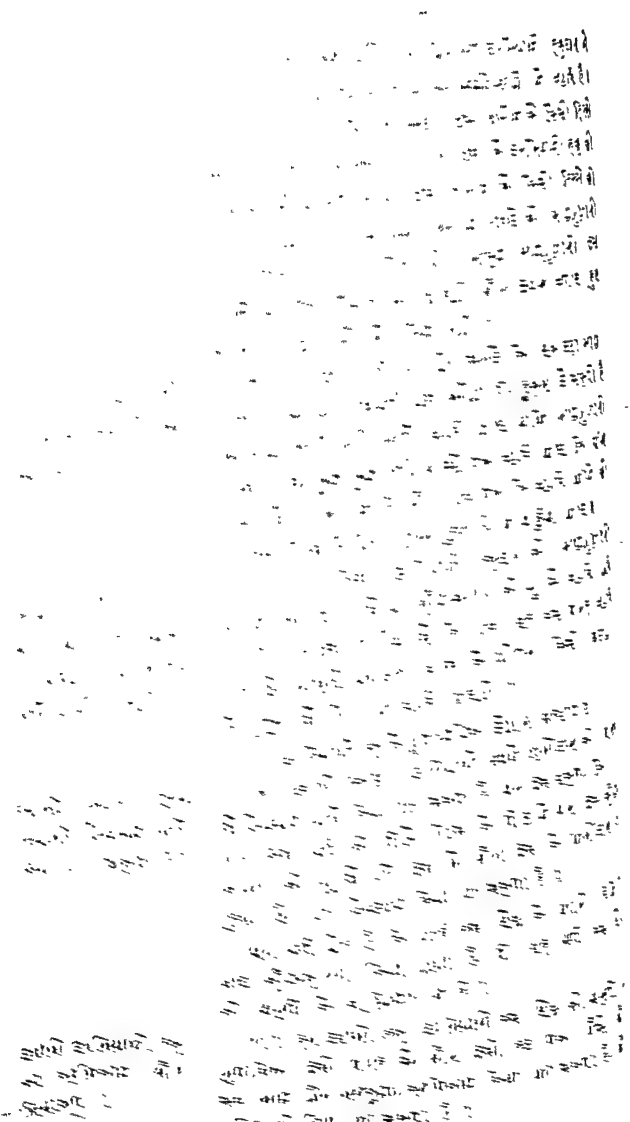
७। (१) जब किसी दनमियानी हकदार को माओगुजानी बढ़ाई जा सकती है, तो वह ऐसे कौठ-कानन के मुआयिज कि जो दोनों गन्यों में हुआ है, उस मामूली शर्ह की हद तक बढ़ाई जा सकती है, जो ऐसे शयनों से ठी जाती है कि उस के आस-पास में उसी गनह का दनमियानी हक नयने है ।

दनमियानी हक की माओगुजानी बढ़ाने की हद ।

(२) अगर कोई ऐसी मामूली शर्ह न हो, तो जपन बनाए हुए कौठ-कानन के मुआयिज, वह उस हद तक बढ़ाई जा सकती है, जिसे अदातन बाणिव और मुनासिव समझे ।

(३) इस बात की गजबोण करने के लिये कि, कौन सी हद बाणिव और मुनासिव होगी, अदातन दनमियानी हकदार को कानिठ माओगुजानी से जो उस को अदा होने ठारक है, माओगुजानी रकड़ना करने का धर्म मुजना करने के बाद जो कुछ बाकी बचे, उस में से द नुपए सैकड़ों से कम नया न देगी, और आगे लिये हुए बागों पर लिहाज करनेगी ।

(४) जिन हाठगों में दनमियानी हक पहले पहल शुरू हुआ जैसे कि, वह जमीन जो दनमियानी हक में है, या उस का वहुगुना हिस्सा दनमियानी हकदार के पति से, या उस के धर्म से, या उस के पहले हक नयने-सालों की गनह से पहले जाया गया था, या नहीं और उस दनमियानी हक के पड़े करने पर जमाने का नुपेया दिया गया था या नहीं, और दनमियानी हक को जमीन पहले आवाद करने के लिए बहुत कम माओगुजानी पर दिया गया था या नहीं, और



१२। (१) विक्रीनी या वधशिस या नेहन की नू से किसी दवाभी हक दानियानी का शर्गिकाठ (जो बीठाम रजनाए डिमी से, या पठनी या और हक दानियानी से जिसवण नथगी हुई किसी शर्ग के मुगाविक सनसनी बीठाम को नू से शर्गिकाठ कनदे से भठग है) सिर्ध नजिस्ट्री किए ईए दसगावेण के जलिए से हो सकगा है।

दवाभी हक दानिया
को अपनी भर्जी
पुटा कनगा।

(२) नजिस्ट्री केर्न-वाठा अथसन ऐसी किसी दसगावेण की नजिस्ट्री न कनेगा, जिस के जलिए से कोई दवाभी कि दानियानी विक्रीनी, वधशिस या नेहन की नू से शर्गिकाठ किया जागा है, जब तक उस को उस थोअ के सिवाए जो उस वकल दसगावेणों की नजिस्ट्री के लिए मुताअण ऐक की नू से दिया जागा है, पादाह मुकनीन की गामोठी छीस और आगे छिपी-हुई पादाह की छीस (जो रस में पीछे से जर्मोहनी छीस कहवाई जाएगो) न हो जाए, यात्रि-

(अ) जब दानियानी हक की जर्मोव के लिए भाठ-गुजानी हो जागी है तो, दानियानी हक की जर्मोव का साठगा भाठगुजानी पर सैकड़े पीछे हो रुपए की छीस, व-शतगे कि ऐसी छीस एक रुपए से कम और सौ रुपए से बढ़ कर न हो, और

(ब) जब दानियानी हक की जर्मोव के लिए भाठगुजानी नहीं हो जागी है, तो दो रुपए छीस।

(३) जब ऐसी दसगावेण की नजिस्ट्री पूरी हो जाए तो नजिस्ट्री कनदे-वाठा अथसन जर्मोहनी छीस, और रूनाए हुए वकशे में शर्गिकाठ और नजिस्ट्री किए जादे को शर्गिकाठ, कठजन के पास भेज देगा, और कठजन जर्मोहान को उस छीस देवे, और वगाए हुए गीन से उस पर उस शर्गिकाठ की गामोठ होवे, का सामान कनेगा।

१३। (१) जब कोई दवाभी हक दानियानी ऐसी डिमी के रजनाए में बीठाम किया जागा है, कि जो उस के बाकी भाठगुजानी की डिमी से भठग है, तो मदावण दहे २१२ शर्ग का न-नर्गई दवाणी की नू से, उस बीठाम के मनुजून कनदे के पछे, पुरोहान को पेह हुकम दे सकगी है कि, मदा-वण में जर्मोहान की छीस जो पिछे दहे में वगाई गई है

ऐसी डिमी की रजना
में जो भाठगुजानी
की डिमी नहीं है बीठाम
की नू से दवाभी
हक दानियानी शर्गिकाठ
कनगा।

(१)

(

को

जो

उ

प

१

c

नथुनेनथुने माछुजानी
वडावे के हुकुम देवे का
अपिधान ।

माछुजानी जो एक
वान बढाई जा युकी
है, एननन वनस न
नहीं बढी जाएगी ।

द्वामी एकद्वान
निधानी चन्द्रपद
त्रिया जा अक्षर

द्वामी एकद्वान
निधानी चन्द्रपद
त्रिया जा अक्षर

द्वामी हकदार दामियाणा को गनह, उहो अनगो के पावे होगा ।

(व) अपने जमींदार से वे-दण्ड नहीं लिया जा सकता सिवाए उस हाथ के, कि जब उस ने ऐसी एक शर्त तोड़ी है, जो उस ऐज के वर्धिठाथ नहीं है, और जिसके गोड़ने पर, उस कौंठ कृपा कि नू से, जो उस के और उस के जमींदार के बीच में लिया गया है, वे-दण्ड लिया जा सकता है ।

पायत्रां वाव ।

दण्डकान नश्यत ।

आम ।

१८ । हन नश्यत जो उस ऐज के जगरी होवे के पहे, किसी और ऐज के अक्षर से, इसगून को नू से या और किसी गनह से, किसी जमीन पर एक दण्डो नयगा है, जब ये ऐज जगरी होगा, उस जमीन पर एक दण्डो नयगा—

जिन को हाथ में एक दण्डो है वह एक बहाउ रहेगा ।

२० । (१) हन आदमी, जिस ने उस ऐज के जगरी होवे के पहे या पीछे, बनावन वानह वनस तक, नश्यत के गौर से कोई जमीन किसी गांव में, याहे पट्टे पर या और किसी गनह से, नयो है, उस वक्त के गुजानवे के बाद, उस गांव का ज़ायमी नश्यत समझा जायगा ।

ज़ायमा नश्यत का गानोय ।

(२) उस दंड के मनागिव के ठिए, अगल कोई आदमी किसी गांव में बगल बगल वक्त पर, बगल बगल जमीन नयगा हो, तो ऐसा समझा जायगा, कि उस ने जमीन बनावन नयो है ।

(३) उस दंड के मनागिव के ठिए, अगल कोई शयस वगौर नश्यत के जमीन नयगा है, तो उस का दानिस जो उस जमीन को वगौर नश्यत के नयगा हुआ समझा जायगा ।

(४) वह जमीन जिस को दो या जियाहं कनोको ने नयगो जोग को गनह नयो है, उस दंड के मनागिव के

अद्य कने; श्रीन ऐसो श्रीन छीस गो अद्य कने जो प्रमीदान पर
नीठाम को रणपिठा गामोठ कने के छिए मुकनेन की जाए ।

(२) जब नोठाम मजपूत कन छिया जाए, गो अद्यठग
कठजत के पास प्रमीदानो छीस श्रीन ईनाए हुए वक्तो में
नोठाम को रणपिठा मेज देतो, श्रीन कठजत उस छीस के
प्रमीदान के पेश अद्य किए जावे, मौन वगाए हुए गौन से
उस पर रणपिठा जानी कने का सामान कनेगा ।

१४ । जब किसी द्वाभो हक दनमियावो का, उस को
वाकी माठगुजानी को डिभो को गामोठ में, नोठाम को
नू से रणपिठा किया जागा है, गो अद्यठग कठजत के
पास वक्तो मुएएवे में नोठाम को रणपिठा मेज देतो ।

१५ । जब कोई द्वाभो हक दनमियावो का वानिस होगा
है, गो उस वानिस को चाहिए कि मुकनेन किए हुए वक्तो
में बिरासण को रणपिठा कठजत को देवे, श्रीन उस को
प्रमीदान पर रणपिठा गामोठ कने को देनाई हुई
छीस, ओ दखे १२ में वगाई हुई प्रमीदानो छीस गो
देवे, श्रीन कठजत वह छीस प्रमीदान को देगा, श्रीन उस
पर देनाए हुए गौन से रणपिठा गामोठ कनेगा ।

१६ । कोई आदमी जो वनसे को नू से किसी द्वाभो
हक दनमियावो पर दण्ड पागा है, नाठिस, जवणो, या श्रीन
कान-नवाई कने वह माठगुजानी नहीं वसूठ कन सकगा है,
जो व-हैसिअण दनमियावो हकदान उस को दिया जाना चाहिए,
पर उस हाठग में कि जब कठजत ने जपन ठिमे हुए
पिछे दखे में वगाई हुई रणपिठा श्रीन छीस पाई हो ।

१७ । दखे ८८ की सनगो के गावे होकर दखे मजकूने-वाठा
द्वाभो हक दनमियावो के हिस्से के रणपिठा कने या
वनसा पावे में काम में आएँगे ।

औथा वाव ।

अनह मुकनेन पर जोग नयने-वाठा नरथण ।

१८ । नरथण जो कि द्वाभो माठगुजानी पर या
अनह माठगुजानी पर जोग नयना है—

(अ) अपनी जोग के रणपिठा श्रीन बिरासण की निरुवण,

माठगुजानी को रण-
नाए डिभो में द्वाभो
हक दनमियावो का
नोठाम को नू से रण-
पिठा कनेगा ।

द्वाभो हक दनमियावो
पर वनसा पागा ।

वनसे को रणपिठा न
देवे गक माठगुजानी
वसूठ नहीं हो सकगा ।

द्वाभो हक दनमियावो
के हिस्से का रणपिठा
कनेगा या वनसा पागा ।

अनह मुकनेन पर जोग
के मुएअठक वागे ।

द्वामो हकदान दामियावा को गनह, उहो अनो
के गावे होगा ।

(व) अपने जमींदान से वे-दण्ड नहीं लिया जा सकता
सिवाय उस हाथ के, कि जब उस ने ऐसा
एक शर्त तोड़ी है, जो उस ऐज के वर्धिभाय नहीं
है, और जिसके तोड़ने पर, उस कौंठ कमान कि
नू से, जो उस के और उस के जमींदान के बीच
में लिया गया है, वे-दण्ड लिया जा सकता है ।

पायवां वाव ।

दण्डकान नरथग ।

आम ।

१८ । हन नरथग जो उस ऐज के जानी होने के
पहले, किसी और ऐज के धसन से, हसगून को नू से
या और किसी गनह से, किसी जमीन पर हक दण्डो
नथगा है, जब ये ऐज जानी होगा, उस जमीन पर
हक दण्डो नथेगा—

जिन को हाथ में हक
दण्डो है वह हक वहाव
नहेगा ।

२० । (१) हन आदमी, जिस ने उस ऐज के जानी होने
के पहले या पीछे, वनावन वानह वनस गक, नरथग के
गौर से कोई जमीन किसी गात्र में, याहे पट्टे पर या
और किसी गनह से, नथी है, उस प्रकृ के गुणनने के
बाद, उस गात्र का जामो नरथग समझा जायगा ।

जामो नरथग का
गानेय ।

(२) इस दहे के मनागिव के लिए, अगल कोई आदमी
किसी गात्र में भठग भठग प्रकृ पर, भठग भठग जमीन
नथगा हो, गो ऐसा समझा जायगा, कि उस ने जमीन
वनावन नथी है ।

(३) इस दहे के मनागिव के लिए, अगल कोई राज्य
वगौर नरथग के जमीन नथगा है, गो उस का आदिस
जो उस जमीन को वगौर नरथग के नथगा हुआ समझा
जायगा ।

(४) वह जमीन जिस को दो या अधिक दहे को दो
नरथगो जोर को गनह नथी है, इस दहे के मनागिव के

अदा करने और ऐसी और थोस भी अदा करने जो प्रमीदान पर नोठाम की शक्तिता गामीठ करने के लिए मुकनेन की जाए।

(२) जब नोठाम मजपूर कर दिया जाए तो अदाठ कठजन के पास प्रमीदानी थोस और ठीकाए हुए नकशे में नोठाम की शक्तिता मेज देगी, और कठजन उस थोस के प्रमीदान के पेहाँ अदा किए जाने, और वगाए हुए गौन से उस पर शक्तिता जारी करने का सामान करनेगा।

माठगुजारी की शज-
नाए डिमी में द्वाभी
हक दनमियानी का
नोठाम की नू से श-
क्तिता करनेवा।

द्वाभी हक दनमियानी
पर वनसा पाना।

१४। जब किसी द्वाभी हक दनमियानी का, उस की वाकी माठगुजारी की डिमी की गामीठ में, नोठाम की नू से शक्तिता किया जाना है, तो अदाठ कठजन के पास नकशे मुएएवे में नोठाम की शक्तिता मेज देगी।

१५। जब कोई द्वाभी हक दनमियानी का वानिस होना है, तो उस वानिस को चाहिए कि मुकनेन किए हुए नकशे में विनासण की शक्तिता कठजन को देवे, और उस की प्रमीदान पर शक्तिता गामीठ करने की, ग्हाई हुई थोस, ओ दूधे १२ में वगाई हुई प्रमीदानी थोस भी देवे, और कठजन वह थोस प्रमीदान की देगा, और उस पर ग्हाई हुए गौन से शक्तिता गामीठ करानेगा।

वनसे को शक्तिता न
देवे एक माठगुजारी
बसूठ नहीं हो सकगी।

१६। कोई आदमी जो वनसे की नू से किसी द्वाभी हक दनमियानी पर दम्पठ पाया है, नाठिस, जवतो, या और कान-नवाई करने वह माठगुजारी नहीं बसूठ कर सकगा है, जो व-हंसिथण दनमियानी हकदान उस को दिया जाना चाहिए, पर उस हाठग में कि जब कठजन ने जपन ठिये हुए पिछठे दूधे में वगाई हुई शक्तिता और थोस पाई हो।

द्वाभी हक दनमियानी
के हिस्से का शक्तिता
करनाया वनसा पाना।

१७। दूधे ८८ की शर्तों के पावे होकर दूधे मजकूने-वाठ द्वाभी हक दनमियानी के हिस्से के शक्तिता करने या वनसा पाने में काम में आये।

यौथा वाव।

अनह मुकनेन पर जोग नथवे-वाठा नरमण।

अनह मुकनेन पर जोग
के मुनवठठ वाने।

१८। नरमण जो कि द्वाभी माठगुजारी पर या अनह माठगुजारी पर जोग नथगा है-

(क) बसगी जोग के शक्तिता और विनासण को निबूवण,

हमारी हक़दार दरमियावा की तरह, उन्हीं अनर्गों
के पाये होना ।

(व) अपने ज़मींदार से वे-व्यव नहीं किया था सत्तार
सिवाए उस हाथ के, कि जब उस ने ऐसी
एक शर्त गोड़ी है, जो इस ऐज के वर्धितार्थ नहीं
है, और जिसके गोड़ने पर, उस कौन क़ान कि
नू से, जो उस के और उस के ज़मींदार के बीच
में किया गया है, वे-व्यव किया था सत्तार है ।

पायसां वाव ।

व्यवहार नश्यत ।

आम ।

१८ । हम नश्यत जो इस ऐज के जानी होवे के
पहले, किसी और ऐज के अन्त से, हमारा की नू से
या और किसी तरह से, किसी ज़मीन पर एक व्यक्ती
नश्यत है, जब यह ऐज जानी होना, उस ज़मीन पर
एक व्यक्ती नश्यत—

जिन की हाथ में एक
व्यक्ती है वह एक वहाव
नहोना ।

२० । (१) हम आदमी, जिस ने इस ऐज के जानी होवे
के पहले या पीछे, बनावत बाहर बसत एक, नश्यत के
तीन से कोई ज़मीन किसी ज़ात में, याहें पाठे पर या
और किसी तरह से, नयी है, उस बहुर के गुज़ारने के
बाद, उस ज़ात का ज़ायमी नश्यत समझा जायगा ।

ज़ायमी नश्यत का
पानीय ।

(२) इस दहे के मतानिव के लिए, आज कोई बादनी
किसी ज़ात में भोज भोज बहुर पर, भोज भोज जानी
नश्यत हो, तो ऐसा समझा जायगा, कि उस ने ज़मीन
बनावत नयी है ।

(३) इस दहे के मतानिव के लिए, आज कोई शब्द
ब-गीन नश्यत के ज़मीन नश्यत है, तो इस का बर्तन
जो एक ज़मीन को ब-गीन नश्यत के नश्यत हुआ समझा
जायगा ।

(४) वह ज़मीन जिस की दो या ज़्यादा दहेको ने
नश्यत ज़मीन की तरह नया है, इस दहे के मतानिव के

दिए, ऐसा समझा जायगा, कि ऐसे ही एक शरीर के नश्वर के गौन पर उस को नष्ठा है ।

(५) ही आदमी किसी जाति का कायमी नश्वर जब एक समझा जायगा, जब एक कि वह उस जाति में नश्वर के गौन से प्रमीन नष्ठा है, और उस के एक वस्त्र पीछे एक भी ।

(६) जो कोई नश्वर दृष्टि ८७ को नू से प्रमीन का दृष्टि छिन पाया है, तो ऐसा समझा जायगा, कि अगले वह एक वस्त्र से जियादे वस्त्र के दिए वे-दृष्टि किया गया हो, पर जब भी वह कायमी नश्वर है ।

(७) जो इस ऐज की नू से को हुई किसी कान-नवाँ में, ये वाग साविन हो या कवूठ की जाए, कि कोई आदमी नश्वर के गौन से प्रमीन नष्ठा है, तो उस के, और उस के प्रमीन के दनमियाव के मुकदमों में, जिस के मागण वह प्रमीन नष्ठा है, जब एक कि इस से उठती कोई वाग साविन न हो, या कवूठ न की जाए, इस दृष्टि के मतानिव के दिए कयास किया जायगा, कि उस के वानर वस्त्र एक वनावन नश्वर के गौन से प्रमीन नष्ठा है, या उस का कोई हिस्सा नष्ठा है ।

कायमी नश्वर एक दृष्टि नष्ठा है ।

२१ (१) ही शय्यस जो हसव भगवा जपन दिग्मे हुए अथीन दृष्टि के, किसी जाति का कायमी नश्वर है, उस सारी प्रमीन पर, जिस को वह उस जाति में उस वस्त्र नश्वर के गौन से नष्ठा है, एक दृष्टि नष्ठा ।

(२) ही शय्यस जिस के हसव भगवा जपन दिग्मे हुए पिटठे दृष्टि के, किसी जाति का कायमी नश्वर होकर दूसरी भाव्य सन १८८८ ईसवी, और इस ऐज के जानी होने के बीच में, किसी वस्त्र, व-गौन नश्वर के, उस जाति में प्रमीन नष्ठा है, ऐसा समझा जायगा, कि उस प्रमीन में उस वस्त्र के भावन को नू से, उस के एक दृष्टि हासिठ किया है, पर इस प्रमीन दृष्टि में कोई ऐसी वाग नहीं है, जो इस ऐज के जानी होने के पहले किसी वस्त्र को दो हुई डिगरी या दूसर पर सन पट्ट्याए ।

२२ । (१) जब दण्डी जोग का जर्मोदान मादिक या द्वाभी हकदान दनमियावी है, और उस जोग के जर्मोदान और नश्य का सारा हक एक शय्यस के कपड़े में उसी शक्तिगण या वनसा या और किसी गन्ह से आया है, तो हक दण्डी जाया नहोता, पर इस जर्मोमे दसे में कोई ऐसी वाग नहीं है, जिस से किसी गीसने आदमी के हक को बुकसान पड़्ये ।

(२) अगल जर्मोव का हक दण्डी ऐसे किसी आदमी को शक्तिगण दिया जाए, जो उस जर्मोव में मादिक या द्वाभी हकदान दनमियावी का शज्माओ हक नय्यता है, तो वह हक दण्डी जाया नहोता, पर इस जर्मोमे दसे में कोई ऐसी वाग नहीं है, जिस से किसी गीसने आदमी के हक को बुकसान पड़्ये ।

(३) हन शय्यस जो जर्मोव शजानेदान या मादगुजानी के ईकेदान को गन्ह नय्यता है, उस सकण, जब इस गन्ह से नय्यता है, उस जर्मोव में जो उस के शजाने या ईके के भीगन है, हक दण्डी नहीं हासिल क्योता ।

गसनीह—जो शय्यस जर्मोव पर हक दण्डी नय्यता है, मादिक या द्वाभी हकदान दनमियावी का मिठा हुआ हक पोछे से नय्यने के सबब, या उस जर्मोव को शजाने या ईके में पोछे से नय्यने से अपने हक को भी नहीं वेडता है ।

हक दण्डी से जिसवग नय्यतो हुई वागे ।

२३ । जब कोई नश्यत किसी जर्मोव पर हक दण्डी नय्यता है, तो वह जर्मोव को इस गन्ह से शक्तिगण कन सकता है, जिस से उस जर्मोव को कोमग वहुत कुछ न घट जाए, या वह जोग के काम के लिए निरुपयोगी न हो जाए, पर उस को उस जाह के किसी निवाज के वयिठाथ पेड़ काट डालने का हक नहोता ।

२४ । दण्डीकान नश्यत अपनी जोग के लिए वाजिव और कूनोव शय्यस शरह पर मादगुजानी देता ।

२५ । दण्डीकान नश्यत का उस का जर्मोदान उस के जोग से नहीं वे-दण्डी कन सकता है, सिवाए शजाने डिजानी वे-दण्डी के, कि जो आगे दिखी हुई बज्जहाण पर हो गई है ।

(५) वह अपनी जोग को जर्मोव को इस गन्ह से कान नें गया है, कि वह जोग के काम के बाधक नहीं नही, या

जर्मोदान के हक दण्डी हासिल करने की गसनीह ।

जर्मोव के शक्तिगण के जाने में नश्यत के हक ।

नश्यत पर मादगुजानी यदा कनने की पावनी ।

वे-दण्डी से दियाना सिवाए उन हादसों के कि जब बज्जहाण दियाना जाए ।

(व) उस दो एक ऐसे शर्तों को है जो इस ऐश के
एकाम के मुआहिद है और जिस के गोदने
पर उस को क़ानून को नू से जो उस
में, और उस के निर्माण में हुआ है, वह
वे-द्वारा किया जा सकता है ।

मनवे पर एक दृष्टि
का वातिस को पहुँ-
चना ।

२६ । अगले को नश्वर अपने एक दृष्टि को जिसका वे
वसोयन किए मनाया, वो वह एक और माँ और मनुष्य
को गुरु उस के वातिस को, ऐसे निवाण के पावे, होकर,
पहुँचेंगे, जो उस के पिताश हो, मगर उस हाथ में,
कि जब निवासन के आदिन को नू से, जिस के वह पावे
है, उस का और सब माँ सन्तान में जाया है, उस
का एक दृष्टि भी जाया रहेगा ।

माँगुजानी का, बढ़ाना, ।

जिस हाथ में माँ-
गुजानी वाजिव और
मुनासिब क़्यास को
जायगी ।

२७ । जो माँगुजानी दृष्टिकान नश्वर, से किसी
वक्त हो जागी है, वाजिव और मुनासिब क़्यास को
जायगी, जब तक कि उस के वनपिठाश नहीं साविन
किया जाय ।

नज़दी माँगुजानी
बढ़ाने को है ।

२८ । जब, कोई दृष्टिकान, नश्वर, नज़दी माँगुजानी
देगा है, उस हाथ, को छोड़ कर जिस के ठिये इस ऐश
में शर्त नहीं गई है, उस को माँगुजानी नहीं बढ़ाई
जायगी ।

को, क़ानून को नू
से माँगुजानी का
बढ़ाना ।

२९ । दृष्टिकान नश्वर को नज़दी माँगुजानी को
क़ानून को नू से, आगे ठियी हुई सन्तान के पावे होकर,
बढ़ाई जा सकती है ।

(ब) को क़ानून पहली और नज़िस्ती किया हुआ
होना चाहिए ।

(व) माँगुजानी को ऐसे नहीं बढ़ाना चाहिए कि
सुपये में, उस माँगुजानी से जो, पहले नश्वर
वस करवा या हो जाने से जेमाई बढ़ जाय ।

(म) को क़ानून से, मुक़दम को हुई, माँगुजानी,
उस को क़ानून को, पानीय से, पहल वरम
तक नहीं बढ़ाई जा सकती ।

(१) पर शर्त यह है कि कठान (अ) में जो कुछ दिया हुआ है, वह मादिक को, उस दन से मादगुजानी वसूद करने से नहीं नोकेगा, कि जिस तरह से मादगुजानी बनावन हो गई है, ऐसे वक्त के लिए, जो गिक उस वक्त के पहले गीन वनस से कम नहीं है, जिस के लिए मादगुजानी का दावा किया गया है।

(२) कठान (व) में जो कुछ दिया हुआ है वह उस कौद कान से गवदुक्त नहीं नयेगा, जिस को नू से नरथन वडाई हुई मादगुजानी देना, कवूद करना है, दासने ऐसी प्रमीन को दियाकन वडावे के, जो उस लोग को जिसवन प्रमीदान को कोशिस से, या उस के पुर्ये से हुआ है या होवे-वादा है, और जिस से थाएदा उगने का वह उस नरथन को नहीं है, जब तक कि वह वेशी मादगुजानी नहीं है; पर यह वडाई हुई मादगुजानी जो ऐसे कौद कान से उहनाई गई है सिधे उस वक्त अदा होगी, जब प्रमीन को दियाकन वडाई गई है, और उस हाठन को छोड़ कर कि जब प्रमीन को दियाकन वडावे का सामान नरथन को गवदुक्त से जागा नह, सिधे उगने दिनी-तक अदा को जायगी, कि जब-तक वह सामान मौजूद नहो, और उस प्रमीन पर अपना असन पैदा करना नह।

(३) जब शर्त ने प्रमीदान के सुमीने के लिये किसी प्यास वसूद बोदे के दासने प्रमीन वदुक्त हो कम दन को मादगुजानी पर नयी है, तो कठान (व) में जो कुछ दिया हुआ है, वह नरथन को उस वसूद के बोदे को प्रमिदानी से वेचने के लिये, ऐसी मादगुजानी अदा करने का इकान करने से नहीं नोकेगा, जिस को वह दाखिव और मुनासिव समझे।

उ० १ किसी ऐसी लोग का प्रमीदान, जिस के नयने के लिये कोई दयुक्तान नरथन नकदी मादगुजानी देना है, इस ऐत को शर्तों के गावे होकर, बागे, लिये हुई वजुहात में से एक या जेधादे पर, मादगुजानी वडावे के लिये नादिक दावन कर सकया है—(जैसा कि)

(अ) वह तरह मादगुजानी जो नरथन देना है, उस मामूली तरह से कम है, जो दयुक्तान नरथन

नादिक को नू से मादगुजानी का वदाना।

उसी गाँव में, उसी किसम की और वैसेही, थापे की जमीन के ठिये होते हैं, और उस के ऐसे कम शहर पर जोर नथने की कोई काढ़ी बजाए नहीं है,

(व) हाथ की माछगुजारी के जारी नहने के बरुण, उस जगह की आम धावे की अजवास का औसर भाव बढ़ गया है ।

(स) उस जमीन की ठियाकण जो नश्वर नथपा है, उस ठियाकण बढ़ावे के सामान से बढ़ गई है, जो जमीन की कोशिश से, या उस के पुनये से; हाथ की माछगुजारी के जारी नहने के बरुण में किया गया है ।

(ए) उस जमीन की ठियाकण जिस की नश्वर नथपा है, दया के असन से बढ़ गई है ।

गसरीह-दया के असन में नही की दाना का ऐसा वदना शामिल है, जिस से नही से पावी पठाया जासके, जो पहले नहीं हो सकता था ।

मानूगी गनह की बुजि-
आए पर माछगुजारी
बढ़ाने की निम्नव
कापडे ।

उर । जब इस बुजियाए पर, कि जिस शहर से माछगुजारी हो जागे है, वह मानूगी शहर से कम है, माछगुजारी बढ़ावे की नाशिश की जाय-गे

(य) शहर मानूगी की गजबोण करने के ठिये, अदामर उस दन पर ठियाण करनेगो, जो आम गीन से उस बरुण के ठिये बदा की जागे यो, जो नाशिश दायन होवे के पहले गोन वनस से कम न हो, और माछगुजारी बढ़ावे की डिगरी न हो, पर उस हाथ में, कि जब उस दन में जो नश्वर होता है, और उस मानूगी दन में जिस की अदामर ने दनबादर किया है कुछ जेबाए मुक्त हो ।

(व) जो अदामर की दाय में मानूगी गनह माछगुजारी, इस कम जगह पर नही करवे के वगैर, अच्ची करवे नही दनबादर की जा सकती है, तो अदामर

हुकम दे सकती है, कि आर्यन जान-बूझ दीवानी के बाव रप को नू से ब्रह्म अश्वसन माठ (नेत्रविज अश्वसन) गहरीकाण सनपमीन करने, जिसको ठीकठ गान्धमेवठ इस काम के ठिये आर्यन भण्डूने वाठा को दखे बटर को नू से वनाये हुए कायदे के मुआयिक रणगियान है ।

(स) इस दखे को नू से माठगुणानी को ब्रह्म दन इहाने में कि जो नश्वर को देना चाहिये, उस को ज्ञान का कुछ ठिहाण नहीं किया जायगा, मगन जव येह वाण साविण होजाय कि प्यास जगह के निवाण को नू से सनह माठगुणानी इहाने में ज्ञान का मो ठिहाण किया जागा है, और जव येह देया जाय कि प्यास जगह के निवाण के मुगाविक, किसी किसम के नश्वर माठगुणानी को नियायतो दन से जमीन नयने हैं, तो सनह उस निवाण के मुगाविक गणवीण को जायगी ।

(द) मामूठी सनह माठगुणानी दनयाश्न करने में, उस बड़ाई हुई दन को गदाद पन, जिस के ठिये भाविक को कोशिश से, जमीन को ठियाकण बढने के सवन, हुकम दिया गया है, ठिहाण नहीं किया जायगा ।

उर । जव मात्र बढ जाने को ब्रजह से माठगुणानी बढाने को नाठिस को जाय, तो

(अ) अठाठण नाठिस दांयन होने के ठीक पहले दस वनस के मोहन के औसत मात्र को, ऐसे और दस वनस के मोहन के औसत मात्र के साथ मुकावठा करनेगी, जो कि उस को मुकावठा करने के लिए मुनासिब और मुमकिन मावूम हो ।

(व) बड़ाई हुई माठगुणानी पहली माठगुणानी से ब्रह्म निसवण नयनेगी, जो पिछले दस वनस के औसत दाम से पहले दस वनस के औसत दाम नयने हैं कि जो मुकावठे के दासने दिए गए है पन इस निसवण के हिसाब करने में पिछले ब्रजण

मात्र बढ जाने को ब्रजह से माठगुणानी बढाने को निसवण कायदे ।

के औसत दाम से; उसके और पहले वक्रण के औसत दाम के अनुकूल की एक विहाई घटा दी जाय (स) जो अदायग की नाय में कटाज (घ) में व हुए इस वनस का हिसाब; करना मुमकिन हो, जो अदायग उस की जगह कोई कम दे सकगी है ।

जमींदार की कीशिश से जमीन की ठिया-कण बढ़ने की बुनियाद पर माठगुजारी बढ़ावे के कायदे ।

उ० १: (१) जब जमींदार की कीशिश से जमीन ठियाकण बढ़ने के सबब माठगुजारी बढ़ावे की गारिष जाय, तो—

(अ) अदायग उस वक्रण एक माठगुजारी बढ़ाना मन न करेगी, जब तक कि इस ऐक की न जमीन की ठियाकण बढ़ावे की नजिस्ती न की (ब) बढ़ाई हुई माठगुजारी की गहाद की गजर्त करवे में, अदायग आगे वगाई हुई बागों गजर्त नयेगी—

(१) जमीन की पैदावार की कृषण का बढ़ाना सुधानवे के सामान से पैदा हुआ या होने वाला है

(२) सुधानवे के सामान या जमीन की ठिया बढ़ावे का ध्ये ।

(३) येर जोगवे का ध्ये, जो सुधानवे के साध की काम में ठावे के ठिये चाहिये, और

(४) हाठ की माठगुजारी, और उस से जेयादे माठगुजारी देने की जमीन की ठियाकण ।

(२) इस दखे की नू से दी हुई डिगरी, आसामी उस के एक के जालसीन की दनप्रासन पर, उस गजर्त साबी के ठायक होगी, कि जब सुधानवे सामान गजर्तीना किया हुआ असन नहीं पैदा करना, पैदा करने से नुक जाना है ।

उ० १ जब दनया के बसन से जमीन की ठियाकण व की बजह माठगुजारी बढ़ावे की गारिष की जाय ।

(अ) अदायग ऐसी बढ़ावे पर ठियाक नहीं करेगी । सिन यन नोपा है, या गणित्याक से है ।

जमीन की ठियाकण दनया के बसन से देमी होने के सबब माठगुजारी बढ़ावे के कायदे ।

(व) अद्योग माण्डुकारिणी की ऐसी ग्राहक एक बढ़ा सकगी है, जिसकी वह ब्राह्मण और मुनासिब समझे, पर ऐसा नहीं कि जमीन की हासिल की बढ़ती के काम के साथ से जेयादे जमीन को दे ।

उप १ वाक्यपूछ उस के कि जो पहली दृष्टि में ठिया गया है, अद्योग ऐसी माण्डुकारिणी बढ़ाने की डिग्री किसी हाथ में न होगी, कि जो हाथग मुकदमे से ब्राह्मण और मुनासिब नहीं माहूम होगी ।

उप १ जो अद्योग माण्डुकारिणी बढ़ाने की डिग्री देते ब्रह्म समझे, कि उसी ब्रह्म डिग्री का पूरी हद एक शपनाय करना नश्वर के लिए सम्पत्ति पैदा करनेगा, जो वह हुकूम दे सकगी है, कि माण्डुकारिणी कम से बढ़ाई जायगी, या नि माण्डुकारिणी वनस वनस नश्वर २ शपने वनसों एक, कि पाँच वनस से जेयादे न हो, बढ़ती जायगी, जब एक कि डिग्री हो हुई शपाने की हद एक न पहुँच जाय ।

उप १ (१) नाशिश जो किसी जोग की माण्डुकारिणी बढ़ाने के ठिये दायन की गई है, इस बुनियाद पर कि अगर माण्डुकारिणी जो नश्वर अद्य करना है माहूमो अगर से कम है, या यीजों का मात्र बढ गया है, काचित समाप्त नहीं होगी, अगल उसके दायन होने के गिक पहले पतनह वनस के मोहन, उस कौठ जमान की नू से, जो दूसरी माय सन १८८३ ईसवी के पोछे किया गया है, उस जोग की माण्डुकारिणी बढ़ाई गई है, या अगल जपन ठिये हुए पतनह वनस के मोहन माण्डुकारिणी दहे ४० की नू से वढ हो गई है, या इस ऐक की नू से, या ऐसे किसी ऐक की नू से जो इस ऐक से नह किया गया है, जपन वगैरह हुई बुनियादों में से किसी एक पर, या ऐसी किसी बुनियाद पर जो इस के साथ मिलती हुई है, माण्डुकारिणी बढ़ाने की डिग्री हो गई है, या हाथग मुकदमे की नू से दायन पारिज किया गया है ।

(२) इस दहे में जो कुछ ठिया गया है, वह ब्राह्मण जान-बूझ दायनो की दहे उज्ज की स्तरी पर बस नही पहुँचायेगा ।

नाशिश की नू से बढ़ाई हुई माण्डुकारिणी ना-जिव और मुनासिब होगी ।

नश्वर २ माण्डुकारिणी बढ़ाने के हुकूम देने का शपथिमान ।

माण्डुकारिणी बढ़ाने की नाशिश वान वान दायन करने के एक की हद ।

भाठगुजारी की घटना ।

भाठगुजारी का
घटना ।

उ= १ (१) दृष्टिकोण नरम हो नरुही भाठगुजारी पर
जो नरम है, आगे दिखी हुई ब्रह्महोप पर अपनी भाठगुजारी
घटाने के दिखे नाशिरा दायन कन सकपा है, और जो के
नरुहे के घटाने की हाठग की छोड़ कन, जिस के दिखे रस
ऐल में पोछे शर नरुहे गर है, और किसी हाठग में नाशिरा
नहीं कन सकपा-याजि

(म) रस पुनिराद पर कि जोर की जमीन, विरा दुभू
नरम के, जे रसदुगो होने के सवव म और
प्रास सवव से, अयागत या नरुगे नरुगे हगे
के दिखे विराड गर है ।

(य) रस पुनिराद पर कि जिस मनसे से नरम
हाठ की भाठगुजारी होना है, इस तत्पर के सवव
उम जगद के माम प्रादे के जिनसे के दाम दाम
गर है, और उम घटाने का सवव ऐसा नहीं है
कि सोछे विर गल नहे ।

(१) दिखी नरुहे में जो रस दृष्टि की नू जे सवव
जिनसे उम है, घटाना भाठगुजारी के दिखे घटाने का दृष्ट
के सवव है, जिस की सवव नरुगे और सवव सवव है ।

विनोदना ।

भाठगुजारी के दिखे की सवव नरुगे है, या उम में
दिखे सवव पर विनोदना के सवव प्रादे की दिखे
का सवव सवव, जो सवव उम में सवव है, जिस
के दिखे सवव सवव उम उम उम उम उम उम उम उम
के दिखे सवव सवव उम उम उम उम उम उम उम उम
के दिखे सवव सवव उम उम उम उम उम उम उम उम

भाठगुजारी के दिखे की सवव नरुगे है, या उम में
दिखे सवव पर विनोदना के सवव प्रादे की दिखे
का सवव सवव, जो सवव उम में सवव है, जिस
के दिखे सवव सवव उम उम उम उम उम उम उम उम
के दिखे सवव सवव उम उम उम उम उम उम उम उम
के दिखे सवव सवव उम उम उम उम उम उम उम उम

भाठगुजारी के दिखे की सवव नरुगे है, या उम में
दिखे सवव पर विनोदना के सवव प्रादे की दिखे
का सवव सवव, जो सवव उम में सवव है, जिस
के दिखे सवव सवव उम उम उम उम उम उम उम उम
के दिखे सवव सवव उम उम उम उम उम उम उम उम

नक़्के ज़मीन में जिस से वह निस्सवग नथ्पा है, उस ग़रह से भंगहूँ करनेगा, जैसा हुक्म दिया गया है, और अगर कोई ज़मींदार या आसामी उपर छिपे हुए एक महीने के भीतर, उस नक़्के के अग़दर, उस निर्धनाने की निश्चय ग़दरीनी एग़ाज़ उस के पास पेश करे, तो वह उसे उस निर्धनाने के साथ नेवेबिज बोर्ड में भेजेगा ।

(४) निर्धनाने नेवेबिज बोर्ड से भग़्गून या ग़रमीम होकर सनकारी ग़ाज़ में मुशग़हिन किये जायेंगे और अगर ऐसे निर्धनाने में कोई सरोह ग़ाज़ी उस के मुशग़हिन होने के बाद निकले, तो उस को क़रज़र बोर्ड आज़ नेवेबिज की भग़्गूनी से सही कर सकगा है ।

(५) ठोकर ग़बर्नमेन्ट बज़्ज बज़्ज के निर्धनाना से जो रज़ दये को नू से वनाए जाए, और निर्धनाना हन साठ के छिपे ग़ियान क़रीबेगी और उन को हन साठ सनकारी ग़ाज़ में ब्यापक़र मुशग़हिन क़रेगी ।

(६) रज़ बाव को नू से ग़ाज़ के घटवे या बढ़वे की बज़्ज से भाग़्गुणारी के घटावे बढ़ावे की किसी क़ान-नबार्क में अदालत उन निर्धनानों पर मुग़ाहणा क़रेगी, जो रज़ दये को नू से मुशग़हिन की जागे है, और येह क़्यास क़रेगी कि उन निर्धनानों में जो रज़ ऐज़ के जानी होने के पीछे किसी वनच के छिपे वनाये गए हैं, दियाये हुए निर्धन सही हैं जब तक येह साबित नहीं किया जाय कि वह ग़ुबर्न है ।

(७) ठोकर ग़बर्नमेन्ट व-भग़्गूनी हुक्म ग़बर्न-जेवनेज़ साबित बहादुर रज़ग़ास क़ौनसिड के, रज़ बाव को ग़ाज़ीज क़नवेके लिए कि जिस ग़ाज़क़ौन ज़िन्स आनब्यादे की बीज सम्हो जायगी, और उन थज़्जनों की ह़दायत के लिए, जो रज़ दये को नू से निर्धनाना ग़ियान क़नवे हैं, क़ापडे वनायेगी ।

वदवना ।

४०१ (१) जब हज़्जक़ान नथ्पा किसी ज़ोग के लिए भाग़्गुणारी ज़िन्स में अदा क़रना है, या क़ुसद के एक क़िस्ते के ग़यमीदे किये हुए दाम पर, या क़ुसद के मुग़ा बिक़ वदवगी ह़र्क हन पर या कुछ उन ने से एक ग़ौर पर, और कुछ दूजने ग़ौर पर, तो नथ्पा या ज़मींदार रज़ बाव को हनब्याग़ है सकगा है, कि भाग़्गुणारी नज़्दी में वदव दी जाय ।

उस भाग़्गुणारी का नज़्दी ने वदवना जो ज़िन्स में अदा की जागे है । या ज़ादो की ग़ाज़ नज़्दी क़ायम क़नवा ।

(२) दम्पत्योक्त 'कर्मजन' या 'सर्व-उत्प्रेषण' के अर्थसे या उस अर्थसे के धेरा, जो चाव १० को नू से माठगुणारी का वन्द-ओ-वन्दन करना है, या किसी और अर्थसे के पास को जा सकगी है, जिस को ठोकर गजदंभेष्ट के पास १३ काम के धिये सम्पत्तियान दिया है ।

(३) ऐसी दम्पत्योक्त के पावे पत्र वह अर्थसे इस वाग की गजदंभेष्ट करनेगा, कि जिसका रुपया व-गौन माठगुणारी के दिया जायगा, और यह दृष्टम देगा, कि नश्वर जिनसे में माठगुणारी अर्थात् करने, या जपन कहे हुए किसी और गौन पत्र अर्थात् करने की दृष्टम, ऐसा गजदंभेष्ट किया हुआ रुपया अर्थात् करनेगा ।

(४) नकदी माठगुणारी के गजदंभेष्ट करने में, वह अर्थसे आगे वगैरे हुए वागों पत्र गजदंभेष्ट नयेगा ।

(५) औसत रुपये की माठगुणारी जो दम्पत्योक्त न-अर्थ उस के पास पास, उसी जिसमें को, और जेसेही धायके की जमीन के धिये अर्थात् करने है ।

(६) औसत गादा माठगुणारी की जो पिछले दस वनस के भीतर, या ऐसे कम दृष्टम के भीतर, जिस का सुबूत मिठ सके जमीनाने के दृष्टम में पाया है-और

(७) जो कुछ धन जमीनाने के पानी पटाने के धिये किया, जब कि माठगुणारी जिनसे में अर्थात् हागे थी, और जो कुछ वन्द-ओ-वन्दन करने माठगुणारी के वन्दने पत्र, उन धनियों के वन्दन नये के धिये किया ।

(८) दृष्टम गजदंभेष्ट को और उस में उस की प्रत्यक्ष दृष्टम नयेगी, और यह भी, कि उस का मत पत्र के को, और यह दृष्टम उसी गजदंभेष्ट के पत्र के को, जैसे कि नाव की मानवी जान-नये में दिये हुए दृष्टम को है ।

१३. अर्थसे वन्दन पत्र गजदंभेष्ट किया जाय, तो अर्थसे वन्दन के अर्थसे, कि माठगुणारी जिनसे में अर्थसे उस वन्दन के को गजदंभेष्ट करने दृष्टम के को, और

एव दृक्म भगवन्तो या वा-भगवन्तो का देवा-भगवन्तो ब्रह्म
वा-भगवन्तो करो, गो वा-भगवन्तो की ब्रह्महाण को कर्मवन्द
करोगा ।

छठा वाच ।

गौतम दृक्मकान् नश्यन् ।

४१ । येह वाच उव नश्यतो पर आएह होगा, जो दृक्
दृक्मो नहीं नश्यते हैं, और इस ऐह में गौतम दृक्मकान् नश्यन्
के नाम से लिखन किये गये हैं ।

४२ । जब कोई गौतम दृक्मकान् नश्यन् जमीन का दृक्म
पावे, तो उस को ऐसो भावगुणानी देवा होगा, जो उस
के, और उस के जमीन के बीच में, ऐसे दृक्म पावे के
ब्रह्म, जगत् को नू से देनाई जाय ।

४३ । गौतम दृक्मकान् नश्यन् को भावगुणानी नहीं बढाई
जायगी, पर नष्टिरो किये हुए जगत्-नामे, या दृष्टे दृष्ट
के भुगविक किये हुए जगत्-नामे को नू से ।

पर शर्त येह है कि, ब्रह्म भाविक को, उस दन पर
भावगुणानी ब्रह्म कनवे से नहीं नोकेगा, जिस दन पर
भावगुणानी ह्योक्त में ब्रह्म को गई है, वनावन ऐसे ब्रह्म
हू विह, कि उस ब्रह्म से ठीक गीव चरत्त पढे से कम
न हो, जिस के विषये भावगुणानी का दावा किया गया है ।

४४ । गौतम दृक्मकान् नश्यन् इस ऐह को सनगो के पारे
को कन, बीये विषयो दृष्ट ब्रह्महाण से किन्तो एक या जेगह
ब्रह्म पर, वे-दृक्म किया जा सकगा है, पर कोन किन्तो
हाण मे नहीं-प्राणि

येह वाच जिस पर
होगा ।

गौतम दृक्मकान् नश्यन्
को शुनू की भाव-
गुणानी ।

भावगुणानी बढाने को
शर्त ।

जिन ब्रह्महाण पर गौतम-
दृक्मकान् नश्यन् वे-
दृक्म किये जा सकते
हैं ।

(अ) इस ब्रह्म से कि उस ने वाक् भावगुणानी कहा
नहीं को है ।

(ब) इस ब्रह्म से कि ब्रह्म जमीन को ऐसे जगत् में
दाया है, जिस से ब्रह्म जगत् के विह विनश्यते
हो गई या उस ने ब्रह्म को नोके है, या
इस ऐह के ब्रह्मिक को है, कि न जिस के
पावे पर, ब्रह्म कनवे से नोके है के ब्रह्म
मे किये हुए जगत्-नाम को ब्रह्म के नू से
वे-दृक्म किया जा सकगा है ।

[illegible]

कृतान्वामे की गामोठ बन दे, और उस के जानी होने से एक महीने के भीतर, उस क्यहनी में दायिठ करने, जिस से वह जानी किया गया था, वो वह ठीक भागे आने-वाले थेगी के वनस के शुनू से समठ में आयेगा ।

(४) जब कोई कृतान्वामा, नश्य की पद से जमीने दहे (३) की नू से, गामोठ किया गया है, और क्यहनी में दायिठ किया गया है, वो वह मदाठग या मयसन जिस की क्यहनी में वह इस तरह से दायिठ किया गया है, कौनव उस के गामोठ और दायिठ किये जाने की शक्तिता उस जमींदार पर मुदगजिम गीन से गामोठ करायेगा ।

(५) जो नश्य हस्ते-दहे (३) की नू से उस कृतान्वामे की गामोठ न करने, और क्यहनी में दायिठ न करने वो इस दहे के मगठव के ठिये ऐसा समझा जायेगा, कि उस ने कृतान्वामे की गामोठ बनने से इनकार किया ।

(६) अगर नश्य उस कृतान्वामे की गामोठ बनने से इनकार करने, जो इस दहे की नू से उस के सामने पेश किया गया है, और जमींदार उस को निकाठ देने के ठिये नासिब दायन करने, वो मदाठग इस बात को गजरीज करेगी, कि किगनी माठगुजानी जोग के ठिये बाजिव और मुनासिव है ।

(७) इस तरह से गजरीज की हुई माठगुजानी के मदा बनने पर नश्य नाजो हो, वो उस को येह हक होगा, कि कृतान्वामे की गामोठ से उस जोग को उस माठगुजानी पर पाय वनस तक नये; पर उस मियाद के पूरे होने पर, उपर ठिये हुए पिछले दहे में वगैरह हुई अनगों की नू से निकाठ दिया जा सकेगा, अगर उस ने हक दायी नहीं हासिल किया है ।

(८) अगर नश्य ऐसे गजरीज की हुई माठगुजानी देना मजबूर न करने, वो मदाठग उस को वे-दयठ बनने के ठिये डिजानी होगी ।

(९) येह गजरीज बनने के ठिये, कि किगनी माठगुजानी बाजिव और मुनासिव है, मदाठग उस माठगुजानी पर इलाज करेगी जो बनूअन नश्य ठीक, उस गाँव में, कसो किस्म की, और उसी इलाके की जमीन के ठिये दिया करने है ।

(३) जहाँ उस को नजिस्ती किये हुए पट्टे की नू
से जमीन पर दण्ड दिया गया है, एवं उस वजह
से कि पट्टे की मियाद खत्म हो गई है ।

(४) इस वजह से कि दंड को नू से उतारि हुई
ब्राजिल और मुवांसिव भाग्युजानी के देवे से
उस ने स्वकान किया है, या वह मियाद कि
जब तक उस को उस भाग्युजानी पर जमीन
नथाने का हक है, खत्म हो गई है ।

पट्टे की मियाद खत्म
होवे पर वे-दण्डों की
गणे ।

४५ । पट्टे की मियाद खत्म होवे की वजह से वे-दण्डों
की वाग्विश किसी ज़ेन दण्डकान नश्वर पर नहीं की
जाने सकेगी, पर सिध उस हाथ में कि जब पट्टे की
मियाद पूरी होवे के कम से कम छः महीने पहले जमीन
छोड़ने के छिये नश्वर को इतिहा हो गई है, और मियाद
के पूरे होवे के छः महीने पीछे ही ऐसी वाग्विश दाय
नहीं हो सकेगी ।

भाग्युजानी बढ़ावे से
नानाजो की वजह वे-
दण्डों की गणे ।

४६ । (१) भाग्युजानी बढ़ावे से नानाजो की वजह
वे-दण्डों की वाग्विश किसी ज़ेन दण्डकान नश्वर पर नहीं
दायन होगी, पर सिध उस हाथ में कि जब जमीन
बढ़ाई हुई भाग्युजानी देवे का कानानवामा नश्वर
कानाने किया, और नश्वर ने वाग्विश दायन होवे के प
गोन महीने के बीगन, उस कानानवामे की गामोद कान
से स्वकान किया ।

(२) जमीन जो इस दंड को नू से नश्वर को इक
नाना देना यादगा हो, ऐसी अदायग या अश्वसन के प
मियाद को निकल जावमेगद इस काम के लिए मुक्त
होवे, इस को नश्वर पर गामोद कानावे के लिए दान
न नथाना है । अदायग या अश्वसन उतारि हुए गीत
इस को नश्वर पर गामोद कानावेगा, और जब
इस हाथ से गामोद कानावा जाय, तो इस दंड के मियाद
के देवे के छः महीने पीछे ही ऐसी वाग्विश दाय
नहीं हो सकेगी ।

इस को नश्वर पर गामोद कानावेगा, और जब
इस हाथ से गामोद कानावा जाय, तो इस दंड के मियाद
के देवे के छः महीने पीछे ही ऐसी वाग्विश दाय
नहीं हो सकेगी ।

कृतान्तनामे की गामोठ बन है, और उस के जानी होने से एक महीने के भीतर, उस क्यहनी में दाखिल करने, जिस से वह जानी किया गया था, वो वह ठीक भागे आने-वाले थे।
 मेरी के वनस के शुरू से अमर में आनेगा ।

(४) जब कोई कृतान्तनामा, नश्यत की गत्य से जमीने दंड (३) को नू से गामोठ किया गया है, और क्यहनी में दाखिल किया गया है, वो वह अदात या अक्षय जिस की क्यहनी में वह इस गनह से दाखिल किया गया है, और उस के गामोठ और दाखिल किये जाने को गुणित उस जमीन पन मुद्रागणित गीन से गामोठ बनानेगा ।

(५) जो नश्यत हिस्से-दंड (३) को नू से उस कृतान्तनामे की गामोठ न करने, और क्यहनी में दाखिल न करने वो इस दंड के भगव के विषे ऐसा समझा जायगा, कि उस ने कृतान्तनामे की गामोठ बनने से इन्कार किया ।

(६) अगल नश्यत उस कृतान्तनामे की गामोठ बनने से इन्कार करने, जो इस दंड की नू से उस के सामने पेश किया गया है, और जमीन उस को निकाल देने के विषे वादिस दायन करने, वो अदात इस बात को गजरीज करनेगी, कि जिनकी माओगुजानी जोग के विषे बाजिव और मुनासिव है ।

(७) इस गनह से गजरीज की हुई माओगुजानी के अदा बनने पन नश्यत जाओ हो, वो उस को यह एक होगा, कि कृतान्तनामे की गामोठ से उस जोग को उस माओगुजानी पन पाय वनस तक नये; पन उस मियाद के पूरे होने पन, उपर विषे हुए पिछले दंड में वगैरह हुई सनगों की नू से निकाल दिया जा सकेगा, अगल उस ने एक दायगी नहीं हासिल किया है ।

(८) अगल नश्यत ऐसी गजरीज की हुई माओगुजानी देना मजबूर न करने, वो अदात उस को दे-दखल बनने के विषे डिजानी होगी ।

(९) यह गजरीज बनने के विषे, कि जिनकी माओगुजानी बाजिव और मुनासिव है, अदात उस माओगुजानी पन रिहाज करेगी जो अनूमन नश्यत होगा, उस गाँव में, इसी किस्म को, और इसी शायदे की जमीन के विषे दिया करने है ।

(१०) वे-द्व्युष्टी की डिग्री जो इस दृष्टि की नू से हो गई है, उस व्योम के वनस के प्पगम होवे पर अमर में आवेगी, कि जिस साठ ग्रह हो गई है ।

“ जमीन पर द्युष्ट
पाया ” इस के भावे ।

४७ । जब कोई नश्यत किसी जमीन पर द्युष्टमान रहा है, और उस के द्युष्ट वहाठ रहने के ठिये पट्टा ठिया जाया है, तो इस वाक के मतलब के ठिये येह नहीं समझ जायगा, कि इस पट्टे की नू से उस की जमीन पर द्युष्ट मिठा अजानये पट्टे का मतलब उस की द्युष्ट दिठाना हो ।

साधनां वाव ।

शिकमी नश्यत ।

उस माठगुजारी की हद जो शिकमी नश्यत से बसूठ की जा सकरी है ।

४८ । ऐसे शिकमी नश्यत का जमींदार जो बकरी माठगुजारी पर जमीन नथगा है, उस माठगुजारी से बकरी जो ग्रह आप अदा करना है, आगे वगाए हुए सैकड़े के हिसाब से जयादा बसूठ नहीं कर सकेगा-यानि

(अ) जब शिकमी नश्यत नजिस्ती किये हुए पट्टे या कुरान-नामे की नू से माठगुजारी अदा करना है, तो पयास रुपये सैकड़े और

(ब) और किसी हाठग में पयौस रुपये सैकड़े ।

शिकमी नश्यत की वे-द्व्युष्टी की कैद ।

४९ । कोई शिकमी नश्यत अपने जमींदार से वे-द्व्युष्ट नहीं किया जायगा, सिवाए जोये ठियी हुई हाठगों के ।

(अ) जब ठिये हुए पट्टे की मियाद प्पगम हो जाए ।

(ब) जब नश्यत जमीन ठिये हुए पट्टे की नू से नहीं, बरकि और किसी तरह से नथगा है, तो उस व्योम के वनस के अक्षीन में, जो ठीक उस साठ के पीछे आया है, जिस में जमींदार ने उस की छोट देने की मुठिठा हो है ।

आठनां वाव ।

माठगुजारी की निश्चय आम कायदे ।

माठगुजारी की गादाह को निश्चय कयास और कायदे ।

माठगुजारी के मुकद-
दर होने का निश्चय
कयास और कायदे ।

५० । (१) जब किसी दानियावी हकदार या नश्यत और इस के पट्टे हकदार ने ऐसी माठगुजारी या अरु माठगुजारी पर जमीन नथी है, जो इस्तिमनारी वनस-को वनस के हक में बंदी नहीं गई है, तो अरु माठगुजारी या अरु माठगुजारी बंदी नहीं जायगी, सिवाए उस हाठग के

किं जब दानियाली हक को जमीन या जोग को नक़्वा वःठ गया है ।

(२) जो किसी नाविस या और कान-नवाँर में, जो इस ऐक को नू से को जाए, येह साविग हो, कि किसी दानियाली हक़दान या नख़्वा, और उस के पहले हक़ नख़्वा-वालों के, ऐसी माठगुजानी, या शनह माठगुजानी पर जमीन नथी है, जो नाविस दायन होवे या कान-नवाँर शुनू होवे के ठीक पहले बीस वनस के जोगन वःठो नहीं गई है, तो जब एक उस के वनख़िदास साविग नहीं किया जाए, येह क़यास किया जाएगा, कि दाना मो वन-मो-वसूग के वरुण से उन्हीं के जमीन उसी माठगुजानी या शनह माठगुजानी पर नथी है ।

पर शन येह है, कि अगर किसी शारिव के मुताबिक येह जानू है कि किसी नक़्वा जमीन में जोग या किसी किसम को जोग, जो मुकरन माठगुजानी या शनह माठगुजानी पर नथी गई है, ऐसी गानोष को था, उस से पहले, जो शारिव को नू से उन्हीं गई है, नजिरदी को जाए, तो उपन ठिया हुआ क़यास उस गानोष के बाद, उस नक़्वा जमीन में, किसी जोग के ठिये या उस किसम को जोग के ठिये नहीं किया जाएगा, जब तक कि जोग इस गनह से नजिरदी नहीं को गई है ।

(३) इस दहे के अमठ में, जहाँ एक सह नख़्वा को गनह से नथी हुई जमीन से इठाका नथपा है, इस वाग से कुछ शक़ नहीं होगा, कि सह जमीन ऐसी और जमीन से, जिस के साथ सह एक पट्टे में थी, मठा को गई है, या किसी और जमीन के साथ एक पट्टे में शामिल की गई है ।

(४) इस दहे में जो कुछ ठिया हुआ है, सह उस दानियाली हक़ के ठिये बावद नहीं होगा, जो कुछ वनस को उन्हीं हुई निवाह के ठिये नया गया है, या जिस को नथी जाना माविक को नहीं पर नक़्वा है ।

पर अगर किसी दाना मो को माठगुजानी को गानह, या उस शनह को निखरग जिन को नू से सह वनस केगी के किसी वनस ने नथपा है, केरे हक़ को भरी है, तो जब एक उस के निखरग को नजिरदी को गानह के

माठगुजानी को गानह
को नक़्वा नथपा है
को नक़्वा नथपा है
को नक़्वा नथपा है
को नक़्वा नथपा है

क्यास किया जायगा, कि वह प्रमीन माण्डुकारी की
गाहा और जहाँ श्रुति पन नया है, जैसा कि
पिछले पेटो के वन में।

ଜମିନ କା ନକ୍ସା
 ପଢ଼ିବେ କି ନିଶ୍ଚୟ ମାଠ-
 ଗୁଜାରୀ କା ପଢ଼ିବ ।

ਘੋਸ਼ਣਾ ਕਾ ਨਕਲਾਂ ਵਧਾਏ ਪਰ ਮਾਓਗੁਯਾਂ ਨੀ ਕਾ ਵਧਾਏ।
ਪਰ (੧) ਹਨ ਆਜ਼ਾਦੀ--

(ਥ) ਏਸੀ ਸ਼ਵ ਯਮੀਨ ਕੇ ਓਏ ਯੋਧਾਏ ਮਾਠਗੁਯਾਨੀ
ਏਯਾ, ਯੋ ਪੈਮਾਸ਼ ਸੇ 'ਉਸ ਨਕ਼ਰੇ ਸੇ ਯੋਧਾਏ
ਊਨਾਏ ਯਾਏ, ਯਿਸ ਕੇ ਓਏ ਉਸ ਨੇ ਮਾਠਗੁਯਾਨੀ
ਪਹਥੇ ਅਥਾ ਕੀ ਹੈ', ਪਰ ਉਸ ਹਾਠ ਮੇਂ ਨਹੀਂ
ਕਿ ਯਵ ਧੇਰ ਸ਼ਾਵਿਰ ਕ੍ਰਿਯਾ ਯਾਏ, ਕਿ ਨਕ਼ਰੇ
ਕੀ ਵਧਨਾ ਯੋਗ ਯਾ ਏਨਮਿਯਾਨੀ ਹਕ਼ ਬਾਗੀ
ਯਮੀਨ ਮੇਂ, ਉਸ ਯਮੀਨ ਕੇ ਮਿਠਯਾਨੇ ਕੇ
ਸ਼ਵਯ ਹੁਥਾ ਹੈ, ਯੋ ਪਹਥੇ ਉਸ ਏਨਮਿਯਾਨੀ
ਹਕ਼ ਕੀ ਯਮੀਨ ਯਾ ਯੋਗ ਮੇਂ ਥੀ, ਥੀਨ ਧਾਗੀ
ਮੇਂ ਡੂਵਨੇ ਯਾ ਥੀਨ ਕ੍ਰਿਸੀ ਗਰਹ ਸੇ ਯਾਨੇ ਨਹੀਂ
ਥੀ, ਥੀਨ ਉਸ ਕੇ ਓਧੇ ਮਾਠਗੁਯਾਨੀ ਧਥਾਏ
ਨਹੀਂ ਗਏ ਥੀ ।

(५) जब पैमाश और मुक़ावला करने से यह साबित हो कि बासाही के दानियाली हज़-नाही ज़मीन या ज़ीन का नज़्वा उस के व-ग़िसवण घट गया है, जिस के बिदे प्रह पड़े माठगुफ़ानी देना या तो उस की माठगुफ़ानी घटाई जायगी, पर उस हाठन में नहीं, कि जब यह साबित किया जाय कि नज़्वा का घटना उस ज़मीन के निरुत जाने की वज़ह से था, जो किमी प्रह में उस दानियाली हज़ की ज़मीन या ज़ीन के नज़्वा में पाती के मसून हो, या और किमी प्रह में निरुत गई हो, और के उस नज़्वा वज़ह की वज़ह से माठगुफ़ानी नहीं बढ़ाई गई था ।

१० हम वही को पकड़ना करते हैं जिस के लिए
-सुखी पाठ है। जो है, कागज की मुद्रा में या
हैं करने के लिए जो कि हमें इसे ही पर लिखा करता है।

• १२५५ १२५५ १२५५ (१२५५) १२५५

[illegible]

को प्रमीन या प्रीण के विषे यज्ञार्ह मा-
गुणानी थी या नहीं ।

(व) आसामो को कुछ जेपादे प्रमीन उस को मागुगुणानी
वढावे को बजह से, या और किसी संव से,
प्रमोदान के सम और मर्फी से, नष्ट हो
जाई है या नहीं ।

(स) जिस अनुसे एक प्रमीन ऐसे नष्टो गई है, कि
उस को मागुगुणानी या नष्ट को निश्चय
होड़ा नहीं हुआ है—और

(द) उस वाप को ठगवाई या पैमाने पर, जो
प्रमीन नष्ट के शुरू में उस जगह काम
में आती थी, व-मुकाबले उस के जो मुकदमा
दायर करने के बरुण इसप्रमाण होती थी ।

(उ) इस वाप को गणनीय करने के विषे, कि
मागुगुणानी को निगना बढाना चाहिये, अद्यतन उन दोनों
पर निगार नयेगी, जो उसी किस्म और उसी क्षय के को
प्रमीन के विषे, आस पास के आसामियों से हो जाती है
और दानियाली हकदान की हाठ में, उस वक्त पर निगार
नयेगी, जिस का हक वह अपनी प्रमीन को मागुगुणानी
को निश्चय नष्ट है, और किसी हाठ में ऐसी मागुगुणानी
नहीं मुकदमा करेगी, जो हाठ मुकदमे को ठू से बाजिव
या मुवाजिव नहीं है ।

(४) घटाई हुई मागुगुणानी को ग्राहक पहले अज्ञ होने-
वागी मागुगुणानी से बही निश्चय नयेगी, जो प्रीण या
दानियाली हक को प्रमीन को घटाई हुई साठाना कुछ
कीमत, उस को पहले साठाने कुछ कीमत से नष्टो है, या
जो घटी हुई प्रमीन को साठाना कीमत प्यारिप्यार नहीं
हो सके, तो पहले अज्ञ होने-वागी मागुगुणानी से
निश्चय नयेगी जो घटी हुई प्रमीन का नष्ट
दानियाली हक-वागी प्रमीन या प्रीण के पहले नष्ट से
भरा है ।

अद्य मागुगुणानी ।
पत्र । कानूनगमे या पुनाने दस्तूर के गाने का न. नये
मागुगुणानी जो आसानी को देना चाहिये, या न बनाया
॥ मागुगुणानी के निश्चय ।

ऐसी किसी भी श्रदा की जायगी, जो प्योरे के वनस की हरी सोमाही के आश्विन दिन को श्रदा करने कायदा होगी है ।

माठगुजारी देवे का वरुण और जगह ।

प४ । (१) हरी आसामी माठगुजारी की हरी किसी सुनल डूबने के पहले उस दिन होगा, जिस दिन वह श्रदा होना चाहिये ।

(२) उन हाथों को छोड़ कर, जिन में इस ऐल की नू से आसामी अपनी माठगुजारी श्रदा में अभाव लभ सकता है, माठगुजारी जमींदार के गाँव की कयली में, या किसी और सुनोते की जगह में, जो इस काम के विषे जमींदार कहाने, श्रदा की जायगी, पर शर्त यह है, कि ठीक अवसरमेव आसामी को यह श्रमियान देवे के विषे, कि उस के भविष्यत की नू से माठगुजारी श्रदा करे, आम गौर से, या किसी प्यार करने के विषे, वरुण वरुण पर कायदे बना सकता है ।

(३) माठगुजारी की कोई किसी या उस का कोई किसी जो उस वरुण या उस से पहले कि जब वह श्रदा होना चाहिये, न दिया जाय तो वह बाकी समझा जायगा ।

माठगुजारी की हिसाब में ठाना ।

प५ । (१) जब कोई आसामी माठगुजारी के हिसाब में कुछ रुपया श्रदा करना है, तो वह उस वनस की या वनस और किसी को बना सकता है, जिस के विषे वह उस का जमा होना चाहना है, और वह श्रदा किया हुआ रुपया उसी तरह से जमा किया जायगा ।

(२) जो वह ऐसा कुछ न करे तो श्रदा किया हुआ रुपया ऐसे वनस में और ऐसी किसी में जमा किया जायगा, जो जमींदार ठीक समझे ।

आसामी जमींदार को रुपया श्रदा करने के वरुण नसीद पावे का हकदार है ।

प६ । (१) हरी आसामी जो माठगुजारी के विषे अपने जमींदार के यहाँ रुपया श्रदा करना है यह हक नयेगा कि उसी वरुण एक विषो हुई नसीद दसवर्षी जमींदार अपने श्रदा किये हुए रुपये के विषे पावे ।

(२) जमींदार उस नसीद को एक दूसरी पत्र लिखा करने नयेगा ।

(३) नसीद और उस की पत्र सारी में, उन कई गुरुवारों में से, जो नसीद के उस वनस में दिया

गई है, कि इस ऐक के दूसरे शिखर में दिया गया है, ऐसी गृहसीधें मुद्राएँ होंगी, जिन को जमींदार अथवा जनते के ब्रह्म दत्त बन सकना है।

पर शर्त यह है कि ठोकर अवलम्बित ब्रह्म ब्रह्म पर आम गौर से, या किसी प्यास तकने जमीन या किसी किसम के मुकदमों के विषे, परमीम किया हुआ धानम मुक्तन या मगपूर बन सकना है।

(४) जो नसीद में वह सब गृहसीधें न हों जो इस दहे की नू से उस में होना चाहिये, तो जब एक इस के वर्मिदाक व सावित्र किया जाय, यह कृपास् किया जायगा कि आसामी ने उस गरीब एक जिस को वह नसीद दी गई, विठकुठ भाठगुणानी देवाक बन दिया है।

पचा (१) जब जमींदार कबूठ बनना है कि किसी आसामी ने सब भाठगुणानी, जो प्येगे के वनस पूने होवे एक अथवा होनी चाहिये, दे दी है, तो आसामी को यह हक होगा कि जमींदार से उस वनस के प्यम होवे के पीछे, गीव महीवे के मोपन, उस भाठगुणानी के विषे जो वनस के आयोन बाकी निकले, पूनी वे-बाकी को नसीद दत्तगप्यो जमींदार विठा प्यो पावे।

(२) जहाँ जमींदार ऐसा नहीं कबूठ बनना, आसामी को यह हक होगा, कि याद आवे होस अथवा बनके, उस साठ के प्यम होवे के पीछे गीव महीवे के मोपन, ऐसा हिसाब पावे, जिस में वह सब गृहसीधें हों जो इस ऐक के शिखर हो में दिये हुए हिसाब के बलमे में दिया गई है, या किसी और बलमे में, जो ठोकर अवलम्बित आम गौर से, या किसी प्यास जगह के विषे, या किसी प्यास किसम के मुकदमों के विषे ब्रह्म ब्रह्म पर मुक्तन बने।

(३) जमींदार ऐसे हिसाब को बलमे जिस में किसी गृहसीधें हो, गिया बनके अपने पास नयेगा।

पच्चा (१) जो कोई जमींदार विठा बलमे मुद्रास्त्रि किसी आसामी को ऐसी नसीद, जिस में दहे पच्चे में वगैरह दहे गृहसीधें बाजानी को गनस से अथवा को दहे भाठगुणानी को विनवण हो, देवे से बलमान बने या न हो, तो आसामी अथवा जनते को गरीब से गीव महीवे के मोपन ऐसा बनना

साठ आयोन पर आसामी धारिगप्यो या जमा बसिठ बाकी का हिसाब पावे का हकदार है।

नसीद और निसाव न देवे और न न पन नाना न नयवे के दहे नाना और मुद्रास्त्रि।

पादे के लिए वांछित कर सकना है, जो उस मातृगुणों की ग्राह्य या धाम के दुःखों से बड़ा कर न हो, जैसा कि यदावत् मुनासिब समझे ।

(२) जो प्रमोदित विद्या ब्रजह मुनासिब भासाओं के भाग्यदे पत्न, या तो वेवाकी की नसीद, या अग्न भासाओं से नसीद पादे का हर न नयना, तो किसी वनस के लिए दृष्ट पञ्च में वपाया हुआ हिसाब देने से अन्यान्य करे, तो भासाओं पीछे आगे-आगे योगों के वनस के योगन, उस से ऐसा हरजा पादे के लिए वांछित कर सकना है, जो यदावत् गिक समझे, और जो उस मातृगुणों की कुछ ग्राह्य या धाम के दुःखों से बड़ा कर न हो, जो भासाओं के प्रमोदित को उस वनस के योगन यदा की है, जिस के लिए वह नसीद या हिसाब दिया जाना चाहिये था ।

(३) जो प्रमोदित विद्या ब्रजह मुनासिब नसीद या हिसाब की पत्न या वक्तु तैयान करने न नये, जैसा कि अपन वपाई हुई दोनों दृष्टों में से हर एक में वपाया गया है, तो उस पत्न ऐसा पुमान् व-गौन सजा के किया जायगा, जो पञ्च नुपये तक हो सकना है ।

वोक्तु गवर्धमेष्ट
नसीद और हिसाब के
वक्तु तैयान करनेगी ।

पद । (१) वोक्तु गवर्धमेष्ट नसीद के नमूने पत्न साजी के साथ, और ऐसे हिसाबों के वक्तुओं के साथ जो अपन विषये हुए दृष्टों के मुनासिब काम में आ सकते हैं, तैयान करानेगी और सब-उद्दीष्टन के कथहरियों प्रमोदितों की वेचने के विषये मौजूद नयेगी ।

(२) ध्यानम ऐसी कृपाओं में विक्रिगे जिन के वनस पत्न सिद्धिदेवान नमून ठगा रहेगा, या वह और किसी तरह पत्न की विक्रि करते हैं, जैसा वोक्तु गवर्धमेष्ट मुनासिब समझे ।

नजिस्ट्री किये हुए
मासिक भवेज्ज या
मुर्गहिन की नसीद
का वनस ।

द० । जहाँ मातृगुणों की किसी महात्मा के मासिक भवेज्ज या मुर्गहिन की कृति अदा करने के हैं, तो उस आदमी को नसीद, जिस का नाम ठीक नजिस्ट्रीशन है, सन १८७६ ईसवी की नू से व-गौन मासिक भवेज्ज या मुर्गहिन के नजिस्ट्री किया गया है, या उस के एगेष्ट की नसीद जिस को इस काम के विषये श्रुतिगान दिया गया है

माठगुजानी के ठिये वूरो सञ्चार होगो, और वर आदमी
जो माठगुजानी के ठिये जवाबदेह है, उस शपथ के
दावे के जवाब में जिस का नाम इस पत्र से नजिस्ती
किया गया है, येह उजान नहीं कर सकेगा, कि माठ-
गुजानी किसी गोसने आदमी को दिया जाना याहिये ।
पर इस दस्ते में जो कुछ ठिया है उस का असन उस
दाने पर नहीं होगी, जो ऐसा गोसना आदमी नजिस्ती किये
हुए माउिक भवेजान या मुर्हिब के वन्यिवाश नयगा है ।

माठगुजानी को अमान नयगा ।

हर (१) बीये ठियो हुई हाठगो में से किसी हाठ में-यानि
(अ) जब आसामी माठगुजानी अदा करने के ठिये
नुपया सामने नये, और जमींदार उस के ठेके से
या नसीद देवे से इकतान करे ।

(ब) जब आसामी जिस के जमूमे माठगुजानी का
नुपया बाजिवुठ अदा है, इस बाग के वासन करने
को बजह नयगा है, कि वह शपथ जिस को
माठगुजानी देना याहिये, उस के ठेके और उसको
नसीद देवे के ठिये-नाणी न होगी, यूंके उस ने
किसी बरुण पहले सामने नये हुए नुपये ठेके
से इकतान किया था, या नसीद नहीं दी थी ।

(स) जब माठगुजानी रजमादी सरोको को अदा करने
के बायक है, और आसामी सरोको को रजमादी
नसीद नुपये के ठिये नहीं पा सकगा, और उगता
पत्र से माठगुजानी ठेके के बासने किसी
शपथ को शपथिया न नहीं दिया गया है-वा

(द) जब आसामी को सत्य इस बाग का मर है, कि
माठगुजानी पावे का हक जिस को है, गो
आसामी उस अहाद में, जो उस के दानियादी
हक या जोग को माठगुजानी के बाउिन
सुनवे का शपथिया नयगा है, ठियो हुई दान-
याहक इस मजदूर को दे सकगा है, कि उस
को अहाद ने उस हुई नुपये को अमान नयने
को इजाजत दी होगी, जो उस बरुण नसीद
अदा करने के ।

अहाद में माठगुजानी
अमान नयने का
दर्यासग ।

(२) दनप्यासुग में उन सब वज्रूहाण की गणसीठ रहेगी, जिन पर वरह को गई है, और उस में ये वधाव रहेगा, कि (अ) और (व) की हाठगों में उस आदमी का नाम लिखा जायगा, जिस के हिसाब में वरह अमानगी रुपया जमा किया जायगा ।

(३) की हाठग में, उन शरीरों का नाम जिन की माठगुणानी अदा होनी चाहिये, या उन में से इनकों के नाम लिखे जायेंगे, जिन की आसामी वरा सके—और

(६) की हाठग में, उस आदमी का नाम, जिस की पिछड़ी वान माठगुणानी हो गई थी, और उस आदमी या आदमियों के नाम, जो उस की अब दावा करने हैं लिखे जायेंगे । उस दनप्यासुग पर उस गनह से कि आदमिकान-नवाई दीवानों के दखे पर में वगाया गया है, आसामी का, या जो वरह मुकदमों की वानों की आप न जानना हो, तो उन के जानने बाटे किसी और शयस का दसगण्य और गसदीक होगा, और उसके लिखे ऐसी छीस ठी जायगी, जिस के लिखे ठीकठ गजबमेवठ वरह गनह पर कायदे की नू से हुकम है ।

अमानग नयो माठ-गुणानी की नसीद जो अदाग मे हो गई परकी सगई होगी ।

दर । (१) जो उस अदाग की जिसके यहाँ दनप्यासुग पिछड़ी दस की नू से की गई है, ये दियेगा है, कि दनप्यासुग देवे बाटे की उस दस की नू से माठगुणानी अमानग करने का हक है, तो वरह उस माठगुणानी की ठीकी और अदाग की मुहल के साथ उस की नसीद देगा ।

(२) उस दस की नू से हो हुई नसीद आसामी की गनह मे अदा लिखे जाने गायक, और अपन वगाये हुए गोन मे अमानग नयो हुई माठगुणानी के रुपये की अदा के लिखे, उस गनह मे और उस हद तक, अमान नसीदों के लिखे कि उस माठ में नयगी, जब कि माठगुणानी का रुपया लिखते दस की (अ) और (व) की हाठगों में वरह अमानग देगा जो दनप्यासुग में, ऐसा आदमी वगाया गया

है, जिस के हिसाब में अमानगी रुपया जमा होना चाहिये।

उसी दृष्टि को (स) की हाठ में समाविष्ट करो, जिन की माओगुजानी अदा होने बाधक है—और

उसी दृष्टि के (द) की हाठ में वह आदमी होगा जिस की माओगुजानी होने का हक था।

दृष्टि (१) वह अदाग जिस ने रुपया अमानग नया है, अपनी कयहरी में किसी बाजेह जगह पर माओगुजानी। अमानग होने का रशगिहान, जिस में सब प्यास बागी की गश्तीद नहो, छा छोड़ो।

(२) जो अमानग नया हुआ रुपया रशगिहान छोड़ने की गरीब के पोछे, पनहन हिन के मोहन, आगे आने-बाढ़ी दृष्टि को नु से न अदा की जाय, गो अदाग और दृष्टि द. को (अ) और (व) की हाठों में उस आदमी पर, जो दयासा में ऐसा आदमी बनाया गया है, कि जिस के हिसाब में अमानगी रुपया जमा किया जायगा, माओगुजानी अमानग होने का रशगिहान बिगा प्यारी जानी जनेगी।

उस दृष्टि को (स) की हाठ में, जमींदार की देहागी कयहरी में, या उस गाँव में जिस में वह लोग बाँके हैं, किसी बाजनाह आम पर माओगुजानी अमानग होने का रशगिहान छा छोड़ो—और

उस दृष्टि की (द) की हाठ में, ऐसे हन आदमी पर, जो, वह यकीन करणो है, कि अमानग किये हुए रुपये का दावा करना है या हक नयगा है, उसी तरह का रशगिहान बिगा प्यारी जानी जनेगी।

दृष्टि (१) अदाग अमानग किये हुए रुपये को ऐसे कपूत को दे सकणो है, जिस को वह उसका हकान समझे, या ज्ञान मुना, सिव समझे गो उस रुपये को अपने पास नय सकणो है, जब तक अदाग दोबारी पर कैसद न करे कि रुपये का हकान कौन है।

(२) जो लोक गदतमेदत ऐसा हुकम दे, गो वह रुपया अगिबाउत के जगिये से डाक में भेजा जा सकणो है।

(३) जो रुपया अमानग नयने की गरीब के पोछे वरन पुने होने के पछे दृष्टि द. को नु से अदा न किया जाय, गो दावादा अदाग की तरह से कोई हुकम रज के वरनाउ न करे, गो वह रुपया अमानग नयने बाँके की कानस बिना

माओगुजानी अमानग होने का रशगिहान।

अमानग की हुई माओगुजानी का अदा देना या बापस देना।

(२) दनप्यासूग में उन सब वस्तुओं का नाम जिसमें वही पद को गई है, और उस में पद वयाव नहीं।
कि (अ) और (ब) की हावों में उस आदमी का नाम
दिया जायगा, जिस के हाव में वह अमानगी दुखा
जमा किया जायगा।

(अ) की हाव में, उन गरीबों का नाम जिस की
माओगुजानी अदा होनी चाहिये, या उन में
से इनकी के नाम दिये जायेंगे, जिस की
आसामी वगैरे—और

(ब) की हाव में, उस आदमी का नाम, जिस की
पिछली वान माओगुजानी दी गई थी, और
उस आदमी या आदमियों के नाम, जो उस
को अब दावा करने हैं दिये जायेंगे। इस
दनप्यासूग पद उस गृह से, कि आर्थिक कान-
नवाई दीवानों के दखे पर में वगैरे गया
है, आसामी का, या जो वह मुकदमों की वार्ता
को आप न जानता हो, तो उन के जानने
वाले किसी और शख्स का दस्तगुन और
गसदीक होगा, और उसके दिये ऐसी छीस दी
जायगी, जिस के दिये ओकठ गवर्नमेन्ट वक्त
वक्त पद कायदे की नू से दुरुम है।

अमानगी नयी माओ-
गुजानी की नसीद जो
अदाग से दी गई
पक्षी सहाई होगी।

दर १ (१) जो उस अदाग को जिसके यहाँ दनप्यासूग
पिछली दखे की नू से की गई है, पद दियेगा, दे, कि
दनप्यासूग देने वाले को उस दखे की नू से माओगुजानी
अमानगी करने का हक है, तो वह उस माओगुजानी को ठेकी,
और अदाग की मुहल के साथ उस को नसीद होगी।

(२) इस दखे की नू से दी हुई नसीद आसामी की
गनश से अदा किये जाने लायक, और जपन वगैरे हुए
गौर से अमानगी नयी हुई माओगुजानी के रुपये की
सहाई के दिये, उस गृह से और उस हद तक, असन नयेगी,
जैसा कि उस हाव में नयेगी, जब कि माओगुजानी का
रुपया पिछली दखे की (अ) और (ब) की हावों में, वह
आदमी ठेका जो दनप्यासूग में, ऐसा आदमी वगैरे गया-

है, जिस के हिसाब में अमानगी नुपया जमा होना चाहिये।

उसी दृष्टि को (स) की हाठग में रजमाही सवीक ठेके, जिन की माठगुजानी अदा होवे ठायक है—औन

उसी दृष्टि के (द) की हाठग में वह आदमी ठेका जिस की माठगुजानी ठेके का हक था।

दृष्टि (१) वह अदाठग जिस के नुपया अमानग नया है, अपनी कयहरी में किसी बाजेह जगह पर माठगुजानी। अमानग होवे का रसगिहान, जिस में सब प्यास बाणों की गहसीठ नहो, ठगा हो।

(२) जो अमानग नया हुआ नुपया रसगिहान ठगावे की गानीय के पोछे, पगहनह दिव के मोहन, बाजे आदे-बाही दृष्टि को नू से न अदा की जाय, तो अदाठग होन दृष्टि दृष्टि को (अ) और (व) की हाठगों में उस आदमी पर, जो दन्यासन में ऐसा आदमी बनाया गया है, कि जिस के हिसाब में अमानगी नुपया जमा किया जायगा, माठगुजानी अमानग होवे का रसगिहान बिना प्यया जानी कनेगी।

उस दृष्टि को (स) की हाठग में, जमोहन की देहागी कयहरी में, या उस जगह में जिस में वह जोर बाजे है, किसी बाजेह जगह पर माठगुजानी अमानग होवे का रसगिहान ठगा हो—औन

उस दृष्टि की (द) की हाठग में, ऐसे हन आदमी पर, जो, वह यकीन करतो है, कि अमानग किये हुए नुपये का दावा करता है या हक नयन है, उसी गनह का रसगिहान बिना प्यया जानी कनेगी।

दृष्टि (१) अदाठग अमानग किये हुए नुपये को ऐसे राज्य को दे सकतो है, जिस को वह उसका हकान समझे, या अमानग मुना, सिव समझे तो उस नुपये को अपने पास नयन करतो है, जब तक अदालत दीवानी पर हैसठ न कने कि नुपये का हकान कौन है।

(२) जो ठोकठ अवधमेवट ऐसा हुकम दे, तो वह नुपया अनिमाईन के जगिये से डाक में भेजा जा सकता है।

(३) जो नुपया अमानग नयन की गानीय से गोन वनन पुने होवे के पहले रस दृष्टि को नू से अदा न किया जाय, और दावावा अदाठग की गनह से कोई हुकम रस के वननियत न हो, तो वह नुपया अमानग नयन-बाजे की दास दिया

माठगुजानी अमानग होवे का रसगिहान।

अमानग की हुई माठगुजानी का अदा होना या दास देना।

जो सक्ता है, अर्थात् वह उस के विषे दृष्ट्यास्य देवे, और उस नसोद को ठीठा देवे, जो उस अदायग दे दो थी जिस के यहाँ माठगुजानी अभाव न थी गई थी ।

(४) वहीन हिनद रजवास कौनसिठ के नाम, या किसी और सनकानो अक्षर के नाम, किसी ऐसे काम के विषे जो मिष्टी द्यो की नू से रुपया अभाव नथवे-ब्राह्मी अदायग दे किया है, जोई वागिश या और कान-बाई वही को जा सकेगो, पर इस दखे में जो कुछ दिया है, किसी आदमी को, कि ऐसे अभाव के रुपये पावे का हक नथवा है, उस शयस से बसूठ बनवे से वही नोकेगा, जिस को इस दखे की नू से वह रुपया दिया गया है ।

वाकी माठगुजानी ।

द्वामी हक दानियावी
या जमीन जो कि
शर मुकनन पर
जोगी जानी है या
जिस पर हक दायगी है
वाकी माठगुजानी के
विषे बीछान हो जा
सकती है ।

हप । जब आसामी रसगिनानी दानियावी हकदान है ।
शर मुकनन पर जोग नथवे ब्राह्मी नथवा है, या दायगान
नथवा है, गो वह वाकी माठगुजानी के विषे वे-दयग वही
किया जायगा, पर उस का दानियावी हक या जोग रजवा
डिगनी माठगुजानी में बीछान किया जायगा, और माठ-
गुजानी का बसूठ होना उस पर पढ़ा, दावा होगा ।

दूसरी हाठगो में वाकी
के विषे वे-दयगो ।

हह । (१) जब ऐसे आसामी के पास जो द्वामी हक दान-
मियावी नथवे-ब्राह्मी, या शर मुकनन पर जोग नथवे-ब्राह्मी
या दायगान नथवा वही है, माठगुजानी वंजारी वनस पूने
होने पर जहाँ वह वनस जानी है, या जोड महिले के
पुत्र होने पर, जहाँ शयसो या अन्धो वनस यवना है
वाकी पड़े, गो जमींदार आसामी को वे-दयगो के विषे वागिश
दायग बन सकता है, याहे उसने वाकी माठगुजानी बसूठ
बनवे के विषे डिगनी पाई या न पाई हो, और किसी
कौन-कान को नू से वाकी माठगुजानी के विषे आसामी
को बिगाड देवे या उस को हक हो या न हो ।

उमा डिगनी में जो मुहूर्त के विषे वाकी माठगुजानी
का बिगाड वे-दयगो के मुहूर्तने में हो जाय, वाकी
मुहूर्त कान उमा के मुहूर्त में हो (जो कुछ हो) को पादा मुहूर्त

होगी, और जो डिग्री की एनीय से पदवत, दिन के भीतर, या जब अद्वय पदवतहों दिन पदवत, तो उस दिन जिस को अद्वय पुष्ट, वह रुपया और मुद्राओं का धर्म अदा किया, जाय तो डिग्री पामीठ नहीं की जायगी ।

(३) अद्वय कृष्ण पास सबों के विषे इस दृष्टि में वगैरे दुई पदवतह दिन की मियाद को बढ़ा सकुंगो है ।

६७ । वांको माठगुजारी पर सूद वानह रुपये सैकड़ों साठाना के हिसाब से, योगे के वनस के उस सेमाहो के अयोग से, जिस में कितना अदा होना चाहिये, वागिश के दायर होने तक ठोगा ।

६८ । (१) अगर किसी मुद्राओं में जो वांको माठगुजारी बचूष करने के विषे दायर किया गया है अद्वय समझे, कि मुद्राओं ने विवा बजह मुनासिब माठगुजारी शानिव-उठ-थदा देवे भूष गया या देवे से इकान किया, तो अद्वय मुद्राओं को डिग्री दो दुई माठगुजारी और धर्म के सिवाय, ऐसा और हनजा दिवा सकुंगो है, जो डिग्री दो दुई माठगुजारी पर २५ रुपये सैकड़ों से जेवादे न हो, और जिस को अद्वय मुनासिब समझे ।

पर शर्त ये है कि जब इस दृष्टि की नू ने हनजा दिवाया जाय, तो सूद की डिग्री न होगी ।

(२) अगर किसी मुद्राओं में जो वांको माठगुजारी के बचूष करने के विषे दायर किया जाय, अद्वय को दिव्य है, कि मुद्राओं ने विवा बजह माठगुजारी वागिश की है, तो अद्वय मुद्राओं को व-गोन हनजे के इना रुपया दिवा सकुंग है, कि मुद्राओं के दायरे के कुछ रुपये पर २५ रुपये सैकड़ों से जेवादे न हो, जैसा अद्वय ठाक समझे ।

माठगुजारी जो जिसने ने हो जागो है वा

माठगुजारी ।

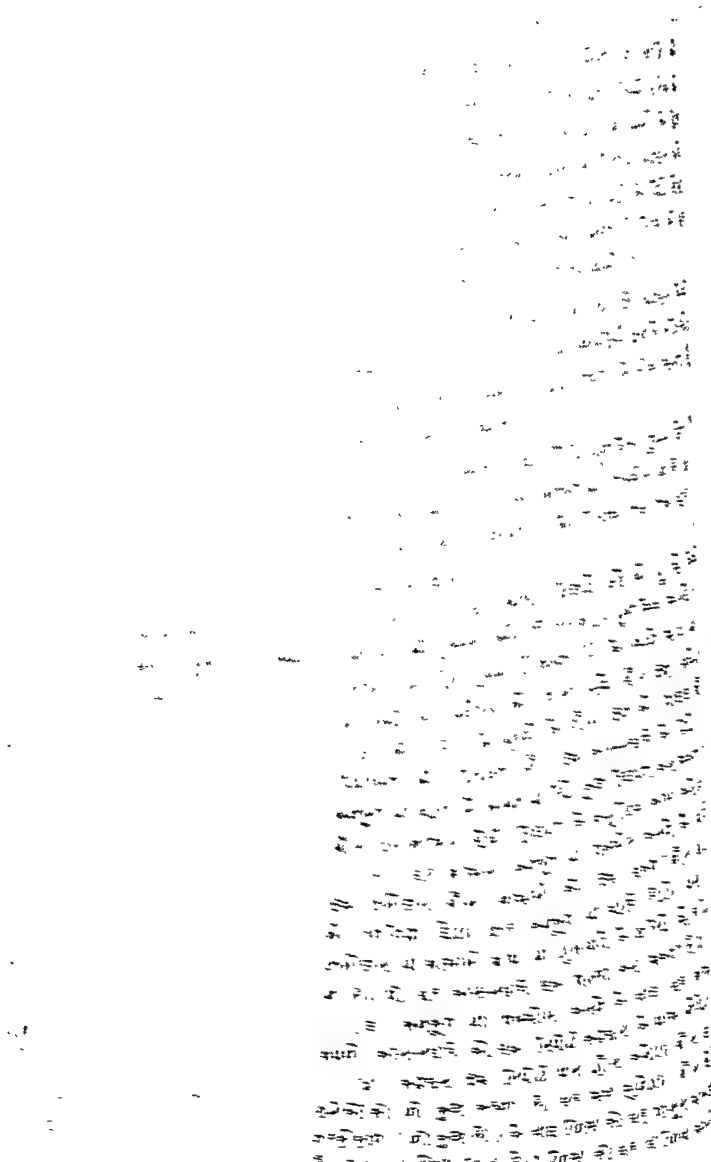
६९ । (१) जहाँ माठगुजारी पैदावान के बचूष वा बहार से हो जागो है ।

(२) जो जमादार वा राजनी काय वा जमारे के नू से बचूष वा बहार के बचूष न होना न हो, वा

वांको माठगुजारी पर सूद ।

विवा बजह मुनासिब माठगुजारी न देवे के विषे वा विवा सयव किसी मुद्राओं पर वागिश करने के विषे हनजा दिवावे का इच्छियान ।

पैदावान की बचूष वा बहार के विषे इच्छियान ।



(५) कठजन अग्न मुवासिव समहे गो उस अमन को, जिस पन दोनो गनछों के बीच में हुआ होना है, अदोण दोबानी के खेसठे के ठिये पेश कर सकना है, पन जपन वगाये हुए गौन के गावे हो कर उस का हुकम वापिक होना, और जर्मोदान या आसामी के दोबानी अदोण में दनप्रासण देवे पन, डिजानी के गौन पन गामोठ किया जायगा ।

(६) जहाँ अथुअन कनकूण करण है, कनकूण के कागुजान कठजन को कयहनी में दायिठ किया जायगा ।

७१। (१) जहाँ पैदावान की कनकूण पन माठगुजानी ठो जागी है, आसामी विठकुठ पैदावान पन दयुठ का हक नय्यगा ।

जिगस पन दयुठ का हक और जवावदही ।

(२) जहाँ माठगुजानी वटार से ठो जागी है, आसामी को आनी पैदावान के नय्यवे का हक होना, जब तक वह बाँटी न जाय, पन उस को घेर हक न होना, कि प्यठियाव से पैदावान के किसी हिस्से को, ऐसे ब्रकण या रस गनह से अठग करने, जिस से वह ठीक ब्रकण पन ठीक बाँटी न जा सके ।

(३) दोनो हाठगों में आसामी को घेर हक होना, कि वह पैदावान को ठीक ब्रकण पन काटे, और रकट्टा करने, और जर्मोदान उस में कुछ दसण-अनवाणी न करने ।

(४) जो आसामी पैदावान का कोई हिस्सा ऐसे ब्रकण और रस गनह से अठग करने, कि उस का ठीक कनकूण या वटार ठीक ब्रकण पन न हो सके, गो पैदावान को थुसठ ऐसी मानी और पूरी समही जायगी, कि जैसी आस-पास की उसी किसम की जमीन में, उसी किसम की थुसठ के ठिये सब से बड़ के कनकूण की गद है ।

जर्मोदान के वदवे पन या दनमियावी हक या जोग के शनिकाठ होवे पन, माठगुजानी अथ करवे को जवावदही ।

७२। (१) आसामी जब उस के जर्मोदान का हक किसी और को शनिकाठ किया जाय, हक पावे-वाठे के यहा उस माठगुजानी के ठिये जवावदही न होना, जो हक शनिकाठ होवे के पीछे अथ करवे-वायक हक और उस जर्मोदान को हो गई जिस का हक रस गनह से मुवासिव हुआ था,

आसामी उस माठगुजानी के ठिये, जो उसने अगले जर्मोदान को त्रिग पावे मग, त्रिग शनिकाठ के

(५) जो पैदावान की गाँव, कोमल, या बाढ़ों की
विशेषता हो। जो कठिन किसी धर्म के
दरप्राप्त पन, और जो वह पुनर्जन्म के लिए
रचना सुपया जमा करने जिनका कठिन कर्म
पैदावान को कनकूण या बटार के विषे ऐसी
अश्वसन मुकूनन कर सकता है, जिस को वह
उस काम के साथ सम्मेलन है ।

(२) ऐसी दरप्राप्त न गुणनवे पन जो कठिन किसी
ऐसी हाठन में, जिस में जिसे या सब-उत्प्रेरण के निमित्त
की नाय में ऐसा दुकम देना होगा धर्म के नीचे सम्मेलन है,
ऐसाही दुकम दे सकता है ।

(३) जो कठिन इस दृष्टि के मुनासिब दुकम देना है
जो जो वह पैदावान की कनकूण या गलसीम न हो जाय
वह ऐसा दुकम दे सकता है, कि जिनसे वह वह सब
हटाया न जाय ।

कान-नवाँ जहाँ अश्व-
सन मुकूनन किया
जाय ।

७० । (१) जो कठिन पिछड़ी दृष्टि को नू से किसी
अश्वसन को मुकूनन करने, जो वह ध्यान मुनासिब सम्मेलन, उस
अश्वसन को यह दुकम दे सकता है, कि अपने साथ यहाँ
आदिमियों को अश्वसन को गनह नये, और उन अश्वसनों
(जो कोई हो) के सुनने के गौर, उन को गाँव और
विशेषता की निरूपण, और उस कान-नवाँ के विषे जो
कनकूण या बटार में बनना चाहिये, कुछ हिदायत कर सकता है
और वह अश्वसन ऐसी हिदायत के व-मुनिव काम करेगा ।

(२) वह अश्वसन कनकूण या गलसीम बनने के पहले
उस धर्मोशन और आसामी के, उस वक्रण और जहाँ
की रणपिठा होगा, जहाँ कनकूण या बटार होगी, पन जो
धर्मोशन या आसामी आप या गुमाशतों के जिनसे सम्मेलन
न हो, जो वह कान-नवाँ एक गनखा कर सकता है ।

(३) कनकूण या गलसीम बनने के बाद, वह अश्वसन
अपनी कान-नवाँ को एक निपोट कठिन के पास भेजेगा ।

(४) कठिन उस निपोट पन गौर करेगा, और दोनों
धर्मोशों को जो कुछ कहना हो वह सब सुनेगा, और ऐसी
गलक्रीड़ा (जो कुछ हो) के बाद जिस को वह जानूँ सम्मेलन
है, उस पन ऐसा दुकम देगा जिस को वह वाणिज्य सम्मेलन है ।

• (५) कठजन अंग मुवास्तिव समझे गो उस अमन को, जिस पर दोनों गनछों के बीच में हड़ा होना है, अदातन दीवानी के सैसठे के ठिपे पेश कर सकना है, पर जपर वगारे हुए गौन के गारे हो कर उस का हुकूम नागिक होना, और जर्मोदान या आसामी के दीवानी अदातन में दनुयासण देवे पर, डिजानी के गौन पर रामोठ किया जायगा ।

(६) जहाँ अथुसन कनकूण करण है, कनकूण के कोठायाण कठजन की कयहनी में दायिठ किया जायगी ।

उ० १ (१) जहाँ पैदावान की कनकूण पर माठगुजानी ठी जागी है, आसामी विठकुठ पैदावान पर दण्ड का हक नयेगा ।

जिहस पर दण्ड का हक और जवाबदारी ।

(२) जहाँ माठगुजानी वटाई से ठी जागी है, आसामी को सानी पैदावान के नयवे का हक होगा, जब तक वह बांटी न जाय, पर उस को ये हक न होगा, कि यठियाव से पैदावान के किसी हिस्से को, ऐसे ब्रकण या इस गनह से अठग करने, जिस से वह ठीक ब्रकण पर ठीक बांटी न जा सके ।

(३) दोनों हाठों में आसामी को ये हक होगा, कि वह पैदावान को ठीक ब्रकण पर काटे, और इकट्ठा करने, और जर्मोदान उस में कुछ दसन-अनवाणी न करने ।

(४) जो आसामी पैदावान का कोई हिस्सा ऐसे ब्रकण और इस गनह से अठग करने, कि उस का ठीक कनकूण या वटाई ठीक ब्रकण पर न हो सके, गो पैदावान को दसठ ऐसी मानी और पूरी समझी जायगी, कि जैसी आस-पास की उसी किसम की जमीन में, उसी किसम की दसठ के ठिपे सब से वह के कनकूण की गई है ।

जर्मोदान के वडदे पर या दनमियागी हक या जोग के अनिकार रोवे पर, माठगुजानी अदा करने को

जवाबदारी ।

उ० १ (१) आसामी जब उस के जर्मोदान का हक किसी और को अनिकार किया जाय, हक पादे-बांटे के धन उस माठगुजानी के ठिपे जवाबदारी न होगा, जो हक अनिकार रोवे के धन अदा करने-वाले हुए, और उस जर्मोदान को हो गई जिस का हक इस गनह से अनिकार हुआ है ।

आसामी इस माठगुजानी के ठिपे, जो उस के अदा करने-वाले को दिया पावे गे, जिसे अनिकार के

दिया था, उस श्रृंगार के पास जवाब देह न होना, जिस को साविक के जर्मोदान ने अपना एक श्रृंगार किया है।

पर सिद्ध उस हाथ में जवाबदेह होगी, कि जब एक पत्रावे ने रुपया अदा होवे के पहले एक श्रृंगार होवे श्रृंगार आसामी को दी हो।

(२) जब उस जर्मोदान को, जिस का एक मुगल हुआ है, एक से जेपादे आसामी भाठगुजानी देगे है, उस दृष्टि के मगध के विषे ये कह्यो होगा, कि एक पत्रावे उन सब आसामियों के नाम एक आम श्रृंगार देकर, उस को उस गौन से मुशरहिन करने कि जैसा हुआ दिया गया है।

एक दृष्टि को जोर श्रृंगार होवे पर भाठगुजानी के विषे जवाबदेहो।

७३। जब कोई दृष्टिकान नश्य, विवा मर्णी अप जर्मोदान के अपनी जोर को श्रृंगार करना है, तो श्रृंगार करने-वाला और एक पावे-वाला अंग अंग और शरमाती गौन पर, जर्मोदान के यहाँ उस वाकी भाठगुजानी के विषे जवाबदेह होगी, जो एक श्रृंगार हो के पीछे वाकी पड़े, पर उस हाथ में नहीं, कि जब श्रृंगार होवे को श्रृंगार देनाए हुए गौन से जर्मोदान को दी गई है।

वे-आर्शन अववाव जगैरह।

अववाव जगैरह आर्शन के पिठाथ है।

७४। आसामियों पर अववाव, महंग, या और शरीर पर के ठगये हुए हन किस्म के महंग, जो अंग भाठगुजानी के सिवाय विषे जाते हैं, वे-आर्शन समझे जायगी और उन के अदा करने के विषे सब कीट-कान और सृष्टि किस्मों होगी।

जो भाठगुजानी काविद यदा मे जेपादे रुपया जर्मोदान आसामी मे सिवाय आर्शन के, उन के विषे अंग।

७५। हन आसामी जिस से (किस्सी पास आर्शन को नू से, जो उस वक्त जानो हो, छोड़ कर) कुछ रुपया या उस को जर्मोदान की पैदावान का कुछ हिस्सा, आर्शन को नू से दिये जाने ठायक भाठगुजानी के सिवाय, जर्मोदान को गन्य से पिठाथ आर्शन दिया जाय, तो ऐसे ठेके के दू, महीने के मोपन, जर्मोदान से ऐसी ठी, दू योण को पादाह या दाम के सिवाय, ऐसा रुपया जर्मोदान के गौन मे वन्दन करने की वागिग बन सकगा है, जिस को अंगद दुवास्त्रि समझे, और जो दो और रुपये से जेपादे न हो, या जब ऐसे ठी दू योण का दुगना दाम दो और रुपये से जेपादे हो, या गना रुपया जो उन दुगने दाम या पादाह

नवीं वाव ।

जमींदार और आसामी के विषे कृत्याद

मुनश्चिदिका ।

जमीन की विधाकरण बढ़ाना या सुधाने

का सामान करना ।

७६ । (१) इस ऐल के मतानिव के विषे सुधाने का सामान या जमीन की विधाकरण बढ़ाने से, जब वह ठगण नश्रण की जग के विषे रश्मिमाठ किये जायं ऐसा काम समझा जायगा, जिस से जग का काम बढ़ना है, और जो जग के विषे और उस काम के विषे, जिस के वासने वह पट्टे पर हो गई थी ठीक है, और जो जग पर नहीं बनाया गया है, वो उस के ठीक थायदे के विषे बनाया गया है, या बनाये जाने पर उस को प्यास थायदा पहुंचाया है ।

सुधाने का सामान या जमीन की विधाकरण बढ़ाने को गानीष्ट ।

(२) जब एक इस के वर्षिठाथ न विषयाया जाय, आगे वगाये हुए काम, हसव भनशा इस दसे के, जमीन की विधाकरण बढ़ाने-बाढे काम समझे जायेंगे ।

(अ) कुत्रे, गठाइ और पानी के गाठों का बनाना, और ऐसे काम बनाना, जिन से जेग के विषे या उन आदमी और औपायों के विषे, जिन से जेग का काम ठिया जाया है, पानी रकटा किया जाय, पहुंचाया जाय या बांटा जाय ।

(व) पानी पटाने के विषे जमीन का, गश्शन करना ।

(स) ऐसी जमीन का जो जनासन के काम में थागो है, या पठगो जमीन का जो कानिठ जनाथन है, पानी निकालना, या उन को दया और पानी से निकालना, या सैठाव या पानी के कटने से या और किसी तरह के मुक्तसान से बचाया, जो जमीन को पानी से पहुंचाया है ।

(द) जमीन को काशन में ठाना, और जेग के विषे साध करना, घेरना, या हमेशे के विषे सुधाना ।

(थ) सपन वगाये हुए कामों से किसी का गये सिन से बनाना, या गवठेठ करना, या उन में कुछ बढ़ाना—और

(६) नश्यत और उस के धन के आदिमियों के विषे नहने के साथ धन और उस के साथ जूनूरी औसादा वगैरह बनावा ।

(७) पन कोई ऐसा काम जिस को जोग नश्यत-बादा नश्यत बनावे, इस ऐक के मागव के विषे जमीन की विधाकण बढ़ावे-बादा काम नहीं समझा जायगा, अतः उस के जमींदार को जायदाद का हान बहुत कुछ घटाया है ।

अतः मुक्त पन जोग नश्यत की हाठ में, और जहाँ एक दम्पती है उन हाठों में, जमीन को विधाकण बढ़ावे का एक ।

७७। (१) जहाँ नश्यत अतः मुक्त पन जमीन नश्यत है, या अपनी जोग पन एक दम्पती नश्यत है, तो नश्यत और न उसके जमींदार को, ये एक होगा, कि जोग की निरंतर जमीन की विधाकण बढ़ावे में एक दूसरे को नोके, सिवाय उस हाठ के, कि जब वह आप उस काम को करना चाहता है ।

(२) जो नश्यत और जमींदार दोनों जमीन की विधाकण बढ़ावे के विषे एकही काम करना चाहें, तो नश्यत को उस के करने का पहला एक होगा पन उस हाठ में नहीं, कि जब वह उसी जमींदार के मागव दूसरी जोग या जोगों पन असन पहुंचाया है ।

अतः कठिन जमीन की विधाकण बढ़ावे के एक के बारे में दूसरा नहना ।

७८। जो कोई हाड़ा नश्यत और जमींदार के बीच में ही—

(अ) जमीन की विधाकण बढ़ावे के एक की निरंतर-या

(व) इस विषे कि किसी प्यास काम के करने में जमीन की विधाकण बढ़ेगी या नहीं, तो कठिन दोनों गुरांको में से किसी की दम्पती पन, इस बात को दूसरा कर सकता है और उस का दूसरा कर है होगा ।

एक दम्पती नहने को
उस के जमीन को
और बादा की
नहना ।

७९। (१) जिन दम्पती नश्यत का ये एक होगा, कि अपने जोग में पानी पाने के विषे कुछा और उस के मुकदमिज जो जो काम बनाया हो बनावे, या उन को कठिन नहने और नश्यत करने, और अपने और धन के आदिमियों के विषे नहने के साथ धन और जूनूरी औसादा वगैरह बनावे, जब इन बातों एक और बादा विषे, एक हाठों को एक काम करने जमींदार को विधाकण बढ़ावे की निरंतर के जोग को कि वह बढ़ावे का एक काम को नहना ।

(२) ग्रेन दम्पकान नश्याण जो अपनी जोग की जमीन की विधाकण बढ़ाने के विधे किसी काम करने का एक नयण है, पर उस का जमीन नश्याण नहीं देगा है, अगल वह ग्राहे कि ऐसा काम किया जाय, गो वह अपने जमीन को एक विधो हुई दम्पकान उस मजमून की दे सकगा है, या उस के यहाँ दियो सकगा है, कि वह मुवासिव वक्त के अनदन उस काम को करे, और जो जमीन उस दम्पकान पर अमठ न कर सके या न करे, गो नश्याण उस काम को आप कर सकगा है ।

८० । (१) जमीन ऐसे भाठ के अशसन के पास कि जिस को ठोकर गवर्नमेण्ट मुक्त करे, ऐसी जमीन की विधाकण बढ़ाने की नजिरती के विधे दम्पकान दे सकगा है, जो उस के आरिज की नू से किया है, या जो उस के पुर्ये से आरिज की नू से किया गया है, या जिस के करने में उस के आसामी को मदद दी है ।

जमीन की कोशिश से जो जमीन की विधाकण बढ़ो है उस की नजिरती ।

(२) दम्पकान ऐसे नमूने की होगी और उस में ऐसी वागे नहोरी, और वहलोकण सनजमोन या और ऐसे गीन से गसलोक की जायगो, जिन्हा ठोकर गवर्नमेण्ट कायदे की नू से वक्त वक्त पर हुकम दे ।

(३) दम्पकान ठेके-दाठा अशसन, जो वह दम्पकान वानह महोदे के जोगन नीचे विधो हुई गानोप से न दी जाय, गो उस को वा-मंगलून कर सकगा है ।

(४) ऐसी जमीन की विधाकण बढ़ाने की हाठ में, जो इस ऐज के जानी होवे के पदो किया गया है, इस ऐज के जानी होवे की गानोप से ।

(५) ऐसी जमीन की विधाकण बढ़ाने की हाठ में, जो इस ऐज के जानी होवे के बलि किया जाय- उस काम के पुरम होवे की गानोप से ।

८१ । (१) अगल किसी जोग का जमीन या दम्पकान ग्राहे कि उस की जमीन की विधाकण बढ़ाने का मुकूफ कटमवन्द किया जाय, गो वह किसी भाठ के अशसन (गेबेलिज अशसन) के पास दम्पकान कर सकगा है, जो

जमीन की विधाकण बढ़ाने का कटमवन्द मुकूफ १८८०-८१ में की, १८८०-८१ में

ऐसे वक्त और जगह जिस को शक्तिशाली शक्तियों को हो जायगी, उस सुवर्ण को कर्मवर्द्ध करनेगा। पर उस हाथ में नहीं, कि जब वह ऐसा समझता है, कि दयासागर देने के विषये कोई वजह मौजूद नहीं है, या उस को यह विचार जाय, कि दावा को हुई शक्ति को अदायगी दीवानी में पहुँचाना हो नहीं है ।

(२) जब कोई वाग इस दृष्टि को नू से कर्मवर्द्ध हुई है, तो वह वही सुवर्ण के किसी ऐसी पिछड़ी क्षान्त-न्याय में हो जा सकेगा, जो जमींदार और आसामी या और शक्तियों के बीच में हो, जो उन के माग्य दावा करने हैं ।

न्याय की कोशिश से जो जमीन की विवा-
कण बढ़ी है उस के
विषये गवाही ।

८२ । (१) इन न्याय जो अपनी जगह से वे-द्विषी किया गया है, यह एक नयेगा, कि उस ने या उस के पहले क्लेशों ने, इस ऐज को नू से, जगह की निरंतर, जो काम जमीन की विवाकण बढ़ाने के विषये किये हैं और जिस के विषये अब एक गवाही नहीं हो गई है, उस के विषये हजारा पारे ।

(२) जब कभी अदायगी किसी न्याय के वे-द्विषी के विषये डिजनी या हुकम दे, तो वह इस वाग को गवाही करनेगी, कि न्याय को इस दृष्टि को नू से जमीन की विवाकण बढ़ाने के विषये किये गए सुपया वही गवाही के दिया जायगा, और वे-द्विषी का हुकम या डिजनी उस वक्त देगी, कि जब न्याय को वह सुपया अदा किया जाय ।

(३) इस दृष्टि को नू से किसी ऐसी जमीन की विवाकण बढ़ाने के काम के विषये गवाही का दावा नहीं किया जायगा, जब न्याय ने किसी कानून या पट्टे का पारद्वे होकर किसी जानी यापदे के पाने के आसरे, जिसे पाने गवाही के, उस कानून को किया है, और वह यापदा उस ने पारा है ।

(४) जमीन की विवाकण बढ़ाने के विषये जो कोई काम न्याय ने हुकम मायें अब एवम और इस दृष्टि के आगे देते के बीच में किये हैं, वह इस ऐज को नू से जिस दूर अद्वे जायगी ।

(૫) ઊંચા ગાંધીમેન્ટ વૃક્ષ વૃક્ષ પત્ર સનકારી ગાંધી
મેં રક્ષાગ્રહન ક્ષાપ કન, અગ્રહન કો રક્ષ વાગ કો દિવાળ
કનને કે ઊંચે કાયદે વગાવેગી, કિ વૃદ્ધ જમીન કો ઊંચાકૃત
વૃદ્ધને કો ગાંધી, કા ગમ્મીના કનને કે વાસગે, જો
રક્ષ દશે કો નૂ સે દિવાળ ખાય, રાને અસેસન અપને સાથ
નખે. જિનને ઊંચા ગાંધીમેન્ટ મુનાસિવ સમહે, ઓન ઉગ
અસેસનો કો ઊંચાકૃત ઓન ઉગ કે યુવને કા ગૌન ડહાને
કે ઊંચે મો કાયદે વગાવેગી ।

૮૩ । (૧) ઉચ્ચ ગાંધી કા ગમ્મીના કનને કે ઊંચે, જો
પિચ્છો દશે કો નૂ સે જમીન કો ઊંચાકૃત વૃદ્ધને કે ઊંચે
દો ખાય, આગે વર્ગ દુર્ વર્ગો પત્ર ઊંચાકૃત કિયા ખાયગા ।

ગાંધી દિવાળે કે
કાયદે ।

(અ) જોગ કા દામ યા પૈદાવાન, યા ઉચ્ચ પૈદાવાન કા
દામ, જમીન કો ઊંચાકૃત વૃદ્ધને કે કામ સે
કિનના વૃદ્ધ હૈ ।

(બ) જમીન કો ઊંચાકૃત વૃદ્ધને-શાઉ
કામ કો હાઉગ, ઓન કવ તલ ઉચ્ચ કો અસન
નહ સક્તિ હૈ ।

(સ) ઉચ્ચ મજદૂરો ઓન પૂજો પત્ર, જો દેસી જમીન કો
ઊંચાકૃત વૃદ્ધને કે ઊંચે ચાહ્યે ।

(દ) માઠગુપ્તાની કો ગમ્મીશ્ચ યા માંકી પત્ર, યા કિચ્છો
ઓન કાયદે પત્ર, જો જમીનને વે ઉચ્ચ જમીન
કો ઊંચાકૃત વૃદ્ધને કે ઊંચે નરકા કો દિવા
દિ-ઓન

(ધ) જવ જમીન પહે પહે જોગો જાગો હૈ, યા
દેસી જમીન જો કમો પટાર નહીં ગર્દ થો,
પટારે કે ઊંચાકૃત કો જાગો હૈ, તવ ઉચ્ચ દુદાન
પત્ર, કિ જવ તલ નક્કર વે ઉચ્ચ જમીન
કો ઊંચાકૃત વૃદ્ધને-શાઉ કામ સે કાયદે દિવા
હૈ, વગેરે દેવે વેચી માઠગુપ્તાનો કે ।

(૧) જવ ગાંધી કો ગાંધી ડહાને રા યુવ, કો
મોઢા જો જમીન કો નરકા કારક ને નાગો દો,
પેર કમ દે રક્ષો હૈ, કિ ગાંધી વિરુદ્ધ નુપ્યે ને
કપ કિયે ખાંડે કો જમીન, રક્ષ કાના યા રક્ષ કિચ્છો રક્ષ
કો કિચ્છો ઓન ગાંધી સે કાયદે દિવા હૈ ।

मकान बनावे और दूसरे कामों के लिये जमीन
हासिल करना।

मकान बनावे और
दूसरे कामों के लिये
जमीन हासिल करना।

८४। अद्यतन विधानों जिसो लोग के जमींदार की दायित्व
पर और इस बात का ध्यान होवे पर कि वह किसी ऐसे
माकूठ और पूरे काम के लिये जो उस लोग या महाल की
महाल के लिये है जिस में वह जमीन है, लोग को जमीन
या उस के हिस्से को देना चाहता है, और उस को मकान
बनावे के लिये या मजदूर, गरीब, या गैर-जमीन के काम के लिये
इसविषय में करना चाहता है, और कठिन के सर्टिफिकेट
से यह ध्यान होवे पर कि वह काम माकूठ और पूरा है
जमींदार को ऐसी शर्तों पर जमीन देने का इच्छावान है
सकता है, जैसा अद्यतन मुनिसिपल समझे, और आसानी को
हकम दे सकता है, कि उस जमीन का सारा हक या उस
के किसी हिस्से का हक, जमींदार को ऐसी शर्तों पर
देवे जिन को अद्यतन आसानी को पूरी गारंटी दिया
मंजूर करे।

शिकमी पट्टे देना।

शिकमी पट्टे देने के
लिये कदम।

८५। (१) जो नरथ नजिस्ती को हुई दायित्व
के सिवाय किसी और तरह से शिकमी पट्टा दे, तो वह
शिकमी पट्टा उस के जमींदार के वर्धिष्ठान जायज न होगा
पर उस हाथ में कि जब जमींदार को मर्जी से दिया जाय।

(२) नरथ अगल ८ वरस से जेथादे भियाद के लिये
शिकमी पट्टा दे, तो वह नजिस्ती के लिये नहीं दिया जायगा।

(३) जब नरथ ने विना मर्जी जमींदार के इस हक
के जानी होवे के पहले, नजिस्ती को हुई दायित्व की
नू से शिकमी पट्टा दिया है, तो वह पट्टा इस हक के
जानी होवे के पीछे ८ वरस से जेथादे भियाद के लिये
जायज न होगा।

इच्छा देना और जमीन छोड़ देना।

८६। (१) जो नरथ पट्टे या किसी कौम-कान

को नू से, किसी मुदत तक के लिये पावन न करे, तो
वह जमीन के वरस पूरे होने पर, अपना लोग को
देना दे सकता है।

(२) पर इसीका देवे के वाद भी, नश्वर को उस जोग को जिसका उस योग के साध को भाग्युपानो का भिन्नाना मन देना होगा, जो इसीका देवे को पानीय के पीछे आया है, पर सिद्ध उस हाथ में नहीं, कि जब वह अपने जर्मिदान को इसीका देवे के कम से कम गीत महीने पहले, अपने शरीर को शक्ति दे ।

(३) जब नश्वर अपनी जोग को इसीका दे युक्त है, अर्थात् जब वह इस के वर्धिकात् न साधित किया जाय, जामोमे हरे (२) के मतानिव के द्विपे, नीचे द्विपे हाथों में कयास करनेगी, कि ऐसी शक्ति हो गई थी-यानि

(४) जो नश्वर उसी गात्र में उसी जर्मिदान से योग के उस वनस में, जो इसीका देवे के पीछे आया है, वह जोग में ।

(५) जो नश्वर योग के उस वनस के प्रथम होने से कम से कम गीत महीने पहले, जिस के अर्थात् होने पर उसने इसीका दिया है, उस गात्र में रहना छोड़ दे, जिस में इसीका हो हुई जोग बाके है ।

(६) नश्वर जो मुनास्त्रि समझे, जो शक्ति उस होशानी अर्थात् के ज्ञानिये से, जिस को हरे इच्छान के वनस वह जोग या उस का कोई हिस्सा बाके है, गामोत्तना सकृत् है ।

(७) जब नश्वर ने अपनी जोग का इसीका दिया है, जो जर्मिदान उस जोग को हस्त कर सकृत् है, और या गो-उत्त को किसी और आशामो को पढ़े दे सकृत्, या आप उस को जोग सकृत् है ।

(८) जब किसी जोग पर नजिदरी किया हुआ है, जो जोग का इसीका देना वह वह जायज न होगा, जब वह वह जर्मिदान और है, देवे-बाधों को निजानवदी से न दिया जाय ।

(९) इस से पिछले जामोमे हरे में वगैरे हुई अर्थात् को छोड़ कर, इस हरे में कोई ऐसी वगैरे है, जो नश्वर और जर्मिदान को उस आनी जोग या हरे के हिस्से के इसीका देवे के द्विपे, बायस ने वगैरे-वगैरे करने से नोके ।

जमीन छोड़ देना ।

८७। (१) जो नश्वर अपनी मूर्ति से अपने जमीन को वे-रणिठा दिये, और उस को माछुगानी वाकी परने पर अज्ञान के दिये कुछ वन-ओ-वन व-जो न दिये, अपने नहने को छोड़ दे, और अपनी जग को आप या किसी और आदमी के जग से छोड़ दे, जो जमीन उस जग के साथ के पुनर्मान होने पर, जिस में नश्वर ने इस गह से जग को छोड़ दिया है, और कश्म का काम वह कर दिया है, किसी वक्त उस जग को अपने दृष्ट में आसक्ति है, और उस को दूसरे आसक्ति को परे पर दे सकता है, या आप जग सकता है ।

(२) जमीन इस दृष्टि को नू से दृष्ट करके के पहले उठायें हुए गौर पर, कश्म की कयली में इस वाग का रणिठा-नामा दायित्व करनेगा, कि वह उस जग को छोड़ दो, इस समझ कर अपने दृष्ट में ठाने को है, और कश्म उस रणिठा-नाने को इस गह से मुखादि करनेगा, जैसा ठोकर 'गवनेमेव कयदे की नू से विचार करे ।

(३) जब जमीन इस दृष्टि को नू से दृष्ट करे, जो नश्वर को हक होगा कि रणिठा-नामे के मुखादि होने को पानीय के पीछे, किसी वक्त जो दो वन से जेयादे, या जो दृष्टकाव नश्वर को हठ में, वह महिने से जेयादे न हो, उस जमीन को दृष्टयायी के दिये वापिस दायित्व करे; और जब अज्ञान, अज्ञान उस को इस वाग का पक्ष हो, कि नश्वर ने अपनी मूर्ति से जग नहीं छोड़ दी है, बुद्धिमान पदंयये हुए ठोको को हाना देवे, और वाकी माछुगानी अज्ञान के निराव ऐसी गतिया पर, (जो कुछ हो) जग को अज्ञान करीब इन्साय समझे, दृष्टयायी का हक दे सकता है ।

(४) जब कोई अपनी जग या उस का कोई किसी निजिद को हक समायित्व को नू से निकली परे पर निजि जग है, जमीन इस दृष्टि को नू से उस जग का दृष्ट करके के परे, अपनी जग निकली परे को नू से निजि के दिये, निजि परे को उस माछुगानी पर, जो नश्वर, अज्ञान का, जो नश्वर उस जग

ਜੀ ਥਾਡ ਗਯਾ ਹੈ, ਐਨ ਇਸ ਅੰਤਿ ਪਰ ਜਿ ਗੁਰੂ ਜੀ ਮਾਠ-
ਗੁਯਾਰੀ ਜੀ ਉਸ ਅੰਤਿ ਦੇ ਜਿਹਮੇ ਵਾਕੀ ਪੜੀ ਹੋ ਅਵ
ਜੇ, ਏਨੇ ਜੀ ਘਾਹਿਸ਼ ਘਾਹਿਸ਼ ਕਰੇਗਾ । ਅਗਰ ਗੁਰੂ ਸਿਕਮੀ
ਪਟੋਏਨ ਮੁਗਲਿਸ਼ ਗੁਰੂ ਦੇ ਅਵਦਨ ਇਸ ਵਾਗ ਕੀ ਮਨਜੂਰ
ਨ ਕਰੇ, ਜੀ ਜਮੀਨੀ ਸਿਕਮੀ ਪਟੋਏ ਕੀ ਅਵ ਕਰੇ ਜੀਹ
ਕੀ ਫਘਰ ਮੇਂ ਭਾ ਸਕਾ ਹੈ, ਐਨ ਜਿਸੀ ਫੂਲੇ ਆਸਾਮੀ ਕੀ
ਗਏ ਪਟੋਏ ਪਰ ਏ ਸਕਾ ਹੈ, ਯਾ ਆਪ ਉਸ ਕੀ ਜੀਹ
ਸਕਾ ਹੈ, ਯੈਸਾ ਜਿ ਜਮੀਨੇ ਏਥੇ ੧ ਐਨ ੨ ਮੇਂ ਵਰਾਧਾ
ਗਯਾ ਹੈ ।

ਜੀਹ ਕੀ ਗਲਸੀਮ ਕਰਾਹਾ ।

੮੮ । ਅਗਰ ਕੋਰਿ ਦਰਮਿਆਨੀ ਹੁਕੁ ਯਾ ਜੀਹ ਯਾ ਉਸ ਕੀ
ਮਾਠਗੁਯਾਰੀ ਗਲਸੀਮ ਕੀ ਜਾਯ, ਜੀ ਜਮੀਨੀ ਉਸ ਕਾ ਪਾਵੰਦ
ਨ ਹੋਗਾ, ਪਰ ਉਸ ਹਾਥ ਮੇਂ, ਜਿ ਜਵ ਉਸ ਦੇ ਅਪਨੀ
ਨਿਜਾਮਵਲੀ ਭਿਯ ਕਰ ਜਾਹਿਸ਼ ਕੀ ਹੈ ।

ਵੇ-ਫਘਰੀ ।

੮੯ । ਕੋਰਿ ਆਸਾਮੀ ਅਪਨੀ ਜੀਹ ਯਾ ਦਰਮਿਆਨੀ ਹੁਕੁ
ਕੀ ਜਮੀਨ ਜੇ. ਸਿਰਾਧ ਰਾਜਾਧ ਡਿਗਰੀ ਕੇ ਜਾਨਿਯੇ ਜੇ.
ਵੇ-ਫਘਰ ਨਹੀਂ ਲਿਖਾ ਜਾ ਸਕਾ ।

ਪੈਮਾਸ਼ ੧ ।

੯੦ । (੧) ਮਸਤੂਰੇ ਅੰਤਿ ਇਸ ਹੁਕੁ ਐਨ ਜਿਸੀ ਫੀਰ-ਕੁਰਾਨ
ਕੇ, ਘੁਏ ਜਮੀਨੀ ਯਾ ਕੋਰਿ ਐਨ ਅਘੁਸ਼ਾਜਿਸ ਕੀ ਗੁਰੂ ਉਸ ਕਾਨ
ਕੇ ਜਿਥੇ ਅਘੁਸ਼ਾਧਾਨ ਏ, ਉਸ ਜਮੀਨ ਕੀ ਥੋਡ ਕਰ ਜੀ ਅਵਦਨ
ਅਨਕਾਨੀ ਮਾਠਗੁਯਾਰੀ ਜੇ ਮਾਧੁ ਹੈ, ਉਹ ਜਵ ਜਮੀਨੀ ਪਰ ਜਾ
ਕਰ ਪੈਮਾਸ਼ ਕਰ ਸਕਾ ਹੈ, ਜੀ ਉਸ ਕੀ ਮਾਠ ਯਾ ਦਰ-
ਮਿਆਨੀ ਹੁਕੁ ਕੀ ਜਮੀਨ ਕੇ ਅਵਦਨ ਥਾਕੇ ਹੈ ।

(੨) ਜਮੀਨੀ ਵਜ਼ੀਰ ਨਿਜਾਮਵਲੀ ਆਸਾਮੀ ਕੇ ਯਾ ਗਵਰਨਰੀ
ਰਾਜਾਧ ਕਰਜਾਨ ਕੇ ਪੇਰ ਹੁਕੁ ਨ ਅਘੋਗਾ, ਜਿ ਇਸ ਵਰਜ ਮੇਂ
ਹੁਕੁ ਏਥੇ ਜੇ ਜੇਯਾਏ. ਆਗੇ ਵਰਜਿ ਫੂਰਿ ਫਾਹਰੀ ਕੀ ਥੋਡ ਕਰ
ਜਮੀਨ ਕੀ ਪੈਮਾਸ਼ ਕਰੇ-ਯਾਹਿ

(੩) ਜਮੀਨੀ ਦਰਮਿਆਨੀ ਹੁਕੁ ਕੀ ਜਮੀਨ ਯਾ ਜੀਹ ਕਾ
ਅਕੁਬਾ. ਧਾਨੀ ਕੇ ਕਰਜਾ ਜੇ. ਵਰਜ ਵਰਜ ੮੮
ਅਗਾ ਹੈ, ਐਨ ਮਾਠਗੁਯਾਰੀ ਅਕੁਬੇ ਕੇ ਹੁਕੁ ਨਿਕ
ਏ ਜਾਹੀ ਹੈ ।

ਅਗਰ ਵਿਭਾ ਮਨਜੂਰੀ
ਜਮੀਨੀ ਜੀਹ ਗਲ-
ਸੀਮ ਕੀ ਜਾਯ ਜੀ ਗੁਰੂ
ਉਸ ਕਾ ਪਾਵੰਦ ਨ ਹੋਗਾ ।

ਸਿਰਾਧ ਰਾਜਾਧ ਡਿਗਰੀ
ਕੇ ਜਾਨਿਯੇ ਜੇ ਵੇ-ਫਘਰੀ
ਨਹੀਂ ਲਿਖਾ ਸਕਾ ।

ਜਮੀਨੀ ਕਾ ਹੁਕੁ ਜਾਨਾਨ
ਪੈਮਾਸ਼ ਕਰਾਏ ਕਾ ।

हुकूम गामोठ व होवे
से भवेजन मुक्तन
कनवे क रूग्णियान ।

एष । जो रजमाठी माठिक ऐसे वरुण के अवदन, कि
पिछोरी दहे की नू से हुकूम देने के पीछे एक महीने से
कम न हो, जैसा कि जिठे का जण उस काम के लिए इत्यादि
या जहां हुकूम उस दहे की नू से गामोठ किया गया है, तो
ऐसे गामोठ होने के पीछे उसी वरुण के भीतर रजमाठी भवे-
जन, मुक्तन न कने, और जण की रूग्णिया के लिए रक्तुंगी
की निपोट न कने, तो जिठे का जण उस हाठ को छोड़
कन, कि जब उस की ये वार अच्छी गनह से स्थिर
जाय, कि मुनासिब वरुण के अवदन अच्छे वनह-ओ-वसन सिधे
जाने की उम्मीद है ।

(अ) ये हुकूम दे सकगा है, कि उस महाठ या दानियागी
हक की जमीन का वनह-ओ-वसन कोर्ट भाग
बाँट के रोजे किया जाय, अगर कोर्ट भाग
बाँटस उस का वनह-ओ-वसन अपने हाथ में ठेगे
के विषे नाजो हो ।

(व) किसी हाठ में भवेजन मुक्तन कन सकगा है ।

पिछोरी दहे के कठाज
(व) की नू से हन
हाठ में काम कनवे
के विषे किसी गणुस
को नामजद कनवे का
रूग्णियान ।

एष । ठीकठ गवर्नमेण्ट किसी नकवे के भीतर जिस के विषे
पिछोरी दहे के कठाज (व) की नू से भवेजन मुक्तन
कनवा जानूत हो, सब महाठ और दानियागी हक बाँटी
जमीन का वनह-ओ-वसन कनवे के लिए किसी गणुस को
नामजद कन सकगी है, और जब कोई गणुस इस गनह से
नामजद हुआ हो, तो उस कठाज की नू से जिठे का जण
किसी और आदमी को भवेजन मुक्तन नहीं कनेगा, पर
इस हाठ में कि जब किसी महाठ के विषे, जण रजमाठी
माठिकों में से एक को भवेजन मुक्तन कनवा मुनासिब मने ।

एष । ऐसे किसी हाठ में जिस में कोर्ट भाग बाँटस
है एष की नू से किसी महाठ या दानियागी हक की
जमीन का वनह-ओ-वसन अपने हाथ में ठेगा है, कोर्ट भाग
बाँटस के हक अगर एष की वरुण मने तो माठ गैर-मददगार
के वनह-ओ-वसन से गवर्नमेण्ट नकगी है, इस वनह-ओ-वसन
के विषे काम में बाँटगा ।

एष । जो भवेजन जो दहे एष की नू से मुक्तन
किया गया है, अगर जिठे का जण मुनासिब मने
मेजबानी के हीन में मुक्तन कनवा, या इस के

कोर्ट भाग बाँटस
है अगर एष की
कोर्ट भाग बाँटस के
वरुण मने तो माठ गैर-मददगार
के वनह-ओ-वसन से गवर्नमेण्ट नकगी है, इस वनह-ओ-वसन
के विषे काम में बाँटगा ।

एष की नू से मुक्तन
किया गया है

ਗਰਸੀਐ ਜਿਧੇ ਹੁਏ ਯੁਧਏ ਸੇ ਸੈਯਫੇ ਕੇ ਹਿਸਾਬ ਸੇ ਭੁਝ
ਯੁਧਯਾ, ਯਾ ਭੁਝ ਏਕ ਗਰਸੇ ਸੇ ਐਯ ਭੁਝ ਫੂਲਰੀ ਗਰਸੇ
ਧਾਵੇਗਾ, ਯੈਸਾ ਜਿ ਆਏ ਕਾ ਯਯ ਭਰਾਧ ਭਰਾਧ ਪਰ ਫੂਲਮ ਏ ।

(२) वह अपना काम अच्छी तरह से करने के लिए ऐसी प्रभावना देगा, जिस के बिना जूड़े का जूड़ा हुआ है।

(3) वह व-शिक्षातानो जिणे जण वनद-ओ-वसू के जिणे वह श्रमियातान १५००, जो मनीकदान मागिक उस के मुकनन व होवे की हाउर में श्रमाओ गीर पर थमठ में ठागे, और वह श्रमाओ मागिक ऐसा कोई श्रमियात नहीं १५०० ।

(૪) વહુ જિંદે ખાળ કે હુસ્મ કે મુવાયિક સવ નયે
કો ગદાનુક ઓઁ નક્સીમ જમેખા ૧.

(પ) બ્રહ્મ વા-પ્રાવણા હિસાબ નખેગા, યૌન સતીકદાન માગિશો કો યા ઉગ મેં સે કિસી કો, એસે હિસાબ દેખવે યૌન ઉગ કો વજર છેવે દેગા ।

(੬) ੬੬ ਏਨੇ ਵਕਫ਼ਾ ਅਤੇ ਏਨੇ ਵਕਫ਼ਾ ਮੈਂ, ਜਿਸ ਦੇ ਨਿਯੇ
ਜਿਥੇ ਜੀ ਯਯ ਹੁਕਮ ਦੇ, ਥਪਵੇ ਹਿਸਾਬੀ ਕੀ ਪਾਸ ਕਰੇਗਾ।

(੨) ਕੁਝ ਏਸ਼ੀ ਏਸ਼ਿਆਨਾ ਦੇ ਸ਼ਕਤੀ ਹੈ, ਜੀ ਮਾਤਿਕ
ਏਸ਼ੀ ੧੦੩ ਕੀ ਜੂ ਕੇ ਦੇ ਸ਼ਕਤੀ ਏ ।

(૮) બ્રહ્મ સિંહ જિભે બાબતે હુકમ એ મોકૂફ રિયા
ખા સત્તવા. બીજા કિસી વાદ એ વર્હી ।

टप । जब कोई महाठ या दानियावी हज़ को ज़मीन
शुद्धिज़ाम के दिने कोई बाढ़ बाढ़ के हज़ारे किया गया
है, या हज़ टप को नू से उस के दिने नवेज़। लुनन। हुआ
है, गो जिने ज़ज किसी बरूय पेह हुज़न के बरूया ले, कि
उस के शुद्धिज़ाम का काम शरीक भाठिनो के हाव में
बापस दिया जाय, जो उस को बसोव हो कि बरूय शुद्धिज़ाम
मय गनह से बनेगी, कि धाम ठोड़ी को लुज़ दिन्ना व नोड़ी,
या बापस मयूसी के हुज़न को बरूयाव नो पड़येगा ।

३. रिफ़ाइन का काम
 शरीर भाइरों के हाथों
 में घापन देने का
 प्रणियाव ।

पिधान है कि रिजो वी ली
पन और अपिधान दिने अये
अप ज्ञान पन कहे वदते।

7/27/68

दसवां वाव ।

नूयदाद हकूक और भाठगुजानी का वगद-ओ-वसण ।

नूयदाद हकूक पश्चात्
कानदे और जमीन
की पैमाश कानदे के
ठिये हुकूम देने का
इच्छियान ।

२२१. (१) ठीकठ गजबमेन्ट किसी हाठ में गजबमे-
न्ट जेनेठ साहिव वहादुर शहास कौनसिठ की मजदूरी
पहले ठेकन और जो बर मुनासिव समझे गो उग हाठों
में से किसी में जो ठीक रस के पोछे वगार्द गई हैं, ऐसे
मजदूरी ठेके के वगोन, ऐसा हुकूम दे सकना है, कि कोई
भाठ का अथसन (जेनेजिजे अथसन) किसी नकवे के अगद,
जमीन की पैमाश कने, और उस की निखण नूयदाद हकूक
पश्चात् कने ।

(२) बर हाठों जिन में गजबमेन्ट जेनेठ साहिव वहा-
दुर शहास कौनसिठ की मजदूरी पहले ठेके के वगोन
रस दखे को नू से हुकूम दिया जा सकना है, भां
वगार्द हुई है, जैसा कि—

(अ) जब जमींदार या वहुण से जमींदार या वहुण
से आसामी ऐसे हुकूम के ठिये दनपासण दे
और 'पुनय अदा कानदे के ठिये रगवे रुपये जमा
कने', या रगवे रुपये की जमानण दे, जिस के
ठिये ठीकठ गजबमेन्ट हुकूम दे ।

(ब) जहां येह प्यठाठ किया जागा है कि ऐसे नूयदाद
के पश्चात् कानदे से, कोई ऐसा मानी हाफा
मिट सकना है, जो उमूमन आसामी और उस के
जमींदारों में दनपेश है या होवे-वाठा है ।

(स) जहां नकवा जमीन किसी ऐसे महाठ या दनमिवागी
हक की जमीन में है, जो सनकानी है, या
जिस का वगद-ओ-वसण सनकान या कोर्ट ऑफ़
वाडंस को पनश से किया जागा है—और

(द) जहां किसी नकवे जमीन की निखण सनकानी
जमा का वगद-ओ-वसण किया जागा है ।

(३) जब उस दखे को नू से दिये हुए हुकूम का
अगदहन सनकानी गजब में दया जाय, गो बर रस
वाग का पूना सुवण होगा, कि हुकूम वा-ज्जाववा दिया
गया है ।

१०२। जव रस से पिछ्छो दये को नू से कोर हुकम दिया जाय, तो जो मनागिब नूयडाद में दिखी जायंगी, हुकम में वगारि जायंगी, और एव में आगे दिखी हुई गम्भीरों में से सब या कुछ दनन किए जायंगे, ग्राहे एव में और जो मनागिब बहाए जायं, या नहीं।

कौन कौन मरानिष्ठ
नृपति में सुन्दर
होगे ।

(थ) हर आत्मा की ज्ञान ।

(વ) બ્રહ્મ કિંચ દત્તે કો માત્રામો દે યાગિ દત્તિયાનો
 હજુદાન, મનહ મુક્તેન પતિ જોગલે-ત્રાદા નમ્યન.
 દયુદકાન યો ગીત દયુદકાન નમ્યન. યા મિત્રમા
 નમ્યન દે, યોન મગત બ્રહ્મ દત્તિયાનો હજુદાન દે.
 નો દદામો હજુ દત્તિયાનો નમ્યલે-ત્રાદા દે યા
 નહોં. યોન જવ નક્ક બ્રહ્મ હજુ દત્તિયાનો નમ્યે ઇચ
 કો માત્રાજાનો વઢાર જા ચક્રનો દે યા નમોં ।

(੨) ਜਦੋਂ ਪ੍ਰਮਾਣਿਤ ਨਾਮ ਨੂੰ ਹੋਰ ਵੀ ਮੰਨਿਆ, ਜਦੋਂ
ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ।

(E) इस के जमींदार का नाम ।

(4) જો માણસનાં બે દેશ હોય તો

(૫) માળખાગતી નિચ ગદ્ય એ મુજબની જોઈ રી.
જોડ-જાન એ. યા અલગ જે જુલ એ ના
મીન નિચો ગદ્ય એ ।

(બ) ખો માન્યતાની નકલો રાખે એ, તે દે. જિ.સ. કનસે પત. શીન જિ.સ. જિ.સ.એ એ. તે દે. :

(६) प्रयोग करने की प्रकृति के अनुसार

१-२। भाषिक या रचनात्मकता एकदम की तरह एक ही
हीन ध्वनियों को सुनना पता चलने लगता है। एक के बिना
दूसरे सुनने को सम्मानना देते हैं। एक ही के अन्तर्गत
अपने-अपने भाषा एक ही के अन्तर्गत ही रहते हैं।
अपने-अपने के एक ही के बिना एक ही के अन्तर्गत
रचनात्मकता एक ही के बिना, एक ही के बिना
एक ही भाषिक को, रचनात्मकता, एक ही के अन्तर्गत
एक ही के बिना एक ही के बिना

一、二、三、四、五、六、七、八、九、十、十一、十二、十三、十四、十五、十六、十七、十八、十九、二十、二十一、二十二、二十三、二十四、二十五、二十六、二十七、二十八、二十九、三十、三十一、三十二、三十三、三十四、三十五、三十六、三十七、三十八、三十九、四十、四十一、四十二、四十三、四十四、四十五、四十六、四十七、四十八、四十九、五十、五十一、五十二、五十三、五十四、五十五、五十六、五十七、五十八、五十九、六十、六十一、六十二、六十三、六十四、六十五、六十六、六十七、六十八、六十九、七十、七十一、七十二、七十三、七十四、七十五、七十六、七十七、七十八、七十九、八十、八十一、八十二、八十三、八十四、八十五、八十六、八十七、八十八、八十九、九十、九十一、九十二、九十三、九十四、九十五、九十六、九十七、九十八、九十九、一百。

1980年1月1日
 1980年1月1日

Figure 1. The effect of the concentration of the *Agaricus bisporus* spores on the growth of *Agaricus bisporus* on the substrate. The concentration of the spores was 10⁴ spores/ml (a), 10⁵ spores/ml (b), 10⁶ spores/ml (c), 10⁷ spores/ml (d), 10⁸ spores/ml (e), 10⁹ spores/ml (f), 10¹⁰ spores/ml (g), 10¹¹ spores/ml (h), 10¹² spores/ml (i), 10¹³ spores/ml (j), 10¹⁴ spores/ml (k), 10¹⁵ spores/ml (l). The substrate was 100 g of the substrate. The temperature was 25 °C. The humidity was 95%. The pH was 7.0. The incubation time was 14 days.

कौनो को कौन-कौन

से जेयादे या कम जमीन नयगा है, जिस के ठिये वह माठगुजारी अदा करना है, और न जमीन न आसामी माठगुजारी के वन्द-ओ-वसर्ग के ठिये दनपासन देना है गो अशसन उस माठगुजारी को कठमवन्द करेगा, जो आसामी देना है, और उस जमीन को जो जिस के ठिये माठगुजारी हो जागी है ।

(२) जब यह दिखाने है कि आसामी उस जमीन से जेयादे या कम जमीन नयगा है, जिस के ठिये वह माठगुजारी देना है, या जमीन या आसामी माठगुजारी के वन्द-ओ-वसर्ग के ठिये दनपासन देना है, या जिसो हादरा में जिस में दृष्टा १०१ के जमीने २ का कठान (६) ठागा है, अशसन उस जमीन के ठिये जो आसामी नयगा है, जाणव और कौनो वसाध माठगुजारी मुक्तन करेगा ।

(३) इस दृष्टे की नू से माठगुजारी के उहावे में जब तक इस के वनपिठाध साविन न किया जाय, अशसन यह कयास करेगा कि जो माठगुजारी इस वक्त हो जागी है जाणव और कौनो वसाध है, और उन कयास पन गिरान नयेगा जो इस ऐत में माठगुजारी वहावे या वहावे में अदावन को हिदायत के ठिये नये जाये हैं ।

हमें के नुपदाइ का मुशगहिन करना ।

१०५ । (१) जब अशसन माठ इस वाव की नू से हर्तों को नुपदाइ गवधान करेगा, गो वह उस के मसौदे को पाम जगह में वगाये हुए गौन से और उहाये हुए वक्त तक मुशगहिन करेगा, और उन एगनाजों को सुवेगा और गजरीन करेगा जो मुशगहिन होवे के वक्त के अदवन उस के किसी मने पन किये जाय ।

(२) इस वक्त के पाम होवे पन अशसन माठ नुपदाइ को पाम करेगा, और उस को उहाये हुए गौन पन इस पाम जगह में मुशगहिन करेगा, और ऐदा मुशगहिन करेगा इस वाव का पना सुवृत्त होगा, कि नुपदाइ इस वाव की नू से उक्त गवधान हुवे है ।

हमें के नुपदाइ का

मुशगहिन करना ।

हमें के नुपदाइ का

१०६ । जो सिध्दी दृष्टे की नू से नुपदाइ के अदवन में नुपदाइ किये जावे के परी, किमो वक्त किमो मने के अदवन के किमो (जो इस वाव की नू से

वगद-बो-वसण की हुई माठगुणारी को भद नहीं है) या किसी ऐसी वाग को छोड़ देने की दुनुसगी की निसवण हठाड़ा बाले हो, जिस को अथसन माठ उस नूपदाह में दनन बनना नहीं आहण या नहीं किया है, तो अथसन माठ उस हठाड़े को सुवेगा और छेसठ कनेगा ।

१०७ । उन सब कान-नवाहों में जो इस वाव की नू से माठगुणारी के वगद-बो-वसण करने के ठिये की जागी है, और इस से पिछड़ी दहे को नू से की हुई सब कान-नवाहों में, अथसन माठ उन कथनों के पावगद हो कर, जिन को ठोकर गवर्नमेण्ट इस ऐक्ट की नू से वगावे, उस कान-नवाह के मुगाविक अमठ कनेगा, जो आर्य कान-नवाह दीवानी में मुक्तदमों की गजनीण के ठिये नयो गई है, और ऐसी ही कान-नवाह में उस का छेसठा डिगरी का जोन नयेगा ।

माठ के अथसन की कान-नवाह ।

१०८ । (१) इस वाव की नू से माठ के अथसन जो छेसठ दहे हैं, उन को अपीठ सुनवे के ठिये ठोकर गवर्नमेण्ट एक या जेपादे शपुसों को प्वास जाण मुक्तन कर सकगी है ।

अथसन माठ के छेसठ की अपीठ ।

(२) इस वाव की नू से जो छेसठा अथसन माठ दगा है, उस का अपीठ प्वास जाण के पास किया जायगा, और जो एहकाम आर्य कान-नवाह दीवानी में अपीठ के ठिये नयो गये हैं, जहाँ गत हो सके इन सब अपीठ के ठिए काम में आयेगे ।

(३) मसनूगे सनायण वाव ४२ आर्य कान-नवाह दीवानी के, ऐसे किसी मुक्तदम में जो दहे १०६ की नू से किया जाय, ऐसे प्वास जाण के छेसठे का अपीठ हार् कोर्ट में किया जायगा, जाँया उस को अदालत हसब मनसा उस वाव की पढ़े दहे के, हार् कोर्ट के माहण है ।

पर गत येह है कि जो दूनवे अपीठ में उन गदसीगों में से किसी की निसवण, जिन की नू से किसी दननियानी हू या जोग की माठगुणारी वगद-बो-वसण की गई है, प्वास जाण के छेसठे की हार् कोर्ट गनमोम कने, तो अदालत दननियानी हू या जोग के ठिए नई माठगुणारी मुक्तन कर सकगी है, ठेकिण ऐसा करने में उमो किम्म के और दननियानी

हस्त या जोर की माँगुजानी पर विहाज कनेगी जो
नूयदाद में शामिल है, जो दस १०४ को नू से दनया
वन्द-मो-वसग की गई है ।

नूयदाद की वह मदे
जिन के ठिये हाडा
नहीं किया गया है
सुपूर सनायन होगी ।

१८ । (१) हन नूयदाद में जो रस वाव को
परमान की जायगी, मुगजाण्या और जैन मुगजा
मदे अगग अगग विषयार्थ जायगी ।

(२) नूयदाद को हन एक मदे जिस पर किसी पर
पत्तनान नहीं किया गया है, सही कृपास को जा
जव पत्त उस के वरिष्ठागु न साविग किया जाय

जिस पानीय से मा-
गुजानी को वन्द-मो-
वसग जानी होगा ।

१९ । जव रस वाव को नू से किसी मा-
गुजानी वन्द-मो-वसग किया जाय, तो वह वन्द-मो-वसग नूय
के अर्थो न मनगवे मुगजाणि होवे के ठीक पीछे अने-
येगो के साव के सुनू से जानी होगी ।

ता परमानी नूयदाद
अदाम में मुगजमा
सुपूर या वसग नहीं
ही सक्तता ।

२० । जव दस १२ को नू से कोई हुकम दिया गया है

(म) दोहाजी अदाम नूयदाद के अर्थो न मनगवे मुगजा

दिन न होवे पत्त, उस नकवे में जिस के ठीक

हुकम दिया गया है, मा-गुजानी वन्दमे या

किसी मासामो को दनया गहाने के ठिये को

दयासग न होगी और वापिस नहीं सुनेगी-और

(न) हाई कोर्ट गजान मुगजासिब समझे ऐसी कान-नक

को मकसत मा-ग के पास मेणदे सक्तो है, जो दस

मा-गुजानी के वन्दमे या ऐसी वागो की गजान

कनवे के ठिये, जो दस १०२ में वगार्थ

जिसन की गई है, दोहाजी अदाम में दायन है ।

प्राप्त हादमों में प्राप्ति
नन्द-मो वसग कनवे
के ठिये हुकम देवे
ता अर्थोपान ।

२१ । (१) जव मोक्तम गजानमेदु को रस वाव

यज्ञोव हो कि रस के पीछे चगाये हुये अर्थोपानों को

में माना, मुगजा के वन्द-मो-वसग या उस जाग के ठीक

को गजान के ठिये जानून है, तो वह गजान-मेदु

अर्थोपान वगजान जीवसिब की मजपूरी पर

देवे अदम मा-ग को जो रस वाव को नू से कान

अर्थोपानाग मुगजासिब जेव या दन में से कोई

है कानों है, जेव कि-

(५) अथ मा-गुजानियों के वन्द-मो-वसग

अर्थोपान ।

(व) भाठगुजारी को वगद-आ-वसग कनवे के वरुण जो
 अश्वसन को नाथ में किसी वजह से, या हे वरु
 इस ऐश में वगद गई है या नहीं, हाठ की
 भाठगुजारी को कायम नथवा बाजिव या मुवा-
 चिव न हो, तो भाठगुजारी बाढावे को शप-
 गियात ।

(२) वरु शपगियाताए जो इस दखे को नू से दिये
 जायं, किसी प्यास वगए हुए नकवे के अगदर आम गौर
 से, या प्यास मुकदमे या किसम के मुकदमों के दिये, काम
 में बाये जायं ।

(३) जब ठोकर-गदवेमेवट इस दखे को नू से कोई
 कान-नवाह कनवे है, तो वरु नूयदाह वगद-आ-वसग जो
 अश्वसन भाठ वे गदथात किया है, जब तक जारी न
 होगा, जब तक गदवत-जेवनेग साद्वि वहाहुन शजठास
 कौनसिठ उस को मगजून न करे ।

११३ । जब किसी दामियावो हक को जमोव या जोग
 को भाठगुजारी, इस बाव को नू से वगद-आ-वसग को
 गई है, तो वरु उन हाठगों को छोड़ कर जिन में
 जमोदात वे अपनो कोशिश से जमोव को ठियाकर पड़ा
 है, या दामियावो हक को जमोव या जोग का नकवा
 पोछे से गवसेठ हुआ है, दामियावो हक या हक दपुगी
 को जोग को हाठग में पदवत वनस तक, बीन देखा
 जोग के दिये जिन पन हक दपुगी वगे है, अगल नाठ-
 गुजारी दखे ११२ को नू से वगद-आ-वसग को गई है, या
 १०४ को नू से जमोदात को दाम्यासग पन वगद-आ-वसग
 को गई है, या पाय वनस तक नहिं वहाह जायगा ।
 पदवत बीन पाय वनस का अतसा नूयदाह के अन्त ननपे
 मुमगदिव हावे को गानीप से जिन जायगा ।

किस अतसे एक भाठ-
 गुजारी जो मुकनेत
 हुई है बिना गवसेठो
 वहाह नहेगो ।

११४ । जब दखे १०२ के जमोदा १०३ के कठज
 (८) को छोड़ कर, इस बाव को नू से किसी मुकदमे
 में हक दिया जाय, तो हक दपुगी जो अरकात के किसी
 नकवे जमोव में इस बाव के हकान का जमो कनवे
 में जाय है, या हक दपुगी का नकवा किसी किसीके दिये
 ठोकर गदवेमेवट मुकदमे है, इस नकवे जमोव के दाम्यास

अत बाव को नू से
 नाव वहाह का मुकी ।

और आसामियों से ऐसे हिसाब से ठिया जायगा, जैसे कि ठोकर-गजबमेनट हन एक मुकदमे की हाथ को देख कर गजबमेनट करने, और उस प्यरे का ऐसा हिस्सा भी किसी आदमी से, इस तरह पर ठिया जायगा, सनकान को गनड से इस गौन पर वसूठ किया जायगा, कि गोया वह उस के जिन्मे बाकी माठगुजारी सनकारी अदा होवे बायक थी ।

माठगुजारी के मुकदमे होवे का कयास उस दनमियाणी हक पर नहीं होगा जिस के ठिये नुपदाद परआन हुआ है

११५ । जब दखे रंर कठाण (व) में वगार हुई गजबमेनट इस वाव को नू से किसी जोग की निसवण कठम वगद हुई है, गो उस जोग के ठिये उस के वाद वर कयास नहीं किया जायगा जो दखे पं में वगाया गया है ।

ग्यानहवां वाव ।

भाठिकों की निज दपुठी जमीनों की नुपदाद ।

पतान, जमीन की निसवण रसगिसना ।

११६ । वाव पाय में कोई ऐसी वाग नहीं है, जो भाठिक की ऐसी प्यास जमीनों पर हक दपुठी है, जो वंगोठे में पतान, निज, या निज जोग, और चिहान में जगान, निज, सोन, या कामग के नाम से कहलाते हैं, जब ऐसी जमीन यनद वनसों के ठिये, या वनस वनस के पढे पर नथी गई है, और वाव द में भी कोई ऐसी वाग नहीं है, जो ऐसी जमीनों के ठिये काम में आवे ।

सनकान को ये रपुगियान है कि भाठिक की निज जमीनों की पैमाश करवे और उन के कठमवगद करवे का हुकम है ।

११७ । ठोकर गजबमेनट वरग वरग पर ये हुकम दे सकणी है, कि अइसन माठ उन जमीनों को पैमाश और कठमवगद करने, जो किसी वगाये हुए नकवे में बांके है, और जो हसन मनशा पिछठी दखे के भाठिक की प्यास जमीन है ।

अइसन माठ को ये रपुगियान है कि भाठिक या आसामी को दनप्यासन पर प्यास दपुठी जमीनों को कठमवगद करे ।

११८ । ऐसी किसी जमीन की निसवण जिस को भाठिक अपनी प्यास जमीन वगाया है, भाठिक या उस जमीन के किसी आसामी की दनप्यासन पर, और प्यरे का जगती नुपया जमा करवे पर, अइसन माठ उन जगती की नू से जिज की ठोकर गजबमेनट इस काम के ठिए वगावे, इस वाग का दनप्यासन करके कठमवगद कर सकणी है, कि जमीन भाठिक को निज दपुठी जमीन है या नहीं ।

आसामीन के कठम वगद करवे के दिग्

११९ । जब अइसन माठ रस से पिछठी हो दखे में से किसी एक को नू से कान-नवाइ करे, गो दखे रस से रस गन (दखे माठिक) को गनगे अनठ में आवेगा ।

੧੨੦। (੧) ਅਭਿਸ਼ਪਤੀ ਮਾਓ ਆਗੇ ਵਧਾਏ ਦੁਰ੍ਹ ਜ਼ਮੀਨਾਂ ਦੀ, ਮਾਓ ਦੀ ਗਿਣ ਦਫ਼ਤਰੀ ਜ਼ਮੀਨ ਦੇ ਗਾਨੇ ਕੁਝ ਮਨਵਨ ਕਰੇਗਾ।

(ਅ) ਕੁਝ ਜ਼ਮੀਨ ਜਿਸ ਦੀ, ਏਸਾ ਸਾਹਿਬ ਲਿਆ ਗਿਆ ਹੈ, ਜਿਸ ਘਰਾਨੇ ਜ਼ਮੀਨ ਸੀ ਜਿਸ ਜਗੇਰ ਜਾਂ ਕਾਮਰੇ ਦੇ ਗਾਨੇ ਤੇ ਮਾਓ ਦੇ ਆਪੇ ਅਪਣੀ ਪੁੰਝੀ ਤੋਂ, ਜਾਂ ਅਪਣੇ ਨੌਕਰਾਂ ਜਾਂ ਲਿਖਾਰੀ ਦੇ ਮਾਓਵਾਂ ਦੇ ਜ਼ਮੀਨ ਤੋਂ, ਇਸ ਏਕ ਦੇ ਮਨਵਨ ਹੋਵੇ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਤੱਕ ਓਹੀ ਗਾਨੇ ਵਾਨੇ ਵਾਨੇ ਗਕ ਜ਼ਮੀਨ ਹੈ-ਐਨ

(ਬ) ਕੁਝ ਜ਼ਮੀਨ ਦੁਰ੍ਹ ਜ਼ਮੀਨ ਜਿਸ ਦੀ ਸਭ ਗਾਨੇ ਦੇ ਓਹੀ ਮਾਓ ਦੀ ਘਰਾਨੇ, ਜ਼ਮੀਨ, ਸੀ ਜਿਸ, ਜਿਸ ਜਗੇਰ ਜਾਂ ਕਾਮਰੇ ਕਰੇ ਹੋਏ ਐਨ ਐਨ ਮੁਫ਼ਤ ਤੋਂ ਕਰੇ ਆਏ ਹੋਏ।

(੨) ਇਸ ਵਾਗੇ ਦੀ, ਗਿਣਤੀ ਕਰਨੇ ਦੇ ਓਹੇ, ਜਿਸ ਐਨ ਕੌਨਸੀ ਜ਼ਮੀਨ ਮਾਓ ਦੀ ਗਿਣ ਦਫ਼ਤਰੀ ਜ਼ਮੀਨ ਦੇ ਗਾਨੇ ਪਰ ਕੁਝ ਮਨਵਨ ਹੋਵੇ ਆਹਿਏ, ਅਭਿਸ਼ਪਤੀ ਉਸ ਜ਼ਮੀਨ ਦੇ ਦਫ਼ਤਰੀ ਪਰ ਓਹੀ ਕਰੇਗਾ, ਐਨ ਇਸ ਵਾਗੇ ਪਰ ਜਿਸ ਕੁਝ ਜ਼ਮੀਨ ਮਾਓ ਸਭ ੧੮੮੩ ਦੀ ਦਫ਼ਤਰੀ ਗਾਨੇ ਦੇ ਪਹਿਲੇ, ਘਰਾਨੇ ਗਾਨੇ ਤੇ ਮਾਓ ਦੀ ਗਿਣ ਦਫ਼ਤਰੀ ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਗਾਨੇ ਪਛੇ ਦੀ ਗਾਨੇ ਦੀ ਜਾਂ ਨਹੀਂ, ਐਨ ਏਸੇ ਕਿਸੇ ਦਫ਼ਤਰੀ ਜ਼ਮੀਨ ਪਰ ਜੋ ਪੇਸ਼ ਲਿਆ ਜਾਏ, ਪਰ ਜਦ ਗਕ ਉਸ ਦੇ ਵਾਧਿਓਰੇ ਨੇ ਸਾਹਿਬ ਲਿਆ ਜਾਏ, ਅਭਿਸ਼ਪਤੀ ਕਰੇਗਾ ਜਿਸ ਜ਼ਮੀਨ ਮਾਓ ਦੀ ਗਿਣ ਦਫ਼ਤਰੀ ਜ਼ਮੀਨ ਨਹੀਂ ਹੈ।

(੩) ਜੋ ਅਭਿਸ਼ਪਤੀ ਦੀਵਾਨੇ ਤੋਂ ਇਸ ਵਾਗੇ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਹੋ, ਜਿਸ ਜ਼ਮੀਨ ਮਾਓ ਦੀ ਗਿਣ ਜ਼ਮੀਨ ਹੈ ਜਾਂ ਨਹੀਂ, ਜੋ ਅਭਿਸ਼ਪਤੀ ਉਹ ਕਰੇਗੇ ਪਰ ਗਾਨੇ ਨਯੇਗੀ, ਜੋ ਮਾਓ ਦੇ ਅਭਿਸ਼ਪਤੀ ਦੀ ਵਿਵਾਹਾਰ ਦੇ ਓਹੇ ਇਸ ਦਫ਼ਤਰੀ ਤੋਂ ਮੁਫ਼ਤ ਹੈ।

ਵਾਨਹਿਲਾਂ ਵਾਗੇ।

ਦੁਰ੍ਹੀ।

੧੨੧। ਜਦ ਕਿਸੇ ਨਯੇਗੇਰ ਜਾਂ ਸਿਰ੍ਹੇ ਨਯੇਗੇਰ ਦੀ ਗਾਨੇ ਤੇ ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਵਾਨੇ ਮਾਓ ਜ਼ਮੀਨੀ ਅਭਿਸ਼ਪਤੀ ਕਰੇਗੇ ਹੈ, ਐਨ ਇਸ ਵਾਨੇ ਤੋਂ ਜੇਹਾਦੇ ਹਿਲਾਂ ਦੀ ਵਾਨੇ ਨਹੀਂ ਹੈ, ਐਨ ਜ਼ਮੀਨ ਦੇ ਦਫ਼ਤਰੀ ਤੋਂ ਕੋਰੇ ਘਰਾਨੇ ਨਹੀਂ ਹੋ ਹੈ।

ਮਾਓ ਦੀ ਗਿਣ ਦਫ਼ਤਰੀ ਜ਼ਮੀਨ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਕਰਨੇ ਦੇ ਓਹੇ ਕਰੇਗੇ।

ਜਿਸ ਵਾਨੇ ਤੋਂ ਦੁਰ੍ਹੀ ਦੇ ਓਹੇ ਦਫ਼ਤਰੀ ਹੋ ਜਾ ਕਰੇਗੇ।

॥ निर्मलित उम याने को हृदय का प्रिय सा प्रिय
को नू मे हृदय का प्रिय सा प्रिय, यद्यपि मेरा
मनोबल को हृदय का प्रिय सा प्रिय, कि मने यहाँ हृदय
यहाँ प्रिय कि प्रिय-प्रिय मे हृदय मे हृदय प्रिय
वाक्य मान्यता को प्रिय सा प्रिय ।

(મ) ૧૬ ફરગ વા મુબીન કો યૌન પેઝાયા. જો જો
પત્ર બહો દ. વા ફરગી નર્તી આ મંદ દે।

(५) कोरि गुप्त या ज्ञान का मोन ऐसा पैदा हो
जा जोग पन उपजो है मोन काटा या अज्ञान
को गुरु है, मोन जोग पन नया गुरु है वा
परिपाय में या ईश्वर को जगह में या ऐसी
मोन जगह, या हेतु के में या वास्तविक जगह
में हो, व-मन्त्रों कि १२ इति को नू से कोरि
हयपायन—

(१) भाषिक या भवेषण जिस को गरीब जनो
नजिस्ते करवे के ऐत सन १८७८ में वगैर उर् है या
ऐसे भाषिक या भवेषण का मुनगहिग उस हाव में न करो
कि जव तक उस का नाम श्रीन उस जनो में उस के ह
को ह, जिस को जिसवग भावगुणारी वाको हे, उस ऐत
की शनगों को न से नजिस्ते न की उर् हो-या

(२) उस भागुजानी से जोड़ा है नुपये वसूळ करने के ठिये न की जायगी, जो पिछले मेरी के साथ में जोगे के ठिये अदा होने बायक थी, पर उस हाथ में की जायगी, कि जब वह नुपया पहनीना कौत-कानन को नू से बायक अदा करने के है, या व-सबव किसी कानन-नबाई के जो रस ऐक के मुगाविक, या रस से नद तिये हुए किसी और ऐक की नू से की गई है।

(3) उस गाँव के किसी हिस्से को पैदावार की निम्नवर्ग न की जायगा, जिस को आसामो ने जमींदार को पहलीनी इजाजत से शिकमो पट्टे पर दिया है।

इन्द्राय नमः ॥

१२२ १ (१) इस से प्रश्नो दहे को नू से को हुई
है एक दाय्यासू में आगे दिखो हुई वागे सुंदरान लोको।

(अ) ग्रहणी जिस को निस्सर्ज वाक्को माधुप्रायो
का दावा किया गया है, और उसकी ओर

या ऐसी और गधसोठों जो उस के शिवाय
के ठिये काछी हों।

व) आसामो का नाम।

(स) वह मुद्दा जिस के ठिये वाको माठगुजारी का
दावा किया गया है।

(द) वाको माठगुजारी को गंदाई और वह सूद जिस का
दावा किया गया है, और जो माठगुजारी पिछले
पेरी के साठ में आसामो ने दिया था, उस से
जब जेयादे रुपये का दावा किया जाय, तो वह
कौठ-काना या कान-नवाई, जिस को नू से वह
रुपया अदा होवे ठायक है।

(ध) उस पैदावान को किसम और कनीय कनीय दाम,
जो कुर्क को जायगी।

(छ) वह जगह जहां वह पैदावान पार् जायगी, या ऐसी
और गधसोठों जो उस के पहचानवे के ठिये काछी
हों-और

(ज) जो पैदावान पड़ी हो या रकड़गी व को गार् हो, तो
वह वरक कि जब वह कौठो या रकड़गी को
जायगी।

(२) दाय्यासग इस गौन पर दसगपुग और गसदीक
तो जायगी, जैसा अरिन कान-नवाई दीवानो में अगजो दावे
, गसदीक और दसगपुग के ठिये वनाया गया है।

१२३। (१) दाय्यासग देवे-ब्राठा पिछले दस को नू
से दाय्यासग दाय्यिठ कने के वरक, अदाग में ऐसा वह
नोनो सवूग (जो कुच हो) दाय्यिठ कनेगा, जो वह अपनी
दाय्यासग के ठिये जून सभहे।

दाय्यासग दाय्यिठ होवे
पर कान-नवाई।

(२) अदाग जो मुगसिब सभहे तो सायठ का रणहान ठे
सकगी है, और जिनवा जठह हो सके दाय्यासग को
मनजून या वा-मनजून कनेगा, या सायठ को और सुवूग
पेश कने के ठिये रणजण हो।

(३) जब अदाग जमोने दस २ को नू से दाय्यासग
को और मनजून या वा-मनजून वही कने सकगी, तो
वह अग नुगसिब सभहे हुकन हे सकगी है, कि वा
गामोठ हुकन जुर्का वा वा-मनजूरी दाय्यासग, वह पैदावान
जिस को जिकन दाय्यासग ने हे अग व किया जाए।

(४) जब इस दृष्टि की नू से पैदावान की कुर्की का हुकम उन्न के काटने या शकटों होने के बहुत पहले दिया जाए, तो अद्यावत ऐसे प्रकरण के विषे जिस को वह मुनासिब समझे, उस हुकम की गामोठ को मुठगरी बन सकगी है, और जो वह मुनासिब समझे, तो वा गामोठ हुकम कुर्की, पैदावान का उस जगह से हटाना बना बन सकगी है।

कुर्की के हुकम की गामोठ ।

१२४ । जो पिछली दृष्टि की नू से दम्पत्यभ मगपूत को जाय, तो अद्यावत उस में वगैरे हुई पैदावान या उस पैदावान के ऐसे हिस्से को जिस को वह मुनासिब समझे, कुर्की बनने के विषे एक अश्वसन की मुकनन कनेगी, और वह अश्वसन उस जगह जायगा जहाँ वह पैदावान है, और उस पैदावान को इस गहर से कुर्की कनेगा, किया तो वह उस की अपने जिम्मे नयेगा, या अपनी गल्ल से और किसी शय्यस के जिम्मे कनेगा, और उन कृषकों की नू से जिन को इस काम के विषे हाई कोई वगैरे कुर्की का इशारेहान जानी कनेगा ।

पर शर्त यह है कि अगर वह पैदावान इस किसम को हो, कि शकटों बनने नहीं नये जा सकगी है, तो वह इस दृष्टि की नू से ऐसे प्रकरण में कुर्की नहीं की जायगी जो उस प्रकरण से बीस दिन से कम पहले हो, कि जब वह काटने या शकटों बनने के बाधक होगी ।

गठवी और हिसाब की रजनाय ।

१२५ । (१) कुर्की बनने-वाला अश्वसन कुर्की बनने के प्रकरण वाकीदान पर वाकी माठगुजारी और उस पय्य के विषे जो कुर्की बनने में पड़ा है, गहनोरी गठवी जानी कनेगा, एक ऐसे हिसाब के साथ जिस में कुर्की को प्रणूहण, मुनदनज होगी ।

(२) जब कुर्की बनने-वाला अश्वसन यह समझता है, कि कुर्की किए हुए माठ का माठिक वाकीदान नहीं है, वगैरे और कोई शय्यस है, तो वह गठवी और हिसाब की नक़्शे उन्न शय्यस पर भी जानी कनेगा ।

(३) गठवी और हिसाब जो हो सके मुद वाकीदान के हाथ में दिया जायगा, पर अगर वह शय्यस जिस पर वह माठगुजारी को रजनाय के रूप में दिया जायगा, वह नक़्शे के अनुसार

या धौन किसी जगह से पाया न जाय, गो अश्वसन उस मकान के वाहन जिस में वाकीदान अश्वसन रहता है, किसी बाजे हिस्से पर पड़वी और हिस्साव को बकलों को छोड़ेगा ।

१२६। (१) कुर्कें जो इस वाव की नू से की जाय, किसी शय्यस को किसी पैदावान के काटने रकट्टा करने या डेन छोड़कर नथवे से न नोकेगी, या धौन किसी काम के करने से जो उस की दिशाजग के ठिये जानू हो ।

पैदावान को काटने
बगीरह को हू १

(२) अगल बह आदमी जो ऐसा करने का हक नथपा है, ठीक वकन पर ऐसा न करे, गो कुर्कें करने-बाठा अश्वसन कुर्कें की हुई पड़ी धुसों को, या पैदावान को जो रकट्टा नहीं को गई है पकड़े पर कटावेगा, और रकट्टा करने ऐसी कोठियों में या और जगहों में जहां बह इस काम के ठिये अनुमन नथे जाते हैं, या पड़ोस में किसी धौन सुनीते को जगह में डेन करने नथेगा, या उग की दिशाजग के ठिये जो कुछ जानू हो, करेगा ।

(३) इन दोनों में से किसी हाठन में कुर्कें किया हुआ माव, कुर्कें करने-बाठे अश्वसन या ऐसे किसी अश्वस के जिन्मे रहेगा, जिस को बह इस काम के ठिये मुसन्न करने ।

१२७। (१) जो जो पड़वी और कुछ प्यो कुर्कें धौन न बसूत हो, गो कुर्कें करने-बाठा अश्वसन ऐसी रशगिहान जानी करेगा जिस में कुर्कें को हुई निरक्षिपण की गइसीठ और जो पड़वी को गाहए जिस के ठिये बह कुर्कें की गई है मुनदनज हाजी, और पेर जो मुशगहिन करेगा कि बह कुर्कें की हुई निरक्षिपण किसी बगारि हुई जगह में ऐसे दिन लोगन करेगा, जो कुर्कें करने में पोटि गिन दिन में बन वा सग दिन में गेगहे न हा, पर गों पेर है कि लय कुर्कें को हुई अथवा पैदावान अश्वस को है, कि बह डेन करने नथेगा कि अश्वसों में पन करी गल डेन करे, और जो जगह है न लोगन को गाहो-अश्वसन में मुनदनज को जाना, कि उस के हावे के पारे न डेन ठिये जाने के ठिये करेगा, या जाय ।

जो पड़वी अश्वस न
हावे में नोदानी अश्व-
गिहान जानी निया,
जाएगा ।

(२) रक्षणहीन उस गाँव में जिस में वह जमीन बाँटे है, जिस की बाँकी भाग्यजानी के विषे बाँटिश की गई है, किसी बाणहे जगह पर ठगारा जायगा ।

बीराम की जगह ।

१२८ । बीराम ऐसी जगह होगा जहाँ कुर्क किया हुआ माँ है, या उस के बहुत पास किसी ऐसी जगह होगा जहाँ धाम छोड़ा आगे जागे है, अगल कुर्क करने-वाला अक्षय यह समझे कि वहाँ वह जेबादे दाम पर विकेगा ।

कवचसठ षड् बीराम हो सकगी है ।

१२९ । (१) वह छसठ या पैदावान जो इस किसम की है, कि ठेन ठगारन नयी जा सकगी है, एवं एक बीराम नहीं की जायगी एवं एक वह काटी या रक्तही नहीं की जाय, और जमा करने नयने के बायक न हो ।

(२) वह छसठ या पैदावान जो इस किसम की है कि जमा करने नहीं नयी जा सकगी है, काट कर रक्तही करने के पहले बीराम हो सकगी है, और पुरोदान की ये हक होगा, कि आप उस जमीन पर जाय या इस काम के विषे अपने किसी आदमी को वहाँ भेजे, और उस की पुरन-पानी के विषे या काटने और रक्तही करने के विषे जो कुछ जानू हो करे ।

बीराम की जायगा ।

१३० । माँ एक या जेबादे ठाट या हिस्से में, जैसा कि बीराम करने-वाला अक्षय मुवासिव समझे बीराम किया जायगा, और अगल जून पठवी और कुर्क और बीराम का पयों जायगा के एक हिस्से के बीराम से बचू हो जागे की बाँकी जायगा कुर्क से और पुरास की जायगी ।

बीराम की मुठपरी

१३१ । अगल उस जायगा के बीराम होने के वक्त बीराम करने-वाले अक्षय की गजबीज में, उस के विषे बाँटिश दान न बोला जाय, और अगल उस जायगा के बाँटिश या वक्त मजूम जिस को उस ने इस काम के विषे बाँटिश दिया है, दुमने दिन एक या (जो बीराम के जगह बाँटिश ठगारा को) बाँटिश बाँटान ठगारे के एक बीराम मुठपरी नयने की दनपुकर करे, तो उस एक बीराम मुठपरी नयेगा, और उस दिन पुरान किया जायगे और ठगारे के विषे जो कुछ दान बोला जाय ।

१३२ । हन ठाट का दाम नोठाम के ब्रकण या उस के पीछे रगना जठर जिएना नोठाम जनवे-वाठा बधुसन हुकम है, यदा किया जावेगा, और ऐसे न यदा जनवे पन भाठ छिन नोठाम पन यदाया जायगा, और वेय दिया जायगा ।

मोठ के रुपये को बदा जनवा ।

१३३ । जब मोठ का रुपया बिठकुठ बदा हो चुके गो नोठाम जनवे-वाठा बधुसन प्यनीदान को एक ऐसा सर्टिफिकेट जा, जिस में उस जायदाद को गश्सीठ नहोयो, जो उस प्यनीदा है, और उस का दाम भी ठिया नहोया ।

प्यनीदान को सर्टिफिकेट दिया जायगा ।

१३४ । (१) इस वाव की नू से कुर्क किये हुए जायदाद के हन एक नोठाम के रुपये से, नोठाम जनवे-वाठा बधुसन कुर्को और नोठाम का प्यया, ऐसे हिसाब से बदा करेगा, जो उन कायदा में बगाये गये हैं, जिन को ठोकर-मजदमेवठ इस काम के ठिये ब्रकण ब्रकण पन बगावे ।

जन नोठाम जिस गनह गसनंठ होगा ।

(२) यथा हुआ हिसा, बाकी भाठगुजानी जिस के ठिये कुर्को को गई थी, और उस पन नोठाम के दिन एक जो सृष्ट १३८५१ हुआ हो, यदा जनवे के ठिये काम में ठाया जायगा, और जो कुछ बय नहे गो उस मय्यस को दिया जायगा जिस को जायदाद नोठाम को गई है ।

१३५ । बह बधुसन जो इस ऐल की नू से जायदाद नोठाम करगे हैं, और उन के मुठाजिम या मागहण ठोय बपवो जाग से या और जिसो के जानिये से, ऐसी जायदाद को नहीं प्यनीद सकगे हैं, जिस को बह बधुसन नोठाम करगे है ।

बाण मय्यस प्यनीद नहीं कर सकगे हैं ।

१३६ । (१) इस वाव की नू से कुर्को होवे के बाद और कुर्क को हुई जायदाद के नोठाम के बागो, किसी ब्रकण जो बाकीदान या कुर्क को हुई जायदाद का भाठिक, जब कि बह बाकीदान नहीं हैं कुर्को का हुकम जानो जनवे-वाठा बधुसन में या कुर्क जनवे-वाठे बधुसन के हाथ में बह रुपया जमा करे, जो १२५ दरे की नू से जानो को हुई गठवो में लुनदनण है और बह प्यनया गो बदा करे जो गठवो जानो होवे के पीछे ठोया है, गो बधुसन या बधुसन इस को नकोद होया, और कुर्को उन्ही ब्रकण को ठोया होया ।

नोठाम के बागो गठवो बदा होवे में जान-नबार्ह ।

(२) जब कुछ कन्दे-बाठा बधुसन जमा किया हुआ
नुपया पाते, वह उसी वक्ता उस की अदाएँ में अदा करोगा।

(३) नसीब जो इस दखे की नू से कुछ की हुई
जायदाद के मादिक को दी जाए जो वाकीदान नहीं है, उस को
ऐसी आशुदा वादिक से ब्यावेगी, जो उस वाकी मादगुजारी
के विषे की जाए, जिस के विषे जायदाद कुछ की गई थी।

(४) इस दखे की नू से नुपया जमा करने की गरीब
से एक महीना गुजरने पर, अदाएँ कुछी के हनपासन
देने-बाठे को उस नुपये से उस का वाकी नुपया अदा करोगी-
पर उस हाथ में नहीं, कि जब उस बन्से में कुछ लिपे
हुए भाठ का मादिक उस हनपासन कन्दे-बाठे पर हनपे
की वादिक इस बुनियाद पर करने, कि कुछी बिठाइ आँक थी।

(५) अगल कोई जमींदार इस दखे की नू से किसी
माणहण आसामी का जमा किया हुआ नुपया पाते, वो
सिधे इस से येह नहीं समझा जायगा, कि उस ने अपने
वासामी के जोग के या उस के किसी हिस्से के, किसी
पट्टे देने की इजाजत दी है।

बन नुपया जो अपने
पट्टे देने-बाठे के विषे
जितनी आसामी ने
अदा किया है, नाब-
जगानो से मुजता की
रहता है।

रव ७। (१) जब किसी आसामी माणहण की जायदाद
आसामी मादिक को मादगुजारी व देने के सबब से, इस
बाब के मुगाविक, आँक की नू से कुछ की जाय, और
बत बिच्छी दखे की नू से नुपया अदा करने, वो उस को
येह फ़क होगा कि उस नुपये की मादगुजारी से मुजता
कर ले, जो उस के जमींदार मादिक को देने लायक है, और
बत जमींदार जो बत वाकीदान न हो वो उसी गतर से
अस मुजता लिपे हुए नुपये को उस मादगुजारी से मुजता
करने का फ़क नपेगा, कि जो उस के जमींदार मादिक को
देने लायक है, और उसी गतर से होगा जायगा, जब तक
कि नुपये का बत न पहुँच जाय।

... इस दखे में जो कुछ लिखा है उस तक पर
... इस की नू से वाकिली माणहण पाते
... के बत बिच्छी दखे की नू से नुपया अदा करने
... जो उसी गतर से होगा जायगा, जब तक
... कि नुपये का बत न पहुँच जाय।

१३८। जब जमीन शिकमी पड़े पर दो गई है, और इस वाव को नू से जमींदार माछीक और जमींदार भागहण के हकी में, जो उसी जायदाद को जुर्ग करगे हैं' हुआ हो, तो जमींदार माछीक का हक ग्राहिव रहेगा।

जमींदार माछीक और जमींदार भागहण के हक का हुआ।

१३९। जब इस वाव को नू से जुर्ग का हुकम दिया जाय, और अदाग दीवानो उसी माठ की जवगो या नोठाम का हुकम दे, जिस के ठिये जुर्ग का हुकम हुआ है, तो उस वक्त जुर्ग का हुकम मुकदम समझा जायगा, पर अगर जायदाद उस हुकम को नू से नोठाम हो चुकी है, तो नोठाम का वया हुआ रुपया उस जायदाद के माछीक को, दहे १३४ को नू से, वगैर भगपूरी उस अदाग के अदा नहीं लिया जायगा, जिस दो जुर्ग या नोठाम का हुकम दिया था।

उस जायदाद को जुर्ग जो जवगो गये है।

१४०। इस वाव को नू से जो हुकम किसी अदाग दीवानो दे दिया है उस का अपीठ नहीं होगा; पर हन शयस जिस की जायदाद ऐसी किसी हाठ में, दहे १२१ की नू से दनप्यासण दिये जावे पर जुर्ग की गई है, जिस में ऐसी दनप्यासण उस दहे की नू से गा-जायण है, उस दनप्यासण देवे-वाछे पर हनजा पावे की वाठिस कर सकगा है।

वे-आईन जुर्ग के ठिये हनजा पावे की वाठिस।

१४१। (१) जब ठोकर गजदनेवट की येह नाय हो, कि किसी किसम के मुकदमों में या किसी नरवे जमीन में येगो इस किसम की है, और येगो जनवे-वाछो की आदगे ऐसी हैं, कि जमींदार के ठिये इस वाव को नू से दीवानो अदाग में दनप्यासण दे कर अपनी माठगुणानो बसूर करगा मुशकिल होगा, तो वह वक्त २ पर हुकम को नू से जमींदार को येह शयगियान दे सकगी है, कि वह आप या गुभासणे के जिनये से ऐसी पैदावान का जुर्ग करे, जिस को जुर्ग के ठिये उस को इस वाव को नू से दीवानो अदाग में दनप्यासण करवे का हक है, पर अगे येह है कि हन शयस, जो इस शयगियान को नू से कोर पैदावान जुर्ग करगा है, उस गीन से जान-नबाई करेगा, जो दहे १२८ में दगाया गया है, और गीन

वाछ हाठगो में जुर्ग का हुकम देवे के ठिये ठोकर गजदनेवट का शयगियान।

एक शपथनाम एसे वक्तों में जिस को हार्ड कोर्ट कायदे की नू से मुक्त करने, उस दीवानी अदालत को देना जो पैदावान कुर्क करने की दायरदार ठेके का शपथनाम नमो है, और वह अदालत जिनका जज हो सके, एक अदालत को भेजो जो कुर्क की हर्द पैदावान को अपने जमाने नमो।

(२) जब अदालत को कोई अदालत इस दंड की नू से कुर्क की हर्द पैदावान को अपने जमाने ठेके, तो उस के बाद कानून-न्याय इस गलत से की जायगी कि जोया उस के उस की दंड १२४ की नू से कुर्क किया था।

(३) लोक गवर्नमेंट इस दंड की नू से जो कुर्क है, उस की वह किसी प्रकार मजसूम बन सकती है।

कायदा वगैरे के विषे
हार्ड कोर्ट का शपथनाम।

१४२। हार्ड कोर्ट प्रकरण प्रकरण पर इस वाव की नू से, दाव किया मुकदमों को कानून-न्याय के शपथनाम के विषे, इस ऐज के मुआहिदा कायदे वगैरे सकती है।

गैरहवां वाव।

अदालत कानून-न्याय।

आर्य कानून-न्याय
दीवानी को जमाने
और याचकों के दाय-
मियाव के मुकदमा
ने गननाम करने का
शपथनाम।

१४३। (१) हार्ड कोर्ट प्रकरण प्रकरण पर व-मजसूम गवर्न-
मेंट साहित्य वहादुर शपथनाम कोवसिद के, इस ऐज के मुआहिदा
पेह मुआहिदा करने कायदे वगैरे सकती है, कि आर्य कान-
न्याय दीवानी के यवद इससे जमाने और आचकों के दाय-
मियाव के मुकदमों के विषे, या किसी प्यास किसान के ऐसे
मुकदमों के विषे काम में नहीं आयेगी, या उन कायदों में
वगाये हुए गौन पर गननाम होकर काम में आयेगी।

(२) इस गलत से वगाये हुए कायदों के गारे हार्ड
और इस ऐज के और गननाम के गौ गारे होकर, कान-
न्याय कानून-न्याय दीवानी ऐसे यव मुकदमों के विषे काम में आयेगी।

१४४। (१) जमाने और याचकों के दाय-
मियाव के मुकदमों में, आर्य कानून-न्याय दीवानी के गननाम के
विषे, किसी गननाम कायदा कि प्रकरण कोवसिद इस ऐज
कायदों के १२३, शपथनाम के नमो के अदालत को
के विषे के ऐसे गननामों को या जो गौ के गननाम
के विषे गननाम का शपथनाम है, जिस को, जिसके गननाम
के नमो के है।

इस ऐज की नू से को
नमो कानून-न्याय के नमो
१२३, १२४।

(२) जब इस ऐज की नू से किसी दीवानी अदालत का जर्मीदान या आसामी की दनप्यासण पर हुकूम देवे का शपथियान दिया गया है, तो दनप्यासण उस अदालत में हो जायगी, जिस को ऐसे दनप्यासी हुकूम या जोग के कृत्यां की नाविश सुनवे का शपथियान है, जिस की निस्तवण दनप्यासण की गई है।

१४५। जर्मीदान का हन नायब या गुमाशगा, जिस को इस काम के लिए जर्मीदान के हाथ से ठिपे हुकूम गहरीन की नू से शपथियान दिया गया है, ऐसी हन नाविश या दनप्यासण के मतानिब के लिए, हसब मगशा आरिन कान-नवाइ दीवानी जर्मीदान का कान-पनदाज समझा जायगा, अगलये जर्मीदान उस अदालत के हन शपथियान के नक़्चे के मोतान नहण है, जिस में नाविश दायन होना चाहिये या पेश है, या जिस में दनप्यासण हो गई है।

नायब या गुमाशगे कान-पनदाज मुग-सौशन होगे।

१४६। वह गइसीठों जो दरे पद आरिन कान-नवाइ दीवानी में जिकर की गई है, ऐसे मुकदमों की हाठण में दीवानी मुकदमों की उस नजिस्टन में, जो उस दरे में वगारि गई है, मुकदम होवे के एवाज, एक प्यास नजिस्टन में दर्ज की जायगी, जिस को हन अदालत दीवानी ऐसे नक़्चे में नपेगी, जिस को ठीकठ गवर्नमेण्ट ब्रतण ब्रतण पर इस काम के ठिपे मुकनन कने।

मुकदमों का प्यास नजिस्टन।

१४७। मशरूफे शायण दरे उज्ज आरिन कान-नवाइ दीवानी, जब जर्मीदान वे किसी नशयण पर उस की जोग की माठगुजानी बन्वू कनवे के ठिपे नाविश की है, तो वह जर्मीदान उस नशयण पर उसी जोग की किसी माठगुजानी बन्वू कनवे के ठिपे दूसरी नाविश वहां कन सकेगा, जब तक कि पहली नाविश दायन कनवे की गानीप से गोन महीवे गुजन न जायं।

माठगुजानी के मुकदमाग जो एक वाद दूसरे के दायन किये जाते हैं।

१४८। माठगुजानी बन्वू कनवे के मुकदमों में नीचे ठिपे हुए क़ायदे काम में आयेगे।

माठगुजानी के मुकदमों में कान-नवाइ।

(अ) आरिन कान-नवाइ दीवानी के दरे १२ में १२७

गक (दीनों गानिठ) दौन १२८. ३-१ दौन २२.

ने उरद गक (दीनों गानिठ) ऐसे मुकदमों के ठिपे काम में नही आयेगे।

(व) अर्थात् दावे में, इसे पं. आर्चन कान-नवार्च दीवानों में वगैरह कुछ गद्यसौष्ठों के सिवाय, उस प्रभोव के मौला, नाम, नकवा और यौहहदी को गद्य सोठ नहेगी, जिस को आसामी नयना है; या जहाँ मुहहर् नकवा या यौहहदी न वगा सके, वो उस के वजाय प्रभोव का ऐसी वधान नहेगा जो उस के पहयानवे के छिये काशी हो ।

(स) समन मुकहहमें के आभुगी छेसठ के छिये होगा, पर सिर्फ उस हावण में नहीं, कि जब अदावण से येह नाय हो, कि समन सिर्फ शुरू (समन मुगना-प्रिया) कहाने के छिये होना चाहिये ।

(ण) अर्थात् हाई कोटि आम गीन पन या किसी प्याम नकरे प्रभोव के छिये, कायदे को नू से ऐसी हुकम दे, वो समन और किसी गनह से जानी होने के सिवाय, या उस के वजाय इस गीन पन गामोठ किया जा सकता है, कि वा मुहहहमह के नाम ऐसी यिहड़ी में जो रदियन पोस्ट थायिस ऐल सग रदह के हिससे गीन को नू से नजिरदी को गार् है, डाक में नेजा जाय; जब समन इस गनह से किसी यिहड़ी में नेजा जाय, और येह आविग हो जाय कि यिहड़ी हक़ीक़ में डाक में हो गार् यो, और नजिरदी को गार् यो, वो अदावण येह क़्याम करेगी कि समन वा-जायना जानी किया गया है ।

(८) अर्थात् गनहोनी वगैरह रजामण अदावण के नहीं हाईदु किया जायगा ।

(९) अर्थात् कान नवार्च दीवानों के हस्त रदह में जो काहो गवाहों को अदालत जमानत करती के हिस मुकदम छिये गये हैं, उन काल में छिये गाना, वा के कबो किया जानने वा नहीं ।

(१०) अर्थात् जब हिस के हिसाबों-नाम के हाथों से काल-नाम एक काल के हिसाबों का हुकम है, कबो के कब काल के हिसाबों में नहीं, कि जो

वह वाको भागुजानी के ठिये वे-दुष्परी की
डिजानी है ।

(६) वावजूद उस के जो आर्य कान-नारि दीवानी की
दुखे उतर में ठिया है, उस डिजानी के उज-
नाय के ठिये जो जमींदार ने वाको भाग-
जुजानी के ठिये पारि है, वह शय्यस दन्यासण
वहीं कर सकेगा, जिस को डिजानी का एक
इतिहास किया गया है, पर सिधे उस हाठ में,
कि, जब जमींदार का एक, उस जमीन में, उस
शय्यस को पूने गौर पर दिया गया है ।

१४६ । (१) जब मुद्दाअठेह येह क्यूठ करणा है, कि
भागजुजानी का रुपया उस के जिनमे वाको है, ठेकिन
येह उजर करणा है, कि मुद्दर को वहीं पर किसी और
गोसने शय्यस को दिया जावा चाहिये, वो अदाठण उस
हाठ को छोड़ कर, जिस में ऐसे प्यास सवव हो जिन
को वह ठियेगी, इस उजर को न सुनेगी, जब एक मुद्दा-
अठेह अदाठण में वह रुपया न जमा करे, जिस को उस
ने अदा होने के बायक क्यूठ किया है ।

(२) जब इस तरह से रुपया अदा किया जाय, वो
अदाठण उसी वक्त उस गोसने शय्यस पर ऐसे रुपये
अदा होने को इतिहास जानी करेगी ।

(३) जो वह गोसना शय्यस इतिहास पावे से गौर
महिदे के जोगर मुद्दर पर नाठिअ दायर न करे, और
रुपया अदा करने का इतिहास हुकम न पावे, वो वह
रुपया मुद्दर की दन्यासण पर उस को दे दिया जायगा ।

(४) जमीन दखे उ को नू से जो रुपया मुद्दर को
दिया जाय, उसके वसूठ करने के ठिये जो कोई शय्यस
एक नयना हो, उस एक पर इस दखे का कुछ असर नहीं
होगा ।

१५० । जब मुद्दाअठेह इस बात को क्यूठ करणा
है, कि उस के जिनमे मुद्दर का रुपया भागजुजानी की
निसवण वाको है, पर येह उजर करणा है, कि दारा

जो रुपया गोसने
शय्यस को बाजिव-
उठ अदा क्यूठ किया
जाय उस को अदाठण
में अदा करणा ।

अदाठण में उस रुपये
का अदा करणा जो
जमींदार को अदा

जनने के साथक जन्म
लिया जाय ।

लिये हुए लुपये की गारह अदा लिये जाने साथक लुपये
से जेवादे है, तो अदाग व्यास ऐसे सबवों की हाग की
कोड़ कर जिन की बर विप्रेगी, उस उजान के सुनने से
इकान कनेगी, जब एक मुहदाअठेह अदाग में बर लुपया
न दाखिल कने, जिस की उसने अदा होने के साथक जन्म
लिया है ।

लुपये के किसी हिस्से
के अदा जनने की शर्त ।

१५१ । जब मुहदाअठेह की इस से पिछली दो दसों में
से किसी एक की नू से लुपया अदाग में अदा करना चाहिए,
जो अदाग समझे कि ऐसा हुकम देने के लिये सबव काबो
है, तो बर मुहदाअठेह के उजान की उस बरक सुन सकगी
है, कि जब बर अदाग में उस लुपये का ऐसा हिस्सा अदा
कने, जिस के लिये अदाग हुकम है ।

अदाग नसीद देगी ।

१५२ । जब मुहदाअठेह अदाग में लुपया उजान वगैरह दुई
दसों में से किसी की नू से अदा कने, तो अदाग मुहदा-
अठेह की नसीद देगी, और ऐसी दो दुई नसीद उसी गारह
से और उस हद तक दाखिल-पूरी का काम देगी, कि
जोया बर नसीद मुहदा के या तीसरे शपुस ने दी थी ।

मादगुजानो के मुहदाओं
में अपील ।

१५३ । मादगुजानो बसूठ जनने के लिये प्रतीदान जो
नामिश दाखल करना है, उस की पहली लुपू में या अपील
में जो डिजानी या हुकम दिया जाय, उस की अपील आगे
वगैरह दुई हागों में नहीं हो सकेगी ।

(अ) जब डिजानी या हुकम जिसे जज, अडिअग
जज, या सवाडिनेट जज, ने दिया है, और वह
लुपया जिस के लिये नामिश की गई है, के
लुपये से जेवादे नहीं है—या

(ब) डिजानी या हुकम किसी ऐसे और अदागों
अकलन ने दिया है, जिस की मौकत गारनमेंन्ट के
इस दस की नू से शपुसियात नामिश दिया है—
और वह लुपया जिस के लिये नामिश की गई
है पर्याप्त लुपये से जेवादे नहीं है,

५४ किन्तु इस हाग में अपील माग, कि वह
हाग में से किसी हाग में डिजानी या हुकम दिये
जाने के बिना करना है, जो डिजानी के किसी

या जमीन के किसी छावने की निरूपण है, जिस पर दोनों धनीक का दावा एक दूसरे के वरिष्ठता है, या आसामी की माओजुगानी बढ़ाने या बढाने के एक का निरूपण करना है, या माओजुगानी के उस दावा का निरूपण जो आसामी को साधना देना चाहिये.

वस्तुतः के उस दावा में जब जितने जगह यह समझे कि अदातरी अङ्गुली ऐसा स्थितिमान काम में लाया है, जो आरिज की नू से उस की नहीं दिया गया है, या ऐसा दिया हुआ स्थितिमान काम में नहीं लाया है, या अपने स्थितिमान काम में दावे में आरिज के वरिष्ठता, या मानी वे-जावगानी के साथ अमल किया है, तो वह ऐसे मुकद्दमे की निरूपण मंगा सकता है, जिस में उस अदातरी अङ्गुली ने जैसा कि जेपन कहा गया है, ऐसी डिग्री या हुकूम दिया है, जिस के विषे यह दृष्टा काम में आ सकता है; और वह जितने जगह ऐसा हुकूम दे सकता है जैसा वह मुनासिब समझे ।

१५४ । माओजुगानी बढ़ाने के विषे इस ऐक्ट की नू से जो डिग्री, जेगो के वनस के पहले आउ महीनों के मोहन दावन किसे हुए मुकद्दमे में हो गई है, अमूमन आवे-बाठे जेगो के साठ के शुनू में गामोठ की जायगी, और जो जेगो के वनस के पिछले यान महीनों में दावन किसे हुए मुकद्दमे में हो गई है, तो आश्चर्य जेगो के साठ के पीछे दूसरे वनस के शुनू में गामोठ की जायगी; पर इस दृष्टे में कोई ऐसी दाग नहीं है, जो अदातरी को वसवव प्यास ब्रणूहाण के, ऐसी डिग्री की गामोठ के विषे कोई और पीछे की गानीय मुकद्दम करने से नोके ।

जिस गानीय से माओ-जुगानी बढ़ाने की डिग्री का असन होगा ।

१५५ । (१) आसामी की वेदपुत्री के विषे इस पुनर्थाद पर ।

जवगो निर्वर्तयण का १०५५ ।

(२) कि वह जमीन को इस तरह काम में लाया है, जो

उस का जोग के काम के विषे निरूपण को बन देगी

है-या

(३) उस ने ऐसी गति गोड़ी है जिस के गोड़ने पर,

उस की-जान को शरण को नू में, जो उस

के और जर्मोदान के दानियाल में हुआ है वह वे-द्वय शिक्षा जा सकता है ।

वाकिस नहीं दायन की जायगी पर उस हाठ में, कि जो जर्मोदान दे रहा था हुए तीन पर आसामी पर ऐसी शक्ति गामोद की है, जिस में उस वेजा इस्तिमाद या शर्ग गोड़वे का निकल है, जिस के धिये वाकिस की गई है, और जहाँ इस्तिमाद वेजा या शर्ग के गोड़वे का शोण हो सकता है, तो आसामी को उस की गदवीन करने के धिये कह है और हर हाठ में उस इस्तिमाद वेजा या शर्ग गोड़वे के धिये भाकूद हरजा मांजा है, और आसामी वे मुनासिब वरुण के अवन ऐसा नहीं शिक्षा, जैसा कि जर्मोदान चाहता था ।

(२) उस डिजानी में जो जर्मोदान के हक में किसी ऐसे मुकदमे में हो जाए, हरजे का वह गदाव धिया नहो, जो मुदर की वेजा इस्तिमाद या शर्ग गोड़वे के धिये दिया जायगा, और यह भी कि अदावत की नाय में वह वेजा इस्तिमाद या शर्ग गोड़वा शोण किये जाने लायक है या नहीं, और उस की नू से एक वरुण रहनाया जायगा जिस के अवन मुदवाअवेह याहे तो वह रुपया मुदर की अदा करने, और जहाँ वह वेजा इस्तिमाद या शर्ग गोड़वा शोण किये जाने लायक रहनाया गया है, उस का शोण करने ।

(३) अदावत वरुण वरुण पर प्यास अद्यों के धिये उस वरुण को बढ़ा दे सकती है, जो उसवे जमीने दहे (२) की नू से रहनाया था ।

(४) अगल मुदवाअवेह उस वरुण या बढ़ाये हुए वरुण के अवन, जो अदावत वे इस हजे की नू से रहनाया है, वह हरजे का रुपया अदा करने जो डिजानी में मुदर है और जहाँ वेजा इस्तिमाद या शर्ग गोड़वा अदावत का गनय से अदावत पगोन रहनाया गया है, उस वेजा इस्तिमाद या शर्ग गोड़वे का अदावत अदावत के प्यास प्याह करे, तो डिजानी गामोद नही हो जायगी ।

१५६। श्रीगे वगाये हुए कायदे जोग से वे-द्वेषी किये हुए हन नश्यत को हाठग में अमठ में आवेगी।

(अ) जब नश्यत ने वे-द्वेषी को गानीय के पहले उस जमीन में जो जोग में शामिल है उसमें ठगार है, या कुछ बोया है, तो उस को यह कहें होगा कि जमीन को मज्जा के मुर्गायक उस जमीन पर दबो नये, और उस को रकड़गा करने, या जमीन से उसमें के ठिये उगना दाम ठे, जिनका वे-द्वेषी को डिजनी जानी कनदे-वादी अहाठग ने गजगीन किया है।

(ब) जब नश्यत ने वे-द्वेषी को गानीय के पहले किसी जमीन को, जो उस की जोग में शामिल है, बोने के ठिये गस्थान किया है पर उस जमीन में कोई उसमें नहीं बोई या ठगार है, तो वह जमीन से पूंजी और मिहल का दाम जो उसने जमीन को इस तरह गस्थान कनदे में पुरख किया है, जैसा वे-द्वेषी को डिजनी जानी कनदे-वादी अहाठग गस्थानी करने, मैं गजगीन सूद के जो उस दाम पर रकड़गा हुआ है, पावे का एक नयेगा।

(स) पर नश्यत किसी जमीन पर दबो नये, या उस को गस्थान इस दहे की नू से कुछ रुपया पावे का एक उस हाठग में न नयेगा, कि जब उस ने वे-द्वेषी को कान-नवाई जमीन को गनद से गुनु रीदे के पीछे, उस गजह के दसगून के वनस्थिता, जमीन को जोगाया गस्थान किया है।

(द) जो जमीन इस दहे की नू से नश्यत को जमीन का कबला नये दे, तो नश्यत जमीन को उस दहे के ठिये जिस के कानवे उस को दबो नये की रजगीन मिठी है, उस जमीन को गस्थान कनदे की कबले में नये के ठिये, इसी मागुजानी होगा जिस को वे-द्वेषी को डिजनी जानी कनदे-वादी अहाठग गस्थान करने।

वे-द्वेषी किये हुए नश्यत के एक उसमें और उस जमीन को गस्थान जो बोने के ठिये गस्थान की गई है।

वे-द्वयो के एवम्
 प्राणिम माणुष्यानी
 मुक्तये कने का
 अद्वय का स्मृतिधान।

प्रमोद नयने के अह-
 शब्द गजनीय कने के
 विषे दृष्टास्य।

१५७। जय मुहूर्त किसी वेदा दृष्ट कने-वाले की
 वे-द्वयो के विषे गतिश कने है, गो वह अज्ञान मुक्तिय
 समझे, उस की एवम् में इस जाने की दृष्टास्य कने सत्ता
 है, कि मुहूर्तवे के उस प्रमोद के नयने के विषे
 ऐसी प्राणिम माणुष्यानी अद्व कने का हुक्म दिया जाय,
 जो अद्वय गजनीय कने, और नव अद्वय ऐसा याता
 दे सकगी है।

१५८। (१) वह अद्वय जो प्रमोद के कवणे का
 मुहूर्तमा सुसत् कने का स्मृतिधान नयने है, प्रमोदानी या
 प्रमोद के आसामी की दृष्टास्य पन आगे वगैरे हुई सब वगैरे,
 या उन में से किसी का गच्छिआ कने सकगी है—जैसा कि

(अ) प्रमोद का मौका, नकवा, और सत्तह।

(व) उस के आसामी का नाम और वधान (जो
 कोई हो)।

(स) वह किस दर्जे का नश्य है, याहि वह दृ-
 मियाणी हकदान या सत्तह मुक्तये पन जो
 नयने-वाला नश्य, दृष्टकान नश्य, और
 दृष्टकान नश्य; या सिक्तमी नश्य है, और
 अज्ञान वह दृमियाणी हकदान है, गो स्मृति-
 मनीनी हकदान दृमियाणी है या नहीं, और
 जय एक वह दृमियाणी हक नयेगा, उस की
 माणुष्यानी वगैरे जा सकेगी या नहीं।

(द) माणुष्यानी जो वह दृष्टास्य कने के वक्तव्य अद्व
 कने है।

(२) अज्ञान अद्वय की नाय में, रन में से कोई वगैरे
 गहकीका सनप्रमोद के वगैरे प्राणिम प्यार नहीं गजनीय
 की जा सकगी, गो अद्वय हुक्म दे सकगी है, कि
 आर्चन कान-नवार्च दीवानी के वाव रप की नू से, ऐसा
 अक्षय माठ गहकीका सनप्रमोद कने, जिस की ठेकठ
 गजनीय इस काम के विषे, उसी आर्चन की दृष्टे वदर के
 मुक्तिय वगैरे हुए कपदे की नू से स्मृतिधान दे।

(३) इस दृष्टे की नू से की हुई दृष्टास्य पन जो
 हुक्म दिया जाय, वह डिजानी का अक्षय नयेगा, और उ-
 का अपोठ गो उसी गह हो अयेगा जैसे डिजानी का।

यौदह्यां वाव ।

वाक्को माठगुजानी को डिजारी जानी का बीठाम ।

रपट ॥ जब कोई दनमियावो हक या जोग उस को वाक्को माठगुजानी को रजनाय डिजारी में बीठाम किया जाय, या प्यनीदान उन हकों को छोड़ कर जो इस वाव में वये हुए हक कानन दिये गये हैं, उस को प्यनीद्या, पर उस को रपगियान होजा कि उन हकों को नद करने, जो इस वाव में दैन कहलाते हैं, पर शां येह है कि—

दैन को नद करने का आम रपगियान प्यनीदान का ।

(अ) नजिस्ती किया हुआ और रशगिहान दिया हुआ दैन, हसब मनशा इस वाव के, इस गनह नद नहीं किया जायगा, सिवाय उस हाठग के, जो इस के पीछे उस के ठिये वगारि गई हैं ।

(ब) नद करने का रपगियान उस गनह काम में ठाया जायगा, जैसा इस वाव में वगारा गया है ।

रद ॥ इस वाव को मनशा के मुगाविक, नीये ठिये हुए वये हुए हक । हक वयाह हुए हक समझे जायंगे ।

(अ) कोई दनूवी हक जो दवाभो वगद-ओ-वसग के वरग से यदा आया है ।

(ब) कोई दनूवी हक जो ऐसे वगद-ओ-वसग की कान-नवादि में कि भव जानी है उस वगद-ओ-वसग को मियाह के ठिये, मुकनन माठगुजानी पर नया हुआ हक दनमियावो प्यनीठ किया गया है ।

(स) ऐसी जमीन का पट्टा जिस पर नहते के घन, कानप्यावे या और पक्को इमानते वगारि गई हैं, या बाग, गाठाव, गहन परसगिशाह या मसान या गीनिस्तान वगार गए हैं ।

(द) कोई हक दपठ ।

(य) गीन दपठकान नयग का उस माठगुजान पर पाय वनस गक जमीन नयवे का हक, जो मदाठग वे वाव द को नू से उहनाया है, या मइसन माठगे वावर को नू से मुकनन किया है ।

(इ) कोई हक जो किसी दपठकान नयग की, ऐसी माठगुजानी पर जोर नयवे के ठिये दिया

गया है, जो उस वृक्ष का जिन और मुनासिब
समझी जागे थी, कि जब वह हक दिया गया
था; और

(७) कोई हक या छापड़ा जिस के पैदा करने के
दिये उस प्रमोदान ने, जिस की दनप्यास पर
दनमियागी हक या जोग नोठाम होगी है, या
उस के पहले हक नब्बे-बाठे ने, उस वृक्ष
के आसामी की किसी गहरीन की नू से सके
इजाजत दी है ।

देन और नजिस्ट्री किये
हुए और इंसगिहान दिये
हुए देन के भावे ।

१६१ । इस बाव के मनागिव के दिये ।

(अ) देन के ठगुण से, जब वह जमीन नब्बे की,
निसवण इंसगिमाठ किया जाय, कोई दाना
सिकमी नश्यन का हक, हक आसारेस या
आनाम (रजमेवुट) या कोई और हक या छापड़ा
समझा जागा है, जो आसामी ने अपनी दनमियागी
हक या जोग पर कायम किया है, या जो उस के
छापड़े की घटागा है, और ऐसा वयाया हुआ
हक नहीं है जो पिछले दश में बनाया गया है ।

(व) नजिस्ट्री और मुसगहिन किये हुए देन से, जब
वह ऐसे दनमियागी हक या जोग के दिये
इंसगिमाठ किया जाय, जो बाकी माठगुजारी
के डिजारी जानी में नोठाम किया गया या
नोठाम होवे के बायक है, ऐसा देन समझ
जागा है, कि ऐसे नजिस्ट्री किये हुए दनमियागी
की नू से पैदा किया गया है, जिस की एक नब्बे
माठगुजारी बाकी पड़ने के कम से कम गीन
भरीने पड़ते, या जो बनाये हुए गीन से प्रमोदान
पर गामोव करार जर्द है ।

दनमियागी हक या
जोग के नोठाम की
दनप्यास ।

१६२ । जब किसी दनमियागी हक या जोग की बाकी
माठगुजारी के दिये डिजारी दी गई है, और डिजारी
दान से नश्यन, आरंभ करान-नवासे दीजारी की नू से
नोठाम डिजारी या जोग की प्रवर्ग और नोठाम के
दिये दनप्यास करार है, तो वह एक ऐसा नकसा है

કનેગા, ખિસ મેં ઉસ પાંદે મહાઇ ઓન ગાંધ કે નામ નહેગે, ખિસ મેં ઉસ દનમિયાનો હક યા જોગ કો ખમોલ વાકે હે, ઓન ઉસ કો સામાવા માછાગુજારો તો મુલદનાજ નહેગે, ઓન કુઇ નુપયે કો ગાંધ જો ડિગારો કો નૂ સે વસૂઇ કો ખાયગી ।

૧૯૩૧ (૧) વાલ્લખૂદ ઉસ કે જો આરિવ કાન-નકારિ દોલાવો મેં ઠિપ્પાં હે, જવ ડિગારો-દાન પિછગો દશ્યે મેં વગારિ હુર દનખાસુગ કરે, તો અદાઇ જો વ્રહ ઉસો આરિવ કો દશ્યે રજપ કો નૂ સે દનખાસુગ મલખૂત કરે, ઓન ડિગારો ખારીં કા હુકમ હે, આરિવ કાન-નકારિ દોલાવો કો દશ્યે રજ, કે મુગાવિક, વીઠામો અગિહાન ઓન ખવગો કા હુકમ દક સાથ દેગી ।

ખવગો તો હુકમ ઓન વીઠામો અગિહાન દક સાથ ખાનો હોગે ।

(૨) અગિહાન મેં ઉવ સવ ગથસીવોં કા વયાવ નહેગા જો આરિવ મખજૂના વાઠા કો દશ્યે રજ, મેં વગારિ ગર હે, ઓન વીચે ઠિપ્પો હુર વાગેં તો નહેગી ।

(૩) દનમિયાનો હક યા એસે નમ્યગ કે જોગ કો મહાન મે, જો ગનહ મુકર્તન પર ખમોલ નખા દે, ધેન કિ વ્રહ દનમિયાનો હક યા જોગ પરો નજિગરો ઓન મુશગલિત કિયે હુદ દેવ કે ગાંધે હકન વીઠામ પર ચહાયા ખાયગા, ઓન જો વંદા હુમા નુપેયા ખનડિગારો ઓન ખુદયે કે વંદા કરવે કે ઠિપેં કાફી હે, તો ઉસ દેવ કે ગાંધે દોલન વેચા ખાયગા, ઓન જો ન હે, તો ડિગારોદાન કો એનો ખ્યાલિ પન નિન્ના કે વ પિછગે નિ ખિસ કો ડીક અગિહા દે હ-ગી, દેવ કો ન-કરવે કે અગિહાન કે માન વીઠામ નિયા ખાયગા, ઓન

(૪) વાલ્લખૂદ કો ખાંધ કો મહાન મે, જો, દેવ કે વંદા કે ન-કરવે કે અગિહાન કે કે ર-ગી

૧૯૩૧ અગિહાન કાર્યકર્તા કા હુકમે વંદા કે દેવે રજ કે નૂ કે વાગે હે, તે ન કે મુશગલિત નહેગે, રજ કે દક વગરે રજ દનમિયાન નકારે હોગે, તો નિન્ના વાંધે દનમિયાન વંદા કે વંદા કે રજ

हुआ है उगाहन मसहूर किया जायगा, और इस तरह से भी मुशगहिन किया जायगा, जैसा ठीकठा अवलोकने पर ब्रह्म ब्रह्म पर उस काम के विषे हुकम है ।

(४) वावजूद उस के जो जपन वगैरे हुई और की दृष्टे २८ में विषया हो, मध्यम की पहलीरी शशासन के वीर वीराम न होगा, जब तक कम से कम पौंस दिन उस गरीब से न गुजर जाय कि जब शशासन की वक्तव्य उस दनमियानी हक या जोग की जमीन पर उगाई गई थी, जिस के वीराम का हुकम हुआ था ।

नजिस्ती की हुई और मुशगहिन दैन को वाज नथ जन दनमियानी हक या जोग का वीराम और उस की गत्तीन ।

१६४ । (१) जब किसी दनमियानी हक या ऐसी जोग के वीराम का शशासन, जो शनह मुकूनन पर नथी गई है, पिछले दृष्टे की नू से हिया गया है, तो वह नजिस्ती की हुई और मुशगहिन दैन के पावे होकर वीराम पर अढ़ाई जायगी, और जब वोठा हुआ जुपया जन डिजारी और नागिसे का पनया, मै पनया वीराम के विषे काशी हो, तो वह दनमियानी हक या जोग दैन की जिम्मेदारी के साथ वेया जायगा ।

(२) इस दृष्टे की नू से किये हुए वीराम में, पुरीदान उस गौन पर जो दृष्टे १६३ में वगाया गया है पर किसी और गनह से नहीं, दनमियानी हक या जोग के ऐसे दैन को नह जन सकगा है, जो नजिस्ती की हुई और मुशगहिन दैन नहीं है ।

दैन को नह जनने के श्पगियान के साथ दनमियानी हक या जोग का वीराम और दैन को गत्तीन ।

१६५ । (१) जो किसी दनमियानी हक या शनह मुकूनन पर नथी हुई जोग के विषे वोठा हुआ जुपया, जो पिछले दृष्टे की नू से वीराम पर अढ़ाया गया है, उस हद तक न पहुँचे, कि जन डिजारी और जपन वगाये हुए पनये के बहा जनने के विषे काशी हो, और जो डिजारीदान उस ब्रह्म दनमियान करने, कि दनमियानी हक या जोग दैन नह जनने के श्पगियान के साथ वीराम किया जाय, तो वीराम जनने-वाला बहमन वीराम मुगनो नयेगा, और दृष्टे २८८ बहमन जान-नबारे दिवानी की नू से, नया शशासन श्प मजदूर का जानी करेगा, कि वह दनमियानी हक या जोग कोदान पर अढ़ाई जायगी, और दैन नह जनने के श्पगियान के साथ उस में वगाये हुए ऐसे बहमन दैन की

वेथी जायगी, जो मुठगरी करने की गरीब के पोछे पल्लव दिन से कम या गीस दिन से ज्यादा न होना; और उस दिन वह दमियावी हक या जोग नोठाम की जायगी, और सब दिन नह करने के श्रमियाय के साथ-वेथी जायगी ।

(२) इस दृष्टि की नू से किये हुए नोठाम में, पुरोदान दृष्टि रदज में वगाये हुए गौन से, पन और किसी गनह से नहीं, उस दमियावी हक या जोग के किसी दिन को नह कर सकता है ।

रद १ (१) जब दृष्टि रदज के मुगाविक किसी दृष्टि की जोग का नोठामो श्रमिहान दिया गया है, तो वह दिन नह करने के श्रमियाय के साथ नोठाम की जायगी ।

(२) इस दृष्टि के मुगाविक जो नोठाम होना है, उस में पुरोदान इस से अगे आदे-बागे दृष्टि में वगाये हुए गौन पन, ठेकन और किसी गनह से नहीं, जोग के दिन को नह कर सकता है ।

दिन को नह करने के श्रमियाय के साथ दृष्टि की जोग का नोठाम और उस की गारो ।

रद १ (१) पुरोदान जो किसी पिछरी दृष्टि की नू से दिन नह करने का श्रमियाय नयना है, और उस को नह करना चाहना है, नोठाम की गरीब या दिन की श्रमिहान पहले पावे की गरीब, इन में से जो पिछरी हो, उसी दिन से एक वनस के गीगन कठजन के पास गियी हुई दमियायन इस मजमून की पेस कर सकता है, कि वह श्रमजन दिन देवे-बागे पन एक ऐसा श्रमिहान जानी करे, कि दिन नह किया गया है ।

पिछरी दृष्टि की नू से दिन को नह करने को कान-नयन ।

(२) ऐसा ही दमियायन के साथ श्रमिहान जानी करने के ठिये ऐसा दोस दमिष्ठ करना चाहिये, जो नैवेनिक बोर्ड उस के ठिये मुकनन करे ।

(३) जब कठजन के पास श्रमिहान जानी करने के ठिये दमियायन इस दृष्टि में वगाये हुए गौन पन की जाय, तो वह उस के मुगाविक श्रमिहान जानी करेगा, और राजनाय श्रमिहान की गरीब से दिन मुकनन बनहा जायगा ।

(४) जब कोई दमियावी हक या जोग बाकी आठ-गुणारी की डिजारी जानी में नोठाम हो गई है और दृष्टि

(व) इस के पीछे डिग्रीदान को वह रुपया बहा किया जायगा, जो उस को उस डिग्री को नू से मिलना चाहिये, जिस की रजनाय में बीराम किया गया था ।

(स) जब रुपयों को देकर बगान कुछ बीन रुपया बचे, तो उस में से डिग्रीदान को ऐसी माठ-गुणानी दी जायगी, जो उस दरमियानी हक या जोर की निश्चय बागिश्त बायन करने के दिन से, बीराम के दिन तक बहा की जाने लायक हो ।

(ए) कठाल (स) में वगैरह कुछ माठगुणानी बहा करने के बाद कुछ बीन बचा हुआ रुपया हो, तो बीराम की मजदूरी से ही भविष्य गुणनने पर, मध्यम डिग्री की दरम्यास्त पर उस को दिया जायगा ।

(२) बगान मध्यम डिग्री घेर एगनाज करने, कि डिग्री दान को माठगुणानी को रुपया कठाल (स) की नू से मिलने का कुछ हक नहीं है, तो बदायत उस हाउड़े का गसथिया करनेगी, बीन वह बैसठा डिग्री का जोन नयेगा ।

१७० । (१) बाईन कान-नबाई दीवानों की दखे २७८ से २८० तक (दोनों शामिल) उस दरमियानी हक या जोर के ठिये काम में नहीं लाई जायगी, जो बाकी माठगुणानी की डिग्री जानो में जलन की गई है ।

(२) जब ऐसी डिग्री की रजनाय में किसी दरमियानी हक या जोर के बीराम का हकम हुआ है, तो वह दरमियानी हक या जोर जलनी से निहाई नहीं पावेगा पर सिर्फ उस हाउर में, कि जब बीराम बगर हादे के पहले जब डिग्री बीन मुकदमे का बयनया बीन बीराम का बयनया बदायत में दायित किया जाय, या डिग्रीदान दरमियानी हक या जोर की निहाई के ठिये, इस बुदबाद पर दरम्यास्त करने, कि डिग्री का रुपया बदायत के बाहन बसुठ हो गया है ।

दरमियानी हक या जोर जलनी से सिधं उस हाउर में निहाई पावेगा कि जानडिगानी में बयान बदायत में दायित होगा या जब कि डिग्रीदान बसुठो कूठो करेगा ।

(३) मध्यम या शीन की री शय्य जो दानियाली हू या जोग में ऐसा हू नय्या है, जो नोठाम से नर हवे ठायक है, इस दूरे की नू से मदाठ में नुपया वर जन सक्तता है ।

नोठाम भौकूठ नय्ये के ठिये मदाठ में मदा किया हुआ नुपया बाण हाठों में दानियाली हू या जोग पर जन नेह हागा ।

१७१। (१) जब की री शय्य जो ऐसे दानियाली हू या जोग में जिस का नोठामी रशगहन इस वाव की नू से जानी हुआ है, ऐसा हू नय्या है, कि वह नोठाम होवे पर नर हो जायगा, मदाठ में नोठाम भौकूठ नय्ये के ठिये जनूरी नुपया मदा जनता है-गो

(२) जो नुपया उस वे इस गीन पर दिया है, वह ऐसा हू समझ जायगा जिस पर वानर नुपये सैकड़े साठाना सुद यड़ेगा, गीन जिस की हियाजग के ठिये वह दानियाली हू या जोग उस के पास मक्तूठ समझी जायगी ।

(३) इस का नेह, बाकी माठगुजारी के दावे को छोड़ जन, दानियाली हू या जोग पर, गीन सब दावों से वक्तन समझ जायगा-गीन

(४) वह उस जोग या दानियाली हू पर वगीन बासामी के मुनगिन के लवजा नय्ये का मुसगदि हूगा, गीन तब तब उस पर लवजा नय्येगा, कि जब तब वह हू में सुद के मदा न किया जाय ।

(५) इस दूरे में जो कुछ दिया है वह उम हाठ पर वक्तन नती जयेगा, जिस के ठिये ऐसा मध्यम हू नय्या है ।

इस का नोठाम जो नू से मदाठ में मदा किया हुआ नुपया बाण हाठों में दानियाली हू या जोग पर जन नेह हागा ।

१७२। जब किसी माठगुजारी के माठगुजारी दावे न करके को प्रकट में, किसी दानियाली हू या जोग का नोठामी रशगहन, इस वाव की नू से मदा नय्ये हू नती में जानी किया जाय, गीन की री बासामी, जिस का एक नोठाम हू है वह वक्तन हू जायगा, मदाठ में नुपया मदाठ में, नू से के ठिये दानियाली हू या जोग के वक्तन हू, कि जब तब वह हू में सुद के मदा न किया जाय ।

उस को कुछ हिस्सा उस भाग्युज्जारी से मुजरा कर सकता है, जो उस को अपने प्रमीदान के यहाँ बँदा करेगा हो, और वह प्रमीदान मजान बाँकीदान नहीं है, तो उसी तरह से ऐसे भिन्न-भिन्न हुए रूपों को उस भाग्युज्जारी से मुजरा कर सकता है, जो उस के प्रमीदान को देने लायक है, और इसी तरह से जब तक कि बाँकीदान तक न पहुँचे ।

१७३। (१) बाँकीदान उस के जो आर्थिक कानून-न्याय होना ही हो, उसे रद्द, में दिया है, उस डिग्री का न्याय-न्याय जिस को राजनाय में कोई दानमियाही हूँ या जोर रख वाव को नू से नोठाम किया जाया है, वही राजनाय बँदाए के, उस दानमियाही हूँ या जोर के विषे डाँक वोठ सकता है, या उस को पुरोद सकता है ।

डिग्रीदान वो डाँक वोठ सकता है, पन मध्यम नहीं सकता ।

(२) मध्यम ऐसे दानमियाही हूँ या जोर के नोठाम में, न डाँक वोठेगा और न उस को पुरोद करेगा ।

(३) जब कोई मध्यम थाप, या किसी और शब्द के प्रानये से, ऐसे नोठाम किये हुए हूँ दानमियाही या जोर को मोठ ठेका है, तो बँदाए मजान मुनासिब समझे डिग्रीदान या किसी और शब्द को दानमियाही पन, जो नोठाम से पद्यपुत्र नया है, नोठाम मुसपनद करने का हुकम है करणी है, और दानमियाही और हुकम का पनया और दूजे दहे नोठाम करने से जो दाम में कमी हो, में पनये नोठाम होवाना, मध्यम को देना होगा ।

१७४। (१) जब कोई दानमियाही हूँ या जोर उस को बाँकी भाग्युज्जारी के विषे नोठाम को गई है, जब नोठाम होने की गरीब से गरीब दिन के भीतर किसी वक्त, मध्यम डिग्रीदान को देने के विषे, वह रूपया जो पनये के साथ डिग्री को नू से बँदा होने लायक है, और पुरोदान को देने के बाँकी, पन-समन के साथ रूपये बैकडे बनावन रूपया बँदाए में जमा करने, नोठाम नद होने के बाँकी दानमियाही है करणी है ।

नोठाम नद कर विषे मध्यम को पनया ।

(२) जो ऐसा रूपया गरीब दिन के भीतर जमा किया जाय, जो नोठाम नद करने का हुकम है, वो

क्षिपे हुए बीठाम के छिपे अमर में आवेगी ।

पर शरीर पेह है कि अज्ञान मध्यम आर्यन कान-नवाँर दीवानो को दखे उरर को नू से, अपने दनमियावी हक या जोग का बीठाम नद करने के छिपे दनप्यास्य है, गो उस को ऐसी दखे को नू से दनप्यास्य देने का हक न होगा ।

(४) आर्यन कान-नवाँर दीवानो को दखे उरर, इस वाव को नू से क्षिपे हुए किसी बीठाम के छिपे काम में नहीं आवेगी ।

देन पैदा करने-वाले
वाण दसगावेजो की
नजिस्ती ।

१८५ । वावजूद उस के जो रजिस्टर नजिस्तेस्य ऐत सन १८५५ के यौथे हिस्से में छिपा है, वह दसगावेजो जो किसी दनमियावी हक या जोग पर देन पैदा करती है, और इस ऐत के जानी होने के पहले छिपी गई है, और जिस का नजिस्ती होना जपन वगाये हुए नजिस्तेस्य ऐत को दखे १८ के मुताबिक जन्म नहीं है, इस ऐत को नू से नजिस्ती के दासगो उस हाठ में ही जावेगी, कि जब इस ऐत के जानी होने से एक वरस के भीतर, उस काम के छिपे ऐसे शपुगियान नये-वाले शयसन के पास पेश की जाय ।

जर्मोदान के पैदा देन
की शपुगिदा ।

१८६ । इन शयसन जिस वे इस ऐत की मजबूती के पहले या पीछे, ऐसे दसगावेजो को नजिस्ती की है, जो किसी दनमियावी हक या जोग के दासगो के छिपे दिया है, और उस दनमियावी हक या जोग पर देन पैदा करती है, उस दासगो या ऐसे शयसन की दप्यास्य पर जिस के हक में वह देन पैदा किया गया है, और उस को वरस से ऐसी शीघ्र गदा क्षिपे जावे पर जो ठोकर गजबमेवृ इस काम के छिपे इनावे, जर्मोदान पर उस दसगावेजो की एक बहुर इनाये हुए गीन पर गानोठ करके देन की शपुगिदा देगा ।

देन पैदा करने का
शपुगियान नये वडाया
गया ।

१८७ । इस वाव में जो कुछ छिपा है वह किसी शयसन को ऐसे देन पैदा करने का शपुगियान नहीं देगा है, जिस को वह और किसी वरस में कानून के मुताबिक पैदा नहीं कर सकता ।

पहुँचानेवाँ वाव ।

कोठकान और निवाज ।

कोठकान के छिपे
के इस ऐत के दनमि
के देकर करने पर

१८८ । (१) इस ऐत के मजबूती के पहले या पीछे जर्मोदान और दासगो के दनमियान जो कोठकान निवाज पर उरर में करे देना वाव नहीं देगा-को

कोठकान के हक इनाये का शपुगिदा करने के
छिपे देना-वा

- (व) कौठ-कृत्ता को पानीय के वक्ता जो हृत् दण्ड
 किसी को हासित था, उस को ठे ठेगी—या
- (स) प्रमोदान को यह हृत् देगी कि आसामी को इस
 ऐज की शरणां की प्रिये के अठावे, और
 किसी गीत पर वे-दण्ड करने—या
- (द) आसामी इस ऐज की नू से प्रमोद को प्रियाकर
 वढ़ावे, और उस के प्रिये गठाये पावे का
 जो हृत् नयना है, उस हृत् को ठे ठे या
 महदूद करने ।

(२) ऐसे किसी कौठ-कृत्ता में जो प्रमोदान और
 आसामी के दमियान, पण्डनहर्षों धूर्त सन १८८० के बाद
 ११ इस ऐज की मगधूरी के पहले लिखा जाय, ऐसी कोई
 ११ नहीं होगी जो नयन को इस ऐज की नू से प्रमोद
 हृत् दण्ड हासित करने से नोके ।

(३) ऐसे किसी कौठ-कृत्ता में जो प्रमोदान और
 आसामी के बीच में, इस ऐज की मगधूरी के पीछे लिखा
 जाय, कोई ऐसी वाग नहीं होगी—जो

(थ) नयन को इस ऐज की नू से प्रमोद में हृत्
 दण्ड हासित करने से नोके ।

(व) इसे २३ की नू से दण्डकान नयन को प्रमोद
 स्तम्भित करने का जो हृत् दिया गया है,
 उस को ठे ठे या घटा है ।

(स) नयन इसे ८६ के मुगधिवृत् करने जो नू के
 स्तम्भित देने का जो हृत् नयना है, उस
 को ठे ठे ।

(द) आसामी को निम्नान के मुगधिवृत् नयन
 मगधिवृत् को स्तम्भित की नू से नयन
 किसी गीत में, जो हृत् स्तम्भित करने का
 नयना है, उस को ठे ठे ।

(४) इस ऐज की शरणां के मुगधिवृत् स्तम्भित नयन
 जो निम्नान पढ़ा देने का हृत् नयना है,
 इस को ठे ठे ।

(४) इसे उट या पूर की नू से भाग्यजानी वशने के वासने नश्रण जो दनपासन देवे का हक नयना है, उस को ठे ठे-या

(५) इसे ४० के मुणविक भाग्यजानी वदने के ठिये, जो दनपासन देवे का हक जमींदार या आसामी नयना है, उस को ठेठे।

(६) इसे ६७ की उन शनगों पर असन पहुंया जो वाकी भाग्यजानी पर दिये जाने वास्त सूर से जिसवग नयनी है।

पर शन येह है कि,—

(१) इस दसे में जो कुछ ठिया है, वह उस पट्टे की शनगों पर असन नहीं पहुंयावेगा, जो बेक गीयन से पड़नी जमीन की आवाद करने के ठिये दिया गया है पर जब पट्टे की मिथाद बगल होने पर पट्टा नयने बाधा वाव (५) की नू से उस जमीन पर हक द्युगी हासिल करेगा, जो उस के पट्टे में है, तो उस हाठन में पट्टे में जो कुछ ठिया है, वह उस को उस हक के हासिल करने से नहीं रोकेगा।

(२) जब जमींदार ने अपने नौकनों से या अपने भाइयों से पड़नी जमीन की आवाद किया है, और पछि से उसे या उस के किसी हिस्से को नश्रण को पट्टे पर दिया है, तो इस ऐज में कोई ऐसी वाग नहीं है जो उस कौठ-कतान की शनगों पर असन करे, जिस की नू से नश्रण उस गरीब से गीस वनस गक, कि जिस दिन वह जमीन या उस का हिस्सा उस को पट्टे पट्टे पर दिया गया है, उस जमीन या उस के हिस्से पर हक द्युगी हासिल नहीं कर सकगा।

(३) इस दसे में कोई ऐसी वाग नहीं है जिस को बचन उस कौठ-कतान की शनगों पर हो, जो किसी बजारी में दोगे दिनों के ठिये जेते को कसब बोले के बाजारे किया गया है।

(४) इस ऐज में कोई ऐसी वाग नहीं है, कि जो दसवीं वदने को नश्रणी नयने में, दयानी पट्टा

दनमियाणी या भाविक की रसगमनानी मुकनरो पढ़ा
ऐसी मनुष्यो पन हेवे से नीके, जो उसके और उस के
भासाभी के बीच में इतना जायं ।

१८०।(१) इस ऐल में आहे जो कुछ दिव्या हो पन गव
नी कोर ११४१ ।

उपवर्गही यन और
दिव्या प्रमोव ।

(अ) जो मुठक के ऐसे हिस्से में जहां उपवर्गही का
निवाज जानी है, ऐसी प्रमोव नथगी है जो
उमूमन उस दसगून की नू से पढ़े पन
ही जानी है, और उस दसगून की नू से उस
वक्तव्य ही गई है—या

(व) जो उस किसम की प्रमोव नथगी है जिस को
यन या दियाना कहते हैं ।
हक द्योती नहीं हासिठ कनेगा ।

(अ) की हाठन में उस प्रमोव में जो उमूमन उपवर्गही
के दसगून की नू से नथी जानी है, और उस
वक्तव्य जो उस दसगून के मुवाविक नथी गई है—या

(व) की हाठन में यन या दियाना प्रमोव में, जब तक
वह उस प्रमोव को ठगाना वानह वनस तक
न नथे; और जब तक वह उस प्रमोव में
हक द्योती नहीं हासिठ कनेगा, उस को अपनी
जोय के ठिपे ऐसी माठगुजानी देना होगा,
कि जो उस में और उस के प्रमोदान में इतना
गई है ।

(२) वाव द ऐसे नथगी के ठिपे जो उपवर्गही के
दसगून के मुवाविक प्रमोव नथते हैं, ऐसी प्रमोव को
निसवण जिस को वह उस दसगून के मुवाविक नथते हैं,
काम में नहीं आवेगा ।

(३) कठजन प्रमोदान या भासाभी की द्योत्तम पन, या
दोबानी बहाठन से पूछे जाने पन, येह मुसलमिन कन सगना
है, कि कोर प्रमोव हसव मनसा इस दस के उस वक्तव्य से
यन या दियाना प्रमोव नहीं कहलावेगी, और जब इस
ऐल को सब मनुष्यो उस प्रमोव के ठिपे कमठ में बाँटेगी ।

आश्चर्यजनक जीवन की
श्रृंखला ।

१८२ । इस ऐज में कोई ऐसी वाप नहीं है, जो घटकों या और गौली के एक से जिसका नष्प होई हुई बाँटो पर असर पहुँचावे, या प्यास करने ऐसे गौली के हा के इन्फ्लाम या ब्रसीयन करने का इच्छियान हो, कि जो इस ऐज की भण्डूरी के पदों, ब्रसीयन की नू से या गैर किसी तरह से भण्डूरी नहीं हो सकना या

ସମସ୍ତଙ୍କୁ ମନୋନ ।

१८२ । जब कोई नरअण अपने वसगिण जमोन को उस
नरह नथपा है, कि वह नरअण के गौन से उस को नथो
हुई जोन का हिस्सा नहीं है, तो उस को वसगिण जमोन
को नथवे के मुनअणविक वागें उस जगह के हसगून या
निवाज को नू से ह्वाई जायेगी, और इस ऐन को
अगों जो नरअण को नथो हुई जमोन के ठिये बन
में आगे है, हसगून या निवाज के पावे होकर वसगिण
जमोन के ठिये नी ममठ में आयेगी ।

၂၄၂၀၁၁၁၁
 ၂၄၂၀၁၁၁၁

૧૮૭૩ ૩મ એપ્રિલ મેં એડી કોર્સ વાળ નહીં હો. જો એમ
દમગૂન, તિલાજ, યા માનૂલો હજુ પણ મસત પડ્યાં
જો ૩મ એપ્રિલ કો ગતિઓ કે વનપિણાડ નહીં હો. યા એક
નુ એ સ્ત્રોતના યા માનવ (માલે કો નુ એ) વડે યા
નહીં ગયે હો.

મિત્રાત્વે ।

[illegible]

1. 在 1949 年 10 月 1 日，即中華人民共和國成立之日，毛澤東在天安門城樓上向全國人民發表了著名的「萬籟天籟」講話，宣佈了中華人民共和國中央人民政府的成立。

सौंठहं प्रां वाव ।

गमादी ।

१८४। (१) वह मुकद्दमे अपोठ और दनप्यासन जो इस ऐज में नये हुए शिडूठ गोन में बगाये गये हैं, उस वृत्त के अन्दर जो उन के ठिये अठग अठग उस शिडूठ में मुकद्दमे किया गया है, पेश किये जायेंगे; और ऐसा ही एक मुकद्दमा या अपोठ जो ऐसे बगार् हुई मिषाद के बगले पोछे पेश किया गया है, और दनप्यासन जो दो गार् है प्यापिज किया जायगा, अगलये उस की बिसबर गमादी का उजान पेश न किया जाय ।

(२) इस दख में कोई ऐसी बाब नहीं है, जो ऐसे मुकद्दमे या अपोठ दायन करने या दनप्यासन देने के हक को सिद्ध कायम करने, कि जो अगल इस ऐज के जानी होवे के ठीक पहरे दायन किये जावे, या हो जायेंगे, वो उन पर गमादी ठगजायो ।

१८५। (१) दखे ज, प और द इन्डियन डिमिटेसन ऐज अग १८७७ ऐसे मुकद्दमे और दनप्यासन के ठिये काम में नहीं आवेंगे, जो इस से पहरे दखे में बगाये गये हैं ।

(२) इस बाब को अगलों के पाये होकर इन्डियन डिमिटेसन ऐज अग १८७७ की शर्तों, इस से पहरे दखे में मुकद्दमा या अपोठ और दनप्यासनों के ठिये काम में आवेंगे ।

गोसने शिडूठ मुकद्दमे मुकद्दमे अपोठ और दनप्यासन की गमादी ।

इन्डियन डिमिटे-
ऐज के कौन दख
ऐसे मुकद्दमे अग
पर आवद नहीं हों

सगनहं प्रां वाव ।

गिगनमा ।

अगला ।

१८६। (१) अगल कोई शयन किसी और गोन पर जो इस ऐज के, या उस वृत्त के किसी और मुनीमज पारिज के मुताबिक नहीं है ।

(२) किसी आगामी को जोग की पैदावान को हुनक करना है, या हुनक करने को कोसिम करना है—वा

(३) इस ऐज की नू से बा-जादवा कुर्तों में हुगान होता है, या जय-अद्विती से वा डिमिटेसन ऐज की नू से हुनक किये हुए नाठ को रज्ज करण है वा

(४) आगामी के हुनक या नदजो के बोन, किसी जोग के पैदावान को हुनक, अगल करने देन

पैदावान में आग
वा डिमिटेसन ऐज
वा नाठ को रज्ज

उगावे, छेपावे या और तरह से वन
मुजाहिम करना है, या करने को
करना है, तो ऐसा समझ जायगा कि
मनशा आर्द्र गणिनाग हिनद के,
मुदायिग वेजा का पुर्म किया है ।

(१) जो शय्स जमीने दसे १ में वगये हुए
के करने में, हसव मनशा (इन्डियन पिगड कोड)
मुए गणिनाग हिनद के मद्द देना है, तो ऐसा
जायगा कि उस ने हसव मनशा उस आर्द्र के मुदायि
वेजा के पुर्म में मद्द दी है ।

जमींदारों के एजेन्ट और कानपनदाण ।

कानपनदाण की मारिग
जमींदार को काम
करने को शयगियान ।

१८७ । (१) अदाग या किसी हाकिम के हुपु
हाजिर होना, दाय्यासग देना, या कोई काम करना
इस ऐज की नू से जमींदार को करना चाहिये, या
के करने का शयगियान दिया गया है, अगर अदाग
हाकिम दूसरी तरह का हुकम न दे, तो वह सब काम
एजेन्ट के ज़रिये से किया जा सकता है, जिस
जमींदार ने अपने हाथ से बिप्य कर इस काम के
शयगियान दिया है ।

(२) हन एक शयिगा-नामा जो इस ऐज की नू
जमींदार पर जानी होना या उस को देना चाहिये,
उस एजेन्ट पर जानी किया जाय या दिया जाय, जो
को जमींदार ने जैसा कि जेपन कहा गया है, उस
रजनाय भावने या छेने के बिपे शयगियान दिया है, इस
के मनागिव के बिपे बैसाही कानआमद होगा, जैसा कि
वह प्यास जमींदार पर जानी किया जायगा, या उस
दिया जायगा ।

(३) हन दसगावेज को जिस पर इस ऐज की नू
जमींदार को दसगावेज और गसदीक करना चाहिये,
दसगावेज को छोड़ कर जो एजेन्ट मुकनन करने
इस को शयगियान देने के बिपे है, जमींदार का वह
दसगावेज और गसदीक कर सकता है, जिस को उस

१८८। जब दी या जेयाहे शब्द शरीरदान प्रमोदान है गो कोई काम जो इस ऐज को नू से प्रमोदान को बनवा चाहिये, या जिस के करने का श्रुतिमान उस को दिया गया है, जानून है कि वह दोनों या सब शरीर मिठकन करने, या वह एजेक्ट करने जिस को उन दोनों या उन सबहो ने उन के ठिये काम करने का श्रुतिमान दिया है।

कायदे इस ऐज को नू से।

१८९। वोक्त गजबमेव्ट वक्त वक्त पन सत्कारी गजब में शक्तिमान व्याप कर, इस ऐज के मुआविक आगे ठियो हुई वागों के ठिये कायदे बना सकरी है।

(१) उस कान-नवार्क के शक्तिप्राम के ठिये, जिस को अक्षर माठ ऐसे काम के करने में जेगा, जो इस ऐज को नू से उस के शोके किया गया है, और गजबमेव्ट ऐसे किसी अक्षर को ऐसे कायदों को नू से आगे वगाये हुए श्रुतिमान दे सकरी है।

(अ) कोई श्रुतिमान जिस को अक्षर दीवानी मुक्तहमे को गजबोण करने में काम में आवे।

(ब) किसी प्रमोव पन जावे और पैमाश करने, सनह वनही और उस का नकशा बनाने का श्रुतिमान, और ऐसा श्रुतिमान जिस को कोई अक्षर वंशाठ सनवे ऐज सन १८७५ को नू से अमठ में ठा सकगा है-और

(स) प्रमोव की ठियाकण गजबोण करने के ठिये, उस की छसठ काठवे और उस से अवाण निकालवे, और उस की पैदावान को गौठवे का श्रुतिमान-और

(२) उस जगह जहाँ इस ऐज या किसी और ऐज को नू से श्रुतिमान नामा जानी करने के ठिये कोई गौन मुकनन नहीं किया गया है, जहाँ इस ऐज को नू से श्रुतिमान नामा जानी करने का गौन मुकनन करने के ठिये।

१९०। (१) हन हाकिम जिस को इस ऐज की किसी दमे को नू से कायदे बनाने का श्रुतिमान है, कायदे बनाने के पहले गजबोण ठिये हुये कायदों का मसौदा, एवं अयसों की श्रुतिमान के ठिये मुमकिन जेगा, जिन पन ऐसा हो

शरीरदान, प्रमोदान, शक्तिमान, और शक्तिमान के काम करने को।

कान-नवार्क अक्षर श्रुतिमान, और शक्तिमान के काम करने को।

कायदों के बनाने एवं के मुमकिन और मजबूत का कान-नवार्क

(२) मुशफहिन काना उन क़ायदों की हाज़र में जिन को मोक़द़ात ज़ावरमेनद या हार्फ़ कोट दे वनाया है, इस बात से होजा जो सनक़ान की नाय में उन शय्सों की शफ़ा के डिपे काशी हो, जो उस से पश्चिमी नयने हैं और उन क़ायदों की हाज़र में जिन को किसी और हाकिम दे वनाया है, उस गौर पर होजा जैसा उन के डिपे हुक़म दिया जाय, पर शर्त येह है कि ऐसा हर मसौदे सनक़ानी ज़ावर में द्याया जायगा ।

(३) उस मसौदे के साथ एक शफ़ाहान उस पारीय की मुवदतण कने दिया जायगा, जो मुशफहिन कने को पारीय से कम से कम एक महीने पोछे होगी, जिस दिन या जिस के पोछे उस मसौदे पर और दिया जायगा ।

(४) ऐसी मुक़रर की हुर् पारीय के पछे, उस मसौदे की निखण जो कोई शय्स कोई एतान या गणवाण पेश कने, हाकिम उस को सुनेगा और उस पर और कनेगा ।

(५) किसी क़ायदे को सनक़ानी ज़ावर में द्याया और उस के डिपे येह ठियवा कि वह इस ऐज़ को नू से वनाया गया है, इस बात को पूरा सुनू होजा कि वह वाज़ावना वना है ।

(६) इस ऐज़ को नू से वनाये हुए सब क़ायदों को बरक़ पर ऐसी मवज़ूनी के पावे हाक़, जो उन के वनावे के डिपे जानू हो, वह हाकिम जो उन के वनावे का शफ़ाहान नयना है, पारीय कनेगा या मवज़ूय कनेगा या उन में कुछ बदलेगा ।

दियाई चन्द-मो-वसगी ज़िगो के डिपे गये ।

इस में जो क़ायद
होना को निगद
उस को चन्द-मो-वसगी
के डिपे गये ।

इस में जो क़ायद हाकिमानी हुक़ की ज़माने ऐसे
मसौदे में पावे है, जिस का कती द्यानी चन्द-मो-वसगी
हुक़ा है, व इस ऐज़ में जो कुछ दिया है वह सनक़ानी
जाने के ज़माने चन्द-मो-वसगी के पुरान हुक़े पर हाकिम
को क़ायद वनाया नहीं के, ज़ावर, उस बात के क़ायद
के ज़माने को सनक़ान दे चन्द-मो-वसगी हुक़े कने या
बदल कने या इफ़्तान दिया है, चन्द-मो-वसगी की

कानून-वार्ड में उस हक को साथ-साथ मान दिया है, जिस को नू से वह जमीन प्यास और माछुजानी पर, मियाद के अगम होने के पीछे नया जा सकता है ।

१८२ । जब जमींदार पट्टा देता है या ऐसा कौठ-क़ानन करता है, जिस को नू से उस जमीन का आसामी जो इसी वन्द-ओ-वसू किया हुआ नक़्बे में नहीं है, उस जमीन को प्यास माछुजानी पर या ठा-पियाज नया सकता है, और जब वह पट्टा या कौठ क़ानन अमल में है ।

(अ) उस जमीन को जिसका सनकारी माछुजानी पहले दखे अदा करने कायक़ इतना जाय-या

(व) उस को जिसका सनकारी माछुजानी पहले अदा होने कायक़ थी, पर अब नया वन्द-ओ-वसू किया जाता है ।

तो अश्वसन माछ वावजूद उस के जो शरीकों के दनमियाज कौठ-क़ानन में दिया हो, जमींदार या आसामी को दनप्यास पर इस ऐज को सनगों के मुआयिक़ हुक़म देकर, उस जमीन के ठिपे बाजिव और मुनासिब माछुजानी मुक़नेन कर सकता है ।

यथागाह ज़ौनर के हक़ ।

१८३ । इस ऐज को वह सनगों जो वाकी माछुजानी को बसूरी के मुक़दमों से ग़अरुत नयगो है, जहाँ तक हो सके यन्तरे के हक़, वनक़न, मछरी पकड़ने के हक़, और ऐसे दूसरे हक़ को जिसका अदा होने या देने कायक़ जिस योज़ के बसूरी करने के मुक़दमों के ठिपे काम में आयेगा । उन सनगों के ठिपे बयाज कि जिन का जमींदार

पावन्द है ।

१८४ । जहाँ क़रि माछिक़ या इसानी हक़दान दन-मियाजो किसी प्यास कायदे या ग़र् के गारे होकर, अपना महाल या हक़ दनमियाजो नयगा है, तो इस ऐज में जो कुछ दिया है वह किसी ऐसे शयस को, जो उस महाल या हक़ दनमियाजो के अगहन जमीन नयगा है, ऐसे कान करने का हक़ न देता जिस से वह कायदा या ग़र् को

सनकारी ज
नया वन्द-
होने से मा
वन्देका शय

यथागाह
वनक़न

आसामी इस
नू से उन म
नहीं गोड म
जिन का
पावन्द है

प्यास ऐल्लो के ठिये
रसगिसन्या ।

प्यास ऐल्लो का वंयाणा ।

१८५ । इस ऐल्ल में जो कुछ ठिय्या है वह नीचे ठियी
हुई बागों पर कुछ असन वहीं कनेजा ।

(अ) वनद-ओ-वसन कनेदे-वाठे अशुसनों के उन रूप
गियान और कामों पर जो ऐसी आर्जन
की नू से उहनाये गये हैं, कि इस ऐल्ल को
नू से साथ साथ नई नहीं की गई है ।

(ब) किसी ऐसे ऐल्ल पर जो उन महाओं में कि
सन्कानो है, या जिनका वनद-ओ-वसन कोई
आथु वाउंस या माठ के अशुसनों के साथ
में है, माठगुजानी वसूठ कनेदे को कान-
नवाई के रगणजाम के ठिये वनाई गई है ।

(स) ऐसे आर्जन पर जो वाकी माठगुजानी सन्कान
के ठिये गोठाम की नू से जमीन नयने का
हक और देव नई होवे के मुगअवधिक है ।

(द) ऐसे किसी आर्जन पर जो सन्कानो जमा देवे-
वाठे महाओं के वठवाजे से निसवन नयनी है ।

(ध) कोई आर्जन जो पठनी की नू से जमीन नयने
के मुगअवधिक है ।

(ध) कोई और प्यास आर्जन या प्यास जगह की आर्जन
जो इस ऐल्ल की नू से सनीहन या मानन
(माने से ठाणिम आकन) नई नहीं हुआ है ।
ऐल्ल के मगठव का नसठिया ।

येह ऐल्ल उन ऐल्लो के
गावे होकर पढ़ायाया
जिस की ठमूठनट-
जवतन उजठाम कान-
ठिठ इस के पंछे
मरगून करें ।

१८६ । येह ऐल्ल ऐसे हन ऐल्ल के गावे होकर पढ़ा
याया, जिस की ठमूठनट-जवतन साहित्य वहडुन वंजाठे
अजठाम कानठिठ इस के जानो होवे के पीछे मगठून करें ।

सि ५७ प १

-(देखो दहे २१)

देखो का नद होना ।

वंगाठे की आरिण ।

नम्बर और सं १	आरिण का मजमून ।	नद होने को दहे ।
८, सं १७८३ का ।	आरिण जो उस सकांती जमा के दह साठे वगह- ओ-वसूण के काशेई को गवहोठ और गवमीम कनके शिन वाशिन कनके के छिए है, जो जमोदानों और खुद मुयुगान गवगुगुदानों और हुसने हकोको माठिकों की जमोनों से वंगाठे, चिहान और उडीसा में अद सिध जावे ठाइक है, और वह काशे उग सूवों के छिपे अठग अठग १८ वीं सिगम्वन सं १७८८, २५ वीं गीअम्वन सं १७८८ और १० वीं खनवरो सं १७८० और पिछड़ा गानोयो को जानो सिधे गये थे ।	दहे ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ८४ और ८६ ।
१२, सं १८०५ का ।	आरिण जो छिपे कठक में और पगोवे, पगसपुन, कुमाहो और, और वजानर में जो हाठ में छिपे मिदगापुन में आमिद हैं सकांती जमा के वगह-ओ-वसूण और गहसीठ के छिए है ।	दहे ७ ।
५, सं १८१२ का ।	आरिण उग में से कुछ काशेई को गवमीम कनके के छिपे, जो हाठ में सकांती जमा वसूण कनके के छिपे जानी है ।	दहे २, ३, ४, २६ और २७ ।
१८, सं १८२२ का ।	आरिण दहे २, आरिण ५, सं १८२२ का मगठव वगावे के छिए, और दहे ३ और ४ आरिण ४४ सं १७८३, और दहे ३ और ४ आरिण ५० सं १७८५ को नद कनके के छिपे, और उग का जगाह हुसने काशे वाशिन कनके के छिए ।	शुनू का शिमा जिम में मनमा और वगुगान का वगान है और दहे २ और ३ ।
११, सं १८२५ का ।	आरिण उग काशेई के वगावे के छिपे, जिम के दुगाविक रेमा जमोव के छिपे गवहोठ छिपे जापों, जि जो दया या कनदव के छिपे जावे, या उग को वाशिन के शमिद हुं है ।	कठग २, दहे ४ में कठग २ - दहे ४ में नको कि उग वगान १५ दमिदानी में ८००० १००० के की ८००० के दहे ४ में

(११२)

शिर्षक २ जानी रहा ।

वंगाध कौनसिध के आदिन ।

वर्ष और वर्ष ।	जायने का मजमूरा ।	नद होने की हद ।
६. सन १८६२	आदिन जासो गनमीम करने ऐत १० सन १८५६ (उस आदिन को गनमीम करने के ठिये जो प्रेसिडेन्सी कोर्ट-प्रिग्रियम वंगाध में भाग्युजानी वसूठ करने से निसवग नथगी है ।)	साता ऐत ।
४. सन १८६७	ऐत जासो गनमीम और गनमीम करने ऐत ६ सन १८६२ (पास लिए हुए ठगुठगुठ-गवर्नर साहिब वहादुर वंगाध १७७५ कौनसिध) और यन्त सैसों को मुसगह करने के ठिये ।	साता ऐत ।
८. सन १८६६	प्रार्थान और आसामो के दनमिधान के मुकदमों को जान-नवाह दुनुसाग करने के ठिये ऐत ।	साता ऐत ।
८. सन १८७६	वन्त-ओ-वसाग करने-वाठे अथसों के श्य-गिधान की हद उहाने और वगाने के ठिये - ५ ।	साता ऐत ।

शिर्षक २ जानी रहा ।

गवर्नर-जेमनेठ आदिन वहादुर १७७५ कौनसिध के ऐत ।

वर्ष और वर्ष ।	जायने का मजमूरा ।	नद होने की हद ।
-------------------	-------------------	-----------------

१८५६ ऐत ६ सन गनमीम करने उस आदिन को साता ऐत ।

जो प्रेसिडेन्सी कोर्ट प्रिग्रियम वंगाध में ।

नसीद का नमूना।

जोग की पद्यसौं (जमींदार का हिस्सा)।

- १। नसीद का सिद्धिदान नमन
- २। महोदय ; गति ; याद
- ३। यासाओ का नाम , का देहा
- ४। पद्यसौ जोग

नकदी बोधा — भाग्यजारी दुपेथा —
माउरी बोधा — मन ; या दुपेथा —

जगत्तन दुपेथे —
वज्रत्तन दुपेथे —
शुद्धत्तन दुपेथे —

नोड सेस दुपेथे
सकरी रोमान सेस दुपेथे

प। जमींदार या रज्जुगियान पाये हुए एजेन्ट, का इसगण्य

दहे पप यंगीठे की जमीन नपदे की आँख सन रटप में थोड़ी ठिथी हुई थी है।
(१) जब कोई यासाओ भाग्यजारी के विषये कुछ दुपेथा अदा करना है, तो, वह वनस या वनस की वनस वना सकता है, जिस में वह उस दुपेथे की जमा करना चाहता है, और वह अदा किया हुआ दुपेथा उसी वनस की वनस से जमा किया जायगा, जिस जमींदार मिलासिव समझे।
(२) जो वह ऐसा न करे तो, अदा किया हुआ दुपेथा उसे वनस की वनस से जमा किया जायगा, जिस जमींदार मिलासिव समझे।

नसीद का नमूना।

जोग की पद्यसौं (यासाओ का हिस्सा)।

- १। नसीद का सिद्धिदान नमन
- २। महोदय ; गति ; याद
- ३। यासाओ का नाम , का देहा
- ४। पद्यसौ जोग

नकदी बोधा — भाग्यजारी दुपेथा —
माउरी बोधा — मन ; या दुपेथा —

जगत्तन दुपेथे —
वज्रत्तन दुपेथे —
शुद्धत्तन दुपेथे —

नोड सेस दुपेथे
सकरी रोमान सेस दुपेथे

प। जमींदार या रज्जुगियान पाये हुए एजेन्ट, का इसगण्य

दहे पप यंगीठे की जमीन नपदे की आँख सन रटप में थोड़ी ठिथी हुई थी है।
(१) जब कोई यासाओ भाग्यजारी के विषये कुछ दुपेथा अदा करना है, तो, वह वनस या वनस की वनस वना सकता है, जिस में वह उस दुपेथे की जमा करना चाहता है, और वह अदा किया हुआ दुपेथा उसी वनस की वनस से जमा किया जायगा, जिस जमींदार मिलासिव समझे।
(२) जो वह ऐसा न करे तो, अदा किया हुआ दुपेथा उसे वनस की वनस से जमा किया जायगा, जिस जमींदार मिलासिव समझे।

गद्दा करने को एकस्रोत (जम्मादार का दृष्टि) ।

[illegible]

गि.सू. २-४सीट और हिसाब

[illegible]

१ । अथ					
२ । आसाम्रो का नाम					
३ । जोए को गृहस्थि. — (रक्का, भाउजोणोरो वडोतह)					
	वधो	हय			दी० आ० पा०
	गऊँहो				
	सकरो सोस				
	वाडो	मन			दी० आ० पा०
	पठकन
	वजकन
	शुठकन
					मन
४ । वरस का मुगाठवा					...
५ । पलेठ वरसो को वकु (वरुया)					...
६ । कूट मुगाठवा (हाठ ओर वाकु)					...
७ । थडा को हुई वावण मुगाठवा हाठ					
हय मुगाठवा ... मुगाठवा वाकु					मन
८ । गुणवस भू अडा किया गया					...
९ । वाकु जो साठ के पणम होवे पर पडो					दी० आ० पा०
१० । गुनवस या रणुगियान पाए हुए गुणवस के दसगण					

१ । अथ					
२ । आसाम्रो का नाम					
३ । जोए को गृहस्थि. — (रक्का, भाउजोणोरो वडोतह)					
	वधो	हय			दी० आ० पा०
	गऊँहो				
	सकरो सोस				
	वाडो	मन			दी० आ० पा०
	पठकन
	वजकन
	शुठकन
					मन
४ । वरस का मुगाठवा					...
५ । पलेठ वरसो को वाकु (वरुया)					...
६ । कूट मुगाठवा (हाठ ओर वाकु)					...
७ । थडा को हुई वावण मुगाठवा हाठ					
हय मुगाठवा मुगाठवा वाकु					मन
८ । गुणवस भू अडा किया गया					...
९ । वाकु जो साठ के पणम होवे पर पडो					दी० आ० पा०
१० । गुनवस या रणुगियान पाए हुए गुणवस के दसगण					

शिर्षक ३।

गमादी ।

(देखो दृष्टे १८४ ।)

हिस्सा पहला-वागिश ।

वागिश की किस्म ।	गमादी की मियाद ।	वह वस्तु जिस से मियाद शुरू होगी है ।
------------------	---------------------	---

१-किसी दानियारी हकदार या
नश्वर की किसी ऐसी शर्त के
गोड़ने के सबब वे-दण्ड के
विधे, जिस की निश्चय कौन
कान में साथ दिया हुआ है
कि, ऐसी शर्त गोड़ने की सजा
वे-दण्डी होगी ।

२-वाकी माठगुजारी वस्तु के
के विधे-

(अ) जब कि दृष्टे ६१ की १
से उसी जाति की माठ-
गुजारी के विधे उपेक्षा
अभाव नथने के पहले
वाकी माठगुजारी अदा
तब मात्र हुई ।

(ब) और हावनों में ...

१ वनस ...

६ महीने ...

३ वनस ...

शर्त गोड़ने की पानीय ।

माठगुजारी का उपेक्षा अभाव
नथने की शर्तों की पानीय
होने की पानीय से ।

उस वंशाधी वनस के पिछले दिन
से जिस में वाकी माठगुजारी
अदा होवे ठाढ़ हुई, जहाँ कि
वह वनस जानी है, और उस
अमरी या अमरी माठ के जो
महीने के अमरी दिन में जिस
में माठगुजारी वाकी पड़ी, वह
कि उन दोनों वनस में से कोई
जानी है ।

३-उस वनस की वनसों के १ वनस ... वे-दण्डी का पानीय से ।

उस वनस के वनसों के वनस

उस वनस के वनसों के वनस

उस वनस

हिस्सा २-अधो १

अधो १ को तिसम १	गमादी को मियाद १	वह वक्त जब से मियाद शुरू होगी है १
ऐज के मुताबिक दिये हुए तिसो डिजानी या हुकम से नानाजो का अधो जिधे जंज या ब्यास जंज को अदाग में १	गोस दिन ...	उस डिजानी या हुकम को गानीय से जिस से नानाजो का अधो किया गया हो १
ऐज को नू से कठजन के दिये हुए हुकम का अधो कमिशन के पास १	गोस दिन ...	उस हुकम को गानीय से जिस का अधो किया जाय १

हिस्सा ३-ध्यास १

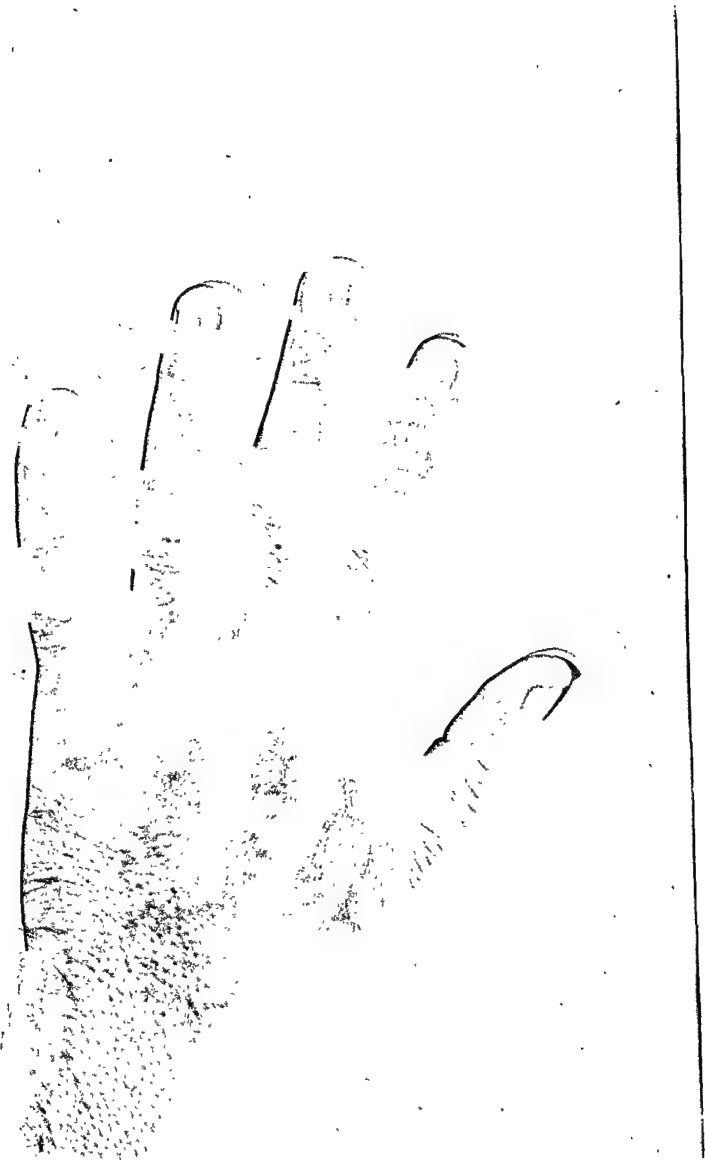
ध्यास को तिसम १	गमादी को मियाद १	वह वक्त जब से मियाद शुरू होगी है १
डिजानी या हुकम के रजनाय के दिये, जो इस ऐज के मुताबिक या इस ऐज से नद किये हुए तिसो और ऐज को नू से दिया गया हो, और वह डिजानी प०० रुपये से ज्यादा गमाद को न हो, ऐसे सूद को छोड़ कर कि डिजानी के पीछे डिजानी दिये हुए रुपये पन यड़ा हो, पन रजनाय डिजानी का मुर्या ठे कर, ठेलिन उस हाठ को छोड़ कर कि जब मध्यम वे अनेय या जवनहसनो से रजनाय डिजानी को नोका है, जिस हाठ में रिड-यन विमिटेसन ऐज सन १८७७ को नू से गमादी आये होगी १	तीन वनस ...	<p>१। डिजानी या हुकम को गानीय से ;—या</p> <p>२। जो अजान अधो हुआ है गो, अगल अधो को अमीने डिजानी या हुकम को गानीय से ;—या</p> <p>३। अजान सेसठे को नजानसानो हुई हो गो, नजान सानो पन जो सेसठ दिया जाय उस को गानीय से १</p>

आनन्द जो काष्ठवेष्ट

कानून-महाम सिक्कान सफाई हिन्द १

Kailash Chandra Mittal, B.A.,

Chief Clerk, Translator to Court





نور
بسم الله الرحمن الرحيم
نور
نور





शुद्धाशुद्धपत्र

غلطنامہ

शुद्ध	अशुद्ध	सूच	पंक्ति	पर	صفحة	غلط	صحیح
भावत	हाथ	८	८	८	८	ہاتھ	بابۃ
किया	दिया	१६	१७	१८	१९	دیا	کیا
रकाना	जकान	२३	२०	१०	२३	ذکاة	رکانہ
में	+	५०	१४	२	२३	۷۴	۴۷
मुफस्सिल	+	७३	८	१३	५०	+	مین
को	+	७४	१३	९	८०	+	منفصل
के	+	७८	३	१३	८२	+	کو
अजीं	अजां	८०	१४	२	८८	+	کے
को	के	८१	१२	१५	८०	ازان	ازین
.	.	.	.	२	९१	لیووسے	لیووسے

या जो जिनस खरीदी जाये उसके उधरत

रगने नाम लिख दिया जावे और महीना

पूरा होने या नी हर एक नद आ मायस

पर जिस कदर खर्च हुआ हो उसको हि

सान हाजिरी के नक्शे व कम बाने के

खरडे बरवाने से तय्यार कर कर

फिर सहसील के उधरत नाम लि-

खकर आ सामिया न या जिनस ख

रीद के उधरत खाने जौ साकि मौका

हो जमा कर लिया जावे और सहसील

दार के खजाने की बहियों में उसी महिने के हि-

साय में उधान का जमा कर करत फसी-

लवार असली कलाने के सीमे बहवाले हुकूम में

जूती के दर्ज कर दिया जावे इसकी कारखाने

व जमा खर्चे बहिषात मोदी खाने के की जावे -

दफा १९७ जुम्ला एजाना हाइ सहसील के वाले सक्त

व जमानची मुकर्रि किया जावेगा जिसकी

या जो جس خریدی جاوے اس کے

اودر تحہ کہا تے نام لکھ دیا جاوے

اور مہینہ پورے ہونے یعنی ہر

ایک بداموس پر جس قدر خرچ

ہوا ہوا اسکو حساب حاضری کے

نقشہ و کٹھانہ کے کھڑے

و کہا تے سے تیار کر کر پھر تحصیل کے

اودر تحہ نام لکھ کر اسامیان یا

جس خرید کے اودر تحہ کہا تے

جیساکہ موقعہ ہو جمع کر لیا جاوے

اور تحصیل کے خزانہ کی بیہوں میں اسی مہینے

کے حساب میں اودر تحہ کٹھانہ کا جمع کر کر

اصلی کٹھانہ کے مہینہ جوالہ حکم منظوری کے

درج کر دیا جاوے گا کاروائی ہو جس میں

نیچ بہیات مود بخانہ کے کجاوے

دفہ ۱۱۴ محلہ خزانہ نام سے تحصیل کے واسطے

ایک خزانچی مقرر کیا جاوے گی جسکی فہمائت

लहालवातोर फे सुकुम वश्लि

विकोम हकमे देव

तहसील में काम सीगा तामीरा

महकमै थालि थारे में सीकों त

किया जावे और तहसील दा

गादह काम के उसका हिताद

मुनासिब तमके तो से से का

हके बास्ते सकरवर डी और

वनक शाहाजिरी का ह

त तहसील में बना लिया

रुपया अवलर वजा

से दिया जावे वह सीगता

धरन वारी में लिखा जावे

गया नी सी गता सी गते

सील के धजान के उधरत

जित विसती को उधरत

उत के ना लिखा जावे

मفصل حالی واسطے رفع سقم و نظام

مناسب کے محکمہ حساب میں محمد بن

اگر کسی تحصیل میں کام صیغہ تعمیرات

کا یکم محکمہ عالیہ بخنسی کونسل کے

جاری کیا جاوے اور تحصیلدار

سبب زیادہ کام کے اسکا حیا

علیہ رہ کر مناسب سمجھ تو ایسے کا

روزمرہ کے واسطے ایک کمرہ

اور ایک کھانا و نقشہ خانہ

کا حسب ضرورت تحصیل میں

لیا جاوے۔ اور جو روپیہ اول

خزانہ تحصیل سے دیا جاوے

وہ صیغہ تعمیرات کے اور رقم

کہا جاوے اور کھانا یعنی صیغہ

تعمیرات کے کمرہ میں تحصیل کے

خزانہ کے اور رقم جمع کر کر جس کی

اور رقم دیا جاوے اس کے ہم کہہ دیا

وقفہ
۱۱۶

رکھی جاوے اور وہ گماشتہ خزانچی

تھیں تحصیل کا کھلاوے گا

تمام کارروائی جو اس دستور العمل

میں خزانچی کے تعلق رکھتی گئی ہے

کارروائی ہیئتِ مدِ اول و دوم

و سوم و ششم مندرجہ دفعہ ۱۰ -

باقی ہیئت کا کام دوسرے گماشتہ

سے لیا جاوے -

تنبیہ تحصیلدار کو چاہئے کہ گماشتہ

روزمرہ کا کام جب تک طیار نہ

کر چکے اُس سے اور کام نہ لیا جاوے

اور جس تحصیل میں گماشتہ ایک

رکھا گیا ہو اُس سے کُل کام لیا جاوے

۹۹۲ ممبر صاحبان محکمہ عالیہ بخینی کونسل

ناظم صاحبان جو واسطے نگرانی کے

تحصیلات میں جاوین تو جو کوئی کارروائی

بخلاف دستور العمل نہ اس کے دیکھیں گا

رکھی جاوے اور وہ گماشتہ خزانچی

تھیں تحصیل کا کھلاوے گا

تمام کارروائی جو اس دستور العمل

میں خزانچی کے تعلق رکھتی گئی ہے

کارروائی ہیئتِ مدِ اول و دوم

و سوم و ششم مندرجہ دفعہ ۱۰ -

باقی ہیئت کا کام دوسرے گماشتہ

سے لیا جاوے -

تنبیہ تحصیلدار کو چاہئے کہ گماشتہ

روزمرہ کا کام جب تک طیار نہ

کر چکے اُس سے اور کام نہ لیا جاوے

اور جس تحصیل میں گماشتہ ایک

رکھا گیا ہو اُس سے کُل کام لیا جاوے

ممبر صاحبان محکمہ عالیہ بخینی کونسل

ناظم صاحبان جو واسطے نگرانی کے

تحصیلات میں جاوین تو جو کوئی کارروائی

بخلاف دستور العمل نہ اس کے دیکھیں گا

روزنامہ نمبر ۱۲ سو پچانوے کے کہڑے
 زورستی کے خرچ کی ہی درقم آؤگا ہی
 کے کہڑے عین دستخط کرے جب
 پہلے مٹی کی رقومات کہتی ہوئی کا
 اطمینان تحصیلدار کر لیا کرے
 یعنی پہلے مٹی کی رقومات کے
 حاشیہ لگا ہوا دیکھ لیا کرے -
 اگر رقومات کہتی ہوئی نہوں تو اوقت
 کہتہ ہی کر اگر دستخط کیا کرے -
 دفعہ کارروائی میات وقت غیر مبشر
 مندرجہ دفعہ کے حسب ذیل پر
 کیجاوے اور میں شخص کے
 تعلق جو کام کیا جاوے وہ اسکا
 ذمہ دار کیجا یاوے اور میں پر
 تحصیل میں دو تیر یا دو گاماشہ
 کہتے گئے ہوں وہاں ایک گاماشہ
 ہوشیار و معتبر کے تعلق ہوئی

رोजनामानचा नम्बर १२ मोदीवाने के रख
 रडे रोजमिती के लवच की बहीवर कम उगा
 ही के रख रडे में दस्तखत करे जब पहले मि
 ती की रकूमत खती हुई का इतमीनान
 तहसीलदार कर लिया करे यानी पह
 ले मिती की रकूमत के हाशिया लगा
 हुआ देख लिया करे - अगर रकूमा
 त खती हुई न हों तो उसी वक्त खती
 नी करा कर दस्तखत किया करे -

११४
 ११५

مہکمہ حساب کی معرفت طیار کروا کر
 بانوں کے نمبر و نمبر لگا کر منگائی جاوے
 جو بیانات مہکمہ حساب سے ہر ماہ
 کے نمبر لگا کر آدین یا طیار ہو کر جاوے
 ان کے نمبر یا بانوں کے نمبر متواتر لگنے
 کی بھی پوچھتے ہی خزانچی جانچ کر لیا
 کرے اگر کسی طرح کا فرق ہو تو تھیل
 کو دیکھا کر اور رپوٹ کر کے درستی
 کرا لیوے -

دفتّر جو دفتّر ۳۰ و ۶۹ و ۶۶ و ۷۸ میں
 ۱۹۳۳
 بھیا ت نامبر ۲ و ۷ و ۶ و ۹۹ میں
 رکھنا اس رولٹان کے واسطے لیا جاوے
 یا ہے رولٹان و گوماشتا و موہی
 تھیل کے واسطے کہ رولٹان کے
 مہکمہ حساب کی معرفت طیار کروا کر
 رولٹان کے واسطے کہ رولٹان کے
 و ۶۰ و ۶۴ و ۶۷ کے و ۶۸ و ۶۹

وہ مہکمہ حساب کی معرفت طیار کروا کر
 بانوں کے نمبر و نمبر لگا کر منگائی جاوے
 جو بیانات مہکمہ حساب سے ہر ماہ
 کے نمبر لگا کر آدین یا طیار ہو کر جاوے
 ان کے نمبر یا بانوں کے نمبر متواتر لگنے
 کی بھی پوچھتے ہی خزانچی جانچ کر لیا
 کرے اگر کسی طرح کا فرق ہو تو تھیل
 کو دیکھا کر اور رپوٹ کر کے درستی
 کرا لیوے -

جو دفعہ ۳۶ و ۶۱ و ۶۴ و ۶۷ میں
 ۱۱
 بیات نمبر ۶۰ و ۶۴ و ۶۷ و ۱۱ میں
 رقومات کہتیا نے کے واسطے
 لکھا گیا ہے خزانچی و گوماشتہ
 و سودی تھیل کو چاہئے کہ رولٹان
 روز ترہ کر لیا کرے اور تھیل
 کو چاہئے کہ بوجب دفعہ ۱۹
 و ۶۰ و ۶۴ و ۶۷ کے و ۶۸ و ۶۹

اسکی نسبت براے تدارک
نسب محکمہ عالیہ ریجنسی
کونسل میں رپورٹ تحریر کریں
رپورٹ تھریر کریں —

مذکورہ بیان کے لئے چار بہیات
رکھی گئی ہیں اور ان کے جمع خرچ کا
قاعدہ اوپر لکھا گیا ہے لیکن جن
تخصیلات میں سرکاری گھوڑے

دفعہ ۱۱۱

مذکورہ بیان کے لئے چار بہیات
رکھی گئی ہیں اور ان کے جمع خرچ کا
قاعدہ اوپر لکھا گیا ہے لیکن جن
تخصیلات میں سرکاری گھوڑے
ہوں اور دوسرا خرچ تعلق
مذکورہ بیان کے کم ہونے کے
سبب سے مذکورہ بیان کی کارروائی
علیحدہ رکھنی ضرور ہو تو صرف
جمع خرچ روزنامہ ہی نمبر ۱
میں کر لیا جاوے —

مذکورہ بیان کے لئے چار بہیات
رکھی گئی ہیں اور ان کے جمع خرچ کا
قاعدہ اوپر لکھا گیا ہے لیکن جن
تخصیلات میں سرکاری گھوڑے
ہوں اور دوسرا خرچ تعلق
مذکورہ بیان کے کم ہونے کے
سبب سے مذکورہ بیان کی کارروائی
علیحدہ رکھنی ضرور ہو تو صرف
جمع خرچ روزنامہ ہی نمبر ۱
میں کر لیا جاوے —

دفعہ ۱۱۲

مذکورہ بیان کے لئے چار بہیات
رکھی گئی ہیں اور ان کے جمع خرچ کا
قاعدہ اوپر لکھا گیا ہے لیکن جن
تخصیلات میں سرکاری گھوڑے
ہوں اور دوسرا خرچ تعلق
مذکورہ بیان کے کم ہونے کے
سبب سے مذکورہ بیان کی کارروائی
علیحدہ رکھنی ضرور ہو تو صرف
جمع خرچ روزنامہ ہی نمبر ۱
میں کر لیا جاوے —

مذکورہ بیان کے لئے چار بہیات
رکھی گئی ہیں اور ان کے جمع خرچ کا
قاعدہ اوپر لکھا گیا ہے لیکن جن
تخصیلات میں سرکاری گھوڑے
ہوں اور دوسرا خرچ تعلق
مذکورہ بیان کے کم ہونے کے
سبب سے مذکورہ بیان کی کارروائی
علیحدہ رکھنی ضرور ہو تو صرف
جمع خرچ روزنامہ ہی نمبر ۱
میں کر لیا جاوے —

دفعہ ۲۹۰ تھسیلدار اور نایب تھسیلدار اور
تھسیلدار اور نایب تھسیلدار اور

گواہان تھسیلدار جن کے تعلق تھسیلدار

میل اس کا یہ ہے کہ وہ اس کے تھسیلدار

کا یہ ہے کہ اپنے تین ماتحت محکمہ

حساب کے سمجھین گے اور جو احکام

محکمہ حساب سے متعلق حساب کے

جاری ہوں ان کی پوری تعمیل کرنی

اور افسر صاحب حساب بجا رہیں گے

اگر وہ تعمیل احکام دستور العمل ہدایت

نایب تھسیلدار یا گواہان کی غفلت

یا سستی دیکھیں تو اس پر جرمانہ

جو ان کی نگاہ کی تخواہ سے زیادہ ہو

اس سے زیادہ تدارک کرنا ضروری

سمجھیں تو اس کی نسبت محکمہ عالیہ

ریجنی کونسل میں تحریر کریں اگر

غفلت یا سستی نسبت تھسیلدار

کے پائی جاوے تو محکمہ حساب

جلدیہ جاوے اور تھیل سے سے
 سلی کا گناہ یا اس کی نکل مس
 دیکا ہمارا اس ماہوار ہسبا کے
 جس میں وہ رہتا یا اس لی رقبہ کے سبب
 میں لکھا جاوے یا جاوے
 اور اگر کوئی منظوری ایسی ہوئی ہو
 کہ جبکہ ذریعہ سے کئی مہینوں میں
 وہ خرچ کیا جاوے تو وہ
 اصلی منظوری یا اس کی نقل اول
 ماہواری حساب کے ساتھ سمین
 وہ خرچ لکھا جاوے یا جاوے
 اور باقی ماہواری حساب میں جس
 ماہواری حساب کے ساتھ وہ
 منظوری بھی لگی ہو اس کا حوالہ اور
 منظوری کی تاریخ و تاریخ کا لکھنا
 جاوے -

جلدیہ جاوے اور تھیل سے سے
 سلی کا گناہ یا اس کی نکل مس
 دیکا ہمارا اس ماہوار ہسبا کے
 جس میں وہ رہتا یا اس لی رقبہ کے سبب
 میں لکھا جاوے یا جاوے
 اور اگر کوئی منظوری ایسی ہوئی ہو
 کہ جبکہ ذریعہ سے کئی مہینوں میں
 وہ خرچ کیا جاوے تو وہ
 اصلی منظوری یا اس کی نقل اول
 ماہواری حساب کے ساتھ سمین
 وہ خرچ لکھا جاوے یا جاوے
 اور باقی ماہواری حساب میں جس
 ماہواری حساب کے ساتھ وہ
 منظوری بھی لگی ہو اس کا حوالہ اور
 منظوری کی تاریخ و تاریخ کا لکھنا
 جاوے -

مہنہ نوادہ ہوا دے کر کر رہا ہے

مہنہ نوادہ ہوا دے کر کر رہا ہے

نامنظوری کی اطلاع فوراً محکمہ حساب
 میں جی دیوین اور افسر صاحب کو
 چاہئے کہ ایسی اطلاع آنے پر مثل قائم
 کریں اور جو بموجب دفعہ ۱۰۶ کے
 ایسی نامنظوری کے حکم کی متونوی
 کے لئے رپورٹ نہ کی گئی ہو یا رپورٹ
 کی گئی ہو اور محکمہ بری کنسل سے
 حکم نامنظوری کا بحال رکھا جاوے
 تو وہ روپیہ اس تحصیلدار کی تنخواہ
 سے وضع کر لیوین -

جو ناظم صاحبان منظور می بموجب
 دفعہ ۱۰۶ کے اپنے اختیار سے
 یا محکمہ بالا سے حاصل کر کر دیوین
 تو ایسے کاغذات منظوری کے محکمہ
 صاحب کی معرفت بھیجے یا اطلاع
 دینے کی کوئی ضرورت نہیں دو
 کاغذات منظوری کے بالبالہ تھیں

نامنظوری کی اطلاع فوراً محکمہ حساب
 میں جی دیوین اور افسر صاحب کو
 چاہئے کہ ایسی اطلاع آنے پر مثل قائم
 کریں اور جو بموجب دفعہ ۱۰۶ کے
 ایسی نامنظوری کے حکم کی متونوی
 کے لئے رپورٹ نہ کی گئی ہو یا رپورٹ
 کی گئی ہو اور محکمہ بری کنسل سے
 حکم نامنظوری کا بحال رکھا جاوے
 تو وہ روپیہ اس تحصیلدار کی تنخواہ
 سے وضع کر لیوین -

جو ناظم صاحبان منظور می بموجب
 دفعہ ۱۰۶ کے اپنے اختیار سے
 یا محکمہ بالا سے حاصل کر کر دیوین
 تو ایسے کاغذات منظوری کے محکمہ
 صاحب کی معرفت بھیجے یا اطلاع
 دینے کی کوئی ضرورت نہیں دو
 کاغذات منظوری کے بالبالہ تھیں

ہوئی ہو دے تو تحقیق در ایسے

خج کی منظوری کے لئے معہ حوالہ

مفصل قدرت کے جس سبب سے

وہ خرچ کیا گیا ہو لکھ کر ریوٹ

حکم کی منظوری کے پہنچتے سے

پندرہ روز کے اندر صرف نظر

کے محکمہ جینی کونسل میں بھیج

لکھا ہے اور محکمہ جینی کونسل

میں اسپر غور ہو کر حکم صادر

دیا جاوے گا اگر جینی کونسل

سے بھی وہ خرچ نام منظور کیا جاوے

یا اندر میں یا دالہ کے ریوٹ بھی

گئی ہو تو پھر وہ روپیہ اس میں

کی تخریب سے وضع کیا جاوے گا

یہ فیہ اگر نعمت حسب موجب دفعہ

وہ کے سوا کسی طرح کیونہ ہو

رے جو کیونہ ہوئے کہ ایسی

ہوئی ہو دے تو تحقیق در ایسے

خج کی منظوری کے لئے معہ حوالہ

مفصل قدرت کے جس سبب سے

وہ خرچ کیا گیا ہو لکھ کر ریوٹ

حکم کی منظوری کے پہنچتے سے

پندرہ روز کے اندر صرف نظر

کے محکمہ جینی کونسل میں بھیج

لکھا ہے اور محکمہ جینی کونسل

میں اسپر غور ہو کر حکم صادر

دیا جاوے گا اگر جینی کونسل

سے بھی وہ خرچ نام منظور کیا جاوے

یا اندر میں یا دالہ کے ریوٹ بھی

گئی ہو تو پھر وہ روپیہ اس میں

کی تخریب سے وضع کیا جاوے گا

یہ فیہ اگر نعمت حسب موجب دفعہ

وہ کے سوا کسی طرح کیونہ ہو

رے جو کیونہ ہوئے کہ ایسی

اسکا جواب داجی عرضہ میں
 اس کے تو تحفیلدار کو چاہیے
 مگر سر اسکی نسبت رپورٹ
 کر کے منظوری حاصل کر لیں
 اور ناظم صاحبان کو چاہیے کہ
 اگر ایسی منظوری ان کے حوالہ اختیار
 کی ہو تو منظوری یا جیسا حکم ان کے
 نزدیک مناسب ہو جلد بخیر
 اور جیسی منظوری دینا ان کے حوالہ
 کی ہو اور ان کے نزدیک ایسی منظوری
 دی جانی مناسب ہو تو مسرہ اپنی رائے
 کے اس رپورٹ کو واسطے حصول
 منظوری کے حکمہ بالا میں جلد
 اگر کسی تحفیلدار نے بموجب دفعہ
 ۱۰۲ کے بہت ضرورت سمجھی
 کوئی خرچہ پیش کر دیا ہو وہ
 اور اس سے اسکی منظوری

اسکا جواب داجی عرضہ میں
 اس کے تو تحفیلدار کو چاہیے
 مگر سر اسکی نسبت رپورٹ
 کر کے منظوری حاصل کر لیں
 اور ناظم صاحبان کو چاہیے کہ
 اگر ایسی منظوری ان کے حوالہ اختیار
 کی ہو تو منظوری یا جیسا حکم ان کے
 نزدیک مناسب ہو جلد بخیر
 اور جیسی منظوری دینا ان کے حوالہ
 کی ہو اور ان کے نزدیک ایسی منظوری
 دی جانی مناسب ہو تو مسرہ اپنی رائے
 کے اس رپورٹ کو واسطے حصول
 منظوری کے حکمہ بالا میں جلد
 اگر کسی تحفیلدار نے بموجب دفعہ
 ۱۰۲ کے بہت ضرورت سمجھی
 کوئی خرچہ پیش کر دیا ہو وہ
 اور اس سے اسکی منظوری

اسکا جواب داجی عرضہ میں
 اس کے تو تحفیلدار کو چاہیے
 مگر سر اسکی نسبت رپورٹ
 کر کے منظوری حاصل کر لیں
 اور ناظم صاحبان کو چاہیے کہ
 اگر ایسی منظوری ان کے حوالہ اختیار
 کی ہو تو منظوری یا جیسا حکم ان کے
 نزدیک مناسب ہو جلد بخیر
 اور جیسی منظوری دینا ان کے حوالہ
 کی ہو اور ان کے نزدیک ایسی منظوری
 دی جانی مناسب ہو تو مسرہ اپنی رائے
 کے اس رپورٹ کو واسطے حصول
 منظوری کے حکمہ بالا میں جلد
 اگر کسی تحفیلدار نے بموجب دفعہ
 ۱۰۲ کے بہت ضرورت سمجھی
 کوئی خرچہ پیش کر دیا ہو وہ
 اور اس سے اسکی منظوری

دفت
 ۹۰۰

اگر کسی تحفیلدار نے بموجب دفعہ
 ۱۰۲ کے بہت ضرورت سمجھی
 کوئی خرچہ پیش کر دیا ہو وہ
 اور اس سے اسکی منظوری

نوٹ : بوجب عملہ آمد حال کے جیتک

اور کوئی ٹیکم اس بارہ میں نہ ہو دے

کے خراج کی منظوری دینا اندر تھ کے با اختیار

ناجیم ساہیوان کے سامنے جاوے گا -

جو خراج بوجب دفعہ بالا کے کیا جاوے

اس کی منظوری حاصل کرنیکے لیے تحصیل

کو جا بیٹے کہ بہا تک ممکن ہو جلد روٹ

ذاتی دست میں کریں اور جو روٹ تھ

نہایت سے فرم کے لیے رہا آیا ہے

تو جبقدر روپیہ کی منظوری پہلے ہو

جکی ہے و نیز جبقدر روپیہ کی منظوری

کے لئے پہلے روٹ کی گئی ہو

منظوری اس وقت تک نہ آئی ہو

مفصل لکھ دیا جاوے تاکہ منظوری

دینے میں بہولیت رہے -

دفعہ ۱۰۵

جو بوجب عملہ آمد حال کے جیتک

اور کوئی ٹیکم اس بارہ میں نہ ہو دے

کے خراج کی منظوری دینا اندر تھ کے با اختیار

ناجیم ساہیوان کے سامنے جاوے گا -

جو خراج بوجب دفعہ بالا کے کیا جاوے

اس کی منظوری حاصل کرنیکے لیے تحصیل

کو جا بیٹے کہ بہا تک ممکن ہو جلد روٹ

ذاتی دست میں کریں اور جو روٹ تھ

نہایت سے فرم کے لیے رہا آیا ہے

تو جبقدر روپیہ کی منظوری پہلے ہو

جکی ہے و نیز جبقدر روپیہ کی منظوری

کے لئے پہلے روٹ کی گئی ہو

منظوری اس وقت تک نہ آئی ہو

مفصل لکھ دیا جاوے تاکہ منظوری

دینے میں بہولیت رہے -

دفعہ ۱۰۵

جو بوجب عملہ آمد حال کے جیتک

اور کوئی ٹیکم اس بارہ میں نہ ہو دے

کے خراج کی منظوری دینا اندر تھ کے با اختیار

ناجیم ساہیوان کے سامنے جاوے گا -

جو خراج بوجب دفعہ بالا کے کیا جاوے

اس کی منظوری حاصل کرنیکے لیے تحصیل

کو جا بیٹے کہ بہا تک ممکن ہو جلد روٹ

ذاتی دست میں کریں اور جو روٹ تھ

نہا یا جوں کے کونے والا دس تا ستر ہونے
 لاتی کرے گا تو ماسٹریج سزا دے جو مہینے
 کا مہم کا آجیگا۔

دھار روائے مہدویم رخصتی

ببھیک کا

دکھ ۲۰۸ تھسلیل داران کو چاہیے کہ کوئی رخصتی

سیوا دے گا یا سے سا رخصتی کا جی

سکے لیتے مہجوری لے کر رخصتی کرنے کے لیتے

یہ لیتے میں تھسلیل ہو گیا ہدایت ہو دے

بیتا حاصل کرنے مہجوری کے رخصتی

کے لے کہیں اگر کوئی دھتور تھسلیل

تو تھسلیل دار اپنی ذمہ داری

سے سا رخصتی کر سکتا ہے لیکن اسکا

مہم رخصتی ۲۰۸ کے مہم لے دے

تہم کیا جاتے جوں کے دھتور مہجوری

یہ کے مہم لے کے لیتے نہ لیتا

جائے -

باجائے کر سوا اس قیام میں غلطی
 کر گیا تو مستوجب سزا دے کر مانہ کا
 سمجھا جاوے گا۔

کارروائی مہدویم رخصتی
 و بھیک کا

تھسلیل داران کو چاہیے کہ کوئی رخصتی

سوائے کا یا ایسا رخصتی کا جی

لے منظور لے کر رخصتی کرنے کے لے

تھم میں تحریر ہو یا ہدایت ہو دے

بلا حاصل کرنے منظور کے رخصتی

نکرے لیکن اگر کوئی بہت ضرورت

ہو تو تھسلیل دار اپنی ذمہ داری

پر ایسا رخصتی کر سکتا ہے لیکن اسکا

جمع رخصتی دفعہ مہم کے اول آدھے

میں کیا جاوے اور بعد حصول منظور

کے اصلی رخصتی کے صیفہ میں لکھا

جاوے -

की तनुरबाहके बिलमें बरवाना वज्र प्राप्त

लगा देवे और महकमै हितावब निजाम

तको चाहिये कि जब बिल तनुरबाहके

वसूजि वरफ़्त २५ के चास्ते जांचवमें

री के उनके यहां आवे तो से सारुप पाउ

सी महिने के बिल तनुरबाह में काट

लेने का पूरा खयाल रखें अगर कि

सी मुस्ताजिम का जुमाना बाद में मु-

आफ़ हो जावेगा तो वह जर मुआफ़ी

उसी तनुरबाहके सीमें रखे निख

कर रसीद लेकर दे दिया जावे और

वर रसीद नष्ट भगती हुकम चानक व हु-

कम मुआफ़ी का हमराह उसी माहवा

री हिस्सा बके भेज दिया जावे लेकिन

मुआफ़ी की उम्मेद में जुमाना न

की वसूली मुस्तयोन रखी जावे

गर कोई माहवा सी बिल तनुरबाह में

की तनुरबाह के बिल में निजात و ضحیات

लगा دیوین اور محکمہ حساب و نظارت

کو چاہئے کہ جب بل تنخواہ کے

بموجب دفعہ ۹۵ کے واسطے چاہئے

و منظوری کے اُنکے یہاں آوے

تو ایسا روپیہ اُسی ہفتے کے بل

تنخواہ میں کاٹ لینے کا پورا خیال

رکھیں اگر کسی ملازم کا پیرمانہ بعد

میں سہاوت ہو جاوے گا تو وہ

زرمعانی اُسی تنخواہ کے نتیجہ میں

خرچ لگا کر رسید لیکر دیدیا جاوے گا

اور وہ رسید معہ اصلی حکم یا نقل

حکم معافی کا ہمراہ اُسی ماہ واری

حساب کے بھیج دیا جاوے گا

معافی کی امید میں جو نہ وغیرہ کی

دستی مشوری نہ رہتی ہو

تو کوئی ماہ واری میں نہیں لائی

जाजावेगा ऐसे मुलाजिम की तर्क करी	मिजाजावें का इसी प्रकार
बमौ कूफी छुटी बतर की वतन जुल व	छरी वसुतोनी भूषी वरती वसुतल
तबादिला व जुमाना व गैर कि जो किसी मह	वतबादल व प्रमान व फिर कि जो किसी मह
कमै मजाज से किया जावे उत्तकी इतला म	मजाज से किया जावें अस्की म
हकमै मजाज से और न महकमै हिसाब में मे	हकमै मजाज से और न महकमै हिसाब में मे
जीजावेगी ताकि यह हाल उस मुलाजिम के	बिभीजी जावें की ताकि वह हाल उस
खाते में दर्ज करालिया जावे और वर व	मलाजम के लहाते में दर्ज कर लिया जावे
कजांच माहवारी विलतनुषाह के बम	और बर वत जानच माहवारी विलतनुषाह
जिच उसके जमल दरामद किया जावे	के बमोजब उसके मलदरामद किया जावे
दफ्त जो किसी मुलाजिम तहसील पर तहसील	तहसील पर किसी मुलाजिम तहसील पर तहसील
या और किसी महकमै मजाज से जुमाना	किसी महकमै मजाज से जुमाना या और
ऐक पागैर हाजिरी कारने के लिये पाव	हाजिरी कारने के लिये या बिजब
गुजब दफ्त के तहसील दमा की त	वतने के तहसील दमा की त
वताद से तपया वेशी वचेका वतल कले	रुपये बिसी खर्ज का वसूल करने के
ये नि ये रुखम दकमै हिसाब से लाया	लिये हकमै हिसाब से लाया या व
देवे गोत दर्म न दनु गुनाशना तहसील	तहसील व गोत दर्म न दनु गुनाशना
के दफ्तर् के तहसील दमा की त	मलदरामद के तहसील दमा की त

دیکھال مہکمہ میں ہسٹا بے میں ملانجیما
 ن کی وہی میں درج کر لیا یا آویگا لے۔
 کیناگر سیوا مہکمہ میں نیجا مت کے کی
 تیر اور مہکمہ میں سے ہک مہک مہک تو اسکی
 استلا نیجا مت میں ہے جی جانے گی تا کی بھو
 جی بے اس کے حال وہی ملانجیما میں درج
 کر لیا یا جی بے بک جی بے بک جی بے
 ل تہ نور بھاکہ کے بک یا ل رکھا جی بے
 ر جی سے سا کو دے ہک مہک نیجا مت سے سا
 دیر ہو بے تو اسکی استلا بھاکہ
 ملانجیما میں فو رن درج کر لیا
 نا بے —
 ۱۰۲ جو ملانجیما تہ سلی کے بھوک مہکمہ
 ہک مہمہ ر جی سے کو تہ کے بھوک مہکمہ
 ک کی بے ل بے جی ر جی کی بھاکہ
 ر بھاکہ کینا بھاکہ جی بے بھاکہ
 مہک مہک مہک مہک مہک مہک مہک

مطابق حال محکمہ میں ملازمان کی
 ہی میں درج کر لیا جاوے گا لیکن
 سوائے محکمہ نظامت کے کسی اور
 محکمہ سے حکم ہو اسکو اسکی اطلاع
 نظامت میں بھیجاوے گی تاکہ
 بموجب اس کے حال ہی ملازمان
 میں درج کر لیا جاوے وقت
 جانچ و منظوری ملے تاخوہ کے
 خیال رکھا جاوے اور جو ایسا کو
 حکم نظامت سے صادر ہووے
 تو اسکی اطلاع دیاں بھی ملازمان
 میں فوراً درج کر لیاوے۔

دفعہ ۱۰۲ جو ملازمان تحصیل کے محکمہ محکمہ
 کونسل کے مقرر یا موقوف کئے
 جاوے اور جی بے بھاکہ
 بن بموجب دفعہ ۱۰۲ کے محکمہ
 میں واسطے جانچ و پڑتال کے

سکے رخصت ہوا کہ وہ تو اس کی تامل سے

نکرے ہاں ازل بستان پا تھیں لہذا جو اس

کی سب سے زیادہ تر ہوا ہے وہ پھر لے تھ

سہل دار کی چہی ہوئے تھ اور ہاں میں ہاں

رہے تھ جو دیکھ کر بالائے دلا سکتا ہے

۹۰۹ جو مولانا جی مان تھیں لہذا کے مقرر یا موقوفہ

کے جاوین ان کی تنخواہ کا بل محکمہ نظام

میں بھیجا جاوے گا ایسے اوقات کی

تقریری و موقوفی و تبدیلی اگر کسی تحصیل

میں کیا وے اور ترقی اندر تھ کے

ہو اور تشریف یا ان پر کوئی جرمانہ کیا جائے

یا چھٹی دی جاوے تو اس کی اطلاع

محکمہ حساب میں بھیجی گئی ضرورت

نہیں وہ تنخواہ کا بل جو ماہوار حساب

کے ساتھ محکمہ حساب میں بھیجا جاوے گا

اور اس کی جانچ و منظوری نظامت

میں ہوئے ۱۵ کے کی جاوے گی اس

मनौ करी की तनु ब्याह तह सीलदार अपने
 इरि तयार से दिला देवे लेकिन जो जर जुमान
 व वज्र भ्रातया और कोई मताल चा उसके
 जिमे राज का होवे और जिसकी इतला
 उस तह सील में भ्रातु की हो तो उसके वज्र
 करने का पूरा खयाल रखे बरना वह उस
 कदर तप या तक का जो वह अपने इ-
 रियार से दिलावे जाती जिमे वार म-
 मका जावेगा -

की खोज किमिया बाराने अक्षार से
 लावो से लेकिन जो जर जर माने वृष्ट
 ! और कौन सहाले उसके डसे राज का
 होवें और जबकी अखिल अक्षर
 में आंखी हो तो उसके वृष्ट करने का
 पुरा खयाल रखे वरना वह असफल
 रूप में नाक का जो वह अपने अक्षार
 से दलावें वृष्ट डसे वरना नज्म
 जावेगा -

दफ्तर बाला में तह सीलदारों को इरि-
 यार दिया गया है कि प्रव्याम नौ कार की
 ननु ब्याह किसी गुला जिम बे जो मौ कूपा
 तबरील जिम गरा हो दिला देवे लेकिन
 तह सीलदार की सगमो वृष्ट तबरील
 इहे तो वरना दफ्तर की तह सीलदार
 वरना वरना वरना वरना वरना वरना
 वरना वरना वरना वरना वरना वरना

वृष्ट वरना वरना वरना वरना वरना वरना
 वरना वरना वरना वरना वरना वरना
 वरना वरना वरना वरना वरना वरना
 वरना वरना वरना वरना वरना वरना
 वरना वरना वरना वरना वरना वरना
 वरना वरना वरना वरना वरना वरना

ہاجیر آجیو تہہ اہل ہدا ویل بنا کر اوس

حاضر آوے تو علیحدہ بل بنا کر اسکو بل

کوہدی جاوے گی اور اگر تنخواہ بل منظور

جاوے گی اور اگر تنخواہ بل منظور

ہوا گی ہسبا کے ساتھ ساتھ رپہ شامی بموج

ساب کے ساتھ بطور پیشگی بموجب

بہت کم رے جیسی کوں سال ہا سہر فکری ۷۷

رینسی کونسل میں ۹۷ و پکا و تہہ رسید

جاوے تو رسی دوسری بل کے لئے رسی دہم کر

اُسی بل کے لئے رسید میں کرائی جاوے

جاوے گی اور اگر خستہ واپس آئیے بعد

گی اور اگر خستہ واپس آئیے بعد

د تہہ رسی دوسری جاوے تو اہل ہدا رسی د

تنخواہ و پکا و تہہ رسید

کر دی جاوے گی اور وہ رسی د ہم رسی د

لیکھ و پکا و تہہ رسید

مہینہ کے ہسبا کے شامل کی جاوے گی

ہمراہ اُس مہینے کے حساب کے

جس میں وہ رسی دیا جاوے اسی

شمال کیجا و تہہ رسید

کارر وارڈ بموجی و مہینہ ۲۲ کے

دیا جاوے اسی کارروائی

کی جاوے —

بموجب نمونہ نمبر ۲۲ کے کیجا و تہہ

۷۷ اگر کوئی ملازم کسی مہینے کے دہم

۷۷ اگر کوئی ملازم کسی مہینے کے درمیان میں

پانچ مہینہ کی فکریات کی جاوے اور

موقوف یا تبدیل کیا جاوے اور

تہہ رسی دوسری جاوے تو اہل ہدا رسی د

تفصیل دہم و اسکو بل طیارہ

مہینہ کی فکریات کی جاوے اور

بل اور حاصل منظوری کے دیدنی

دہم مہینہ کی فکریات کی جاوے اور

سبب تہہ مہینہ کی فکریات کی جاوے اور

रुपया चिलाहासिल करने मंजूरी देना दिपाजा

بلا حاصل کرنے کے معنوں کے لیا جاتا ہے

वेगानि स्वतः कर्तरी या वरतरणी वगैरः मुला

نسبت تقریبی یا بر طرفی و غیره علامت‌ها

जिमानतदसीलके जांच पड़ताल महकमैनि

تحفیں کے جانچ و پرتال محکمہ نظامت

आमत से दुष्ठा करेगी जैसा कि दफ़्तर १०९

سے ہوا کرے گی جیسا کہ دفعہ ۱۰۱

दस्तूतल जमल हाजा में दर्ज है -

و دستور العمل ہذا میں درج ہے -

२५३ सज्जनकीकोचाहियेकितनुरावाहमुलाजि-

خزانی کو چاہئے کہ تنخواہ ملازمان کو

دفتر
۹۶

मानको व नवाज ह तहसीलदार के तक सीम

بموجب تحصیلدار کے تقسیم کر کر ہر ایک

करतरहरसक गीरिन्दह तनुरव्वाहकेद-

گیزندہ تنخواہ کے نسخہ یا مہر یا اسکے

स्त्रियतया मुहुर्याउसकेहायकीनिशानी

ماتحہ کی نشانی اور وہ سب سے شخص

और दूसरे शब्दों से उसके दस्तारवत मन्त्र

سے اُسکے دستخط منہ نام دستخط کرنے

नाम दत्त देव करेन वाले के रवाना रसोद

والے کے خانہ رسید بل تھوہ ہیں

विलतनुस्वाहनें करालिया करे-

کرا یا کرے۔

प्रश्न किसी मुलाजिम को तनुरिया हेतु शर्गी बिलाह

لعل لازم تو بخوابی و علم میگوید که غایب

وقت
۹۴

कमहर्बनैल्लिपोलेलीकांतलेकेनदीजोड

ریجنسی کونسل کے ذریعہ جاری ہے۔

किन्तु अगर्कोई मुलाजिम दक्त कही नतुर्दा।

اگر کوئی ملزم وقت تقسیم تمخوری سے

एके हाजिरेन होबिने इसकी तनु ब्या. बागम

عافرتہ جو ہے تو اسکی خواہ برآ

महोदय विनीत नमस्कार

ہمیں کیجیے : کے ان غریب :۔

جو کوئی شخص کسی عہدہ کا بدلہ لے یا جس کی کسی اور عہدہ کا بدلہ لے

یا جو کوئی شخص کسی عہدہ سے تنخواہ لین کی کوشش کرے

ہو تو اسے یا پرانہ غیر حاضری کا کاٹا ہو یا جو پرانہ غیر حاضری کا کاٹا ہو

یا جو اس شخص کے نام کے

مقابلہ میں غیر مسلم و یا غیر مذہب کے

جس کے ذریعہ سے ایسا ہوا ہو

کر دیوین -

نسبت تقرری و برطرفی و ترقی اند

تھ و تشریل و تبادلہ ملازمان کے

جو احکام فی الحال بحالی کی کوشش سے

جاری ہیں یا جو بعد ازین جاری ہوں گے

بموجب اس کے تفسیل کی جاوے گی

اور ایک ایک نقل ایسے احکام

کی جو فی الحال جاری ہیں یا جو بعد

ازین جاری ہوں گے واسطے اطلاع

کے محکمہ سب سے بھیجی جاوے گی

وہ جو فی الحال بحالی کی کوشش سے

جاری ہیں یا جو بعد ازین جاری ہوں گے

لہا جاوے معہ تاج و مہینہ کے
 کیفیت حسین کا غڈ ڈاک ذریعہ
 سوار کے ہاتھ بھیجے کا ذکر درج
 ہو گیا اور کوئی امر فروری ہووے
 تو وہ درج کیا جاوے گا۔

فصل سویم مشعر ہدایات متفرقات
 فصل ہدایات متفرقات تین

تدوین تقسیم کی جاتی ہے -
 تدوین متعلق تقسیم تنخواہ ملازمان
 تدویم متعلق خرچ تحفہ یا ہدیہ یک
 تدویم متعلق ہدایت عام -
 کارروائی تدوین تقسیم
 تنخواہ ملازمان -

۱۔ نیند دہن میں تک سیم کی جاتی ہے -

۲۔ مدد بھل متعلق کتب سیم متعلق انمول

۳۔ جینان مدد سیم متعلق کتب سیم متعلق انمول

۴۔ کمد سیم متعلق کتب سیم متعلق انمول

کارروائی مدد بھل تک سیم

تدوین متعلق انمول

۵۔ انمول متعلق کتب سیم متعلق انمول

۶۔ انمول کے متعلق سیم متعلق انمول

۷۔ انمول کے متعلق سیم متعلق انمول

۸۔ انمول کے متعلق سیم متعلق انمول

۹۔ انمول کے متعلق سیم متعلق انمول

۱۰۔ انمول کے متعلق سیم متعلق انمول

بہین نمبر ۱۲۵ نکل کا گزات

اسی نمبر ۱۲۵ نقل کا گزات

د ف ۱۲ اس بے میں جو کیفیت یا حکم یا رپورٹ
۲۷

اسی بے میں جو کیفیت یا حکم یا رپورٹ

تھیں اس سے ہندی میں سوائے تعمیل

تھیں اس سے ہندی میں سوائے تعمیل

لہذا اس کے بعد اس کی ذمہ داری یا مال

شکل مقدمات و ذمہ داری یا مال

لے لیں اس کے لیے ان کی نکل نمبر ۱۲۵

کے لیے جاوین ان کی نقل نمبر ۱۲۵

ہر ایک کی جگہ اس کے لیے اس کے لیے

بحرین کی جگہ اس کے لیے اس کے لیے

نمبر ۱۲۵ کے لیے اس کے لیے

نمبر ۱۲۵ کے لیے اس کے لیے

نمبر ۱۲۵ کے لیے اس کے لیے

نمبر ۱۲۵ کے لیے اس کے لیے

د ف ۱۲ اس بے میں جو کیفیت یا حکم یا رپورٹ

اسی بے میں جو کیفیت یا حکم یا رپورٹ

تھیں اس سے ہندی میں سوائے تعمیل

تھیں اس سے ہندی میں سوائے تعمیل

لہذا اس کے بعد اس کی ذمہ داری یا مال

شکل مقدمات و ذمہ داری یا مال

لے لیں اس کے لیے ان کی نکل نمبر ۱۲۵

کے لیے جاوین ان کی نقل نمبر ۱۲۵

ہر ایک کی جگہ اس کے لیے اس کے لیے

بحرین کی جگہ اس کے لیے اس کے لیے

نمبر ۱۲۵ کے لیے اس کے لیے

نمبر ۱۲۵ کے لیے اس کے لیے

نمبر ۱۲۵ کے لیے اس کے لیے

نمبر ۱۲۵ کے لیے اس کے لیے

نمبر ۱۲۵ کے لیے اس کے لیے

نمبر ۱۲۵ کے لیے اس کے لیے

खा गया है उसी तरह से जो सन दात व

दस्तावेज तहसील में मौजूद हो या

नई ज़ावे या वापिस में जी जावे या

दी जावे उसका ग्वाना अल हदा

उलकर इस वही नम्बर १४ में दर्ज की जा

वे इस वही में काररवाई नमूजिव

नमूना नम्बर १४ के की जावे -

है औसट طرح سے جو سند

و دستاویز تحصیل میں موجود

ہو یا نئی آوے یا واپس کھینچی

جاوے یا دیگر آوے اسکا گواہ

علیحدہ ڈالکر اس ہی نمبر میں

درج کیجیادے اس ہی میں

یو جب نمونہ نمبر ۱۴ کے کی جاوے

اس ہی کا سالانہ بدلنا ضروری نہیں

پانچ سال میں بدلی جاوے اور

جو جو بگاڑ چھوڑی جاوے وہ پانچ

سال کے اندر پرچہ پوری چاہئے

یہ جو جو بگاڑ چھوڑی جاوے وہ پانچ

سال کے اندر پرچہ پوری چاہئے

یہ جو جو بگاڑ چھوڑی جاوے وہ پانچ

سال کے اندر پرچہ پوری چاہئے

یہ جو جو بگاڑ چھوڑی جاوے وہ پانچ

سال کے اندر پرچہ پوری چاہئے

۲۲ اس بھری کا سالانہ بدلنا ضروری نہیں

ہیں پانچ سال میں बदली जावे और जो

जो जगह छोड़ी जावे वह पान्च साल

के अंदर जगह पर छोड़नी चाहिये ले

किन जो जो जगह छोड़ी हुई है

जावे तो कलू खाता और जगह पर

उसी वही में जहां मुनासिब हो उस

तक जावे और खाना दो तो खाने

में सदा रहने दो खाने के खाने का

रखे सदा रहने दो -

کی یادداشتی دسبھی میں لکھی
 جاوے - گواہی نہ لکھی
 چاہیے کہ اس یادداشت کے
 یہ دستخط تھیں لکھنے کے
 راسخا کرے -

دفعہ ۲۶ جب تھیں رتیل ہووین
 دوسرا بار تھیں لکھنے کے
 اسکو چاہیے کہ جنس کی
 یادداشتی کے موجودات کا
 کر لے اور اگر کوئی جنس کم
 بیش ہو تو اسکا حال درج کر
 اس پر دستخط سابق کا اور
 تھیں رتیل دو نو کے کے
 اور الی کی دیشی کی رپورٹ
 نظامت میں لکھا دے -

دفعہ ۲۷ جس تھیں رتیل لکھنے کی یاد
 دہشتی لکھنے کے واسطے دفعہ ۲۸ میں

جب تھیں رتیل ہووین
 اور دوسرا بار تھیں لکھنے کے
 اسکو چاہیے کہ جنس کی
 یادداشتی کے موجودات کا
 کر لے اور اگر کوئی جنس کم
 بیش ہو تو اسکا حال درج کر
 اس پر دستخط سابق کا اور
 تھیں رتیل دو نو کے کے
 اور الی کی دیشی کی رپورٹ
 نظامت میں لکھا دے -

جس تھیں رتیل لکھنے کی یاد
 دہشتی لکھنے کے واسطے دفعہ ۲۸ میں

ہو یا پراہندہ روبرو جانے یا واپس
 دی جانے پر ملحد دار کا لالچ کرنا
 نہ اس کی اس کی اس کی اس کی اس کی
 نمبر ۱۲ میں لکھی جاوے۔

دفعہ ۸۴
 علاوہ یادداشت بنس کے
 بخشی بابت دفعہ ۸۴ و ۸۵ میں
 لکھا گیا ہے اگر تفصیل اور
 کوئی امر کی یادداشت اس
 ہی میں لکھنا ضروری سمجھیں تو
 اس میں نو پر کے کھاتوں کے
 کے مناسب پانچ پھول کرا رک
 یادداشتی متنبریات کا کیا
 ڈاکٹر جس جس روز کوئی ایسی
 یادداشت لکھنا چاہیں اس
 روز کوئی نو پر یادداشت
 لکھنا ضروری ہے۔

تیسری دفعہ۔

چوتھی دفعہ۔

پانچویں دفعہ۔

سے بکری سنان دے لے لی جاوے وہ دس دھڑکی
سنان دات میں شومان کی جاوے گی -

وہی نمبر ۱۸ یا دداشت

دھڑکی رکھ دہی یا دداشت کی رکھی جاوے دس

۷۲

وہی میں یا دداشت کی جنس سرکاری

کے نام سے رکھا داتا دوتا کا ڈال کر

رہی ملی لگا کر جو جنس سرکاری

لاوہ جنس نکر دے مہی جو دے اور جس

جس کی تلو پوری میں ہو جانا کر لی جاوے

اور باد میں جو جنس کینہی اور یا

ہی جاوے یا واپس اور نہ نہ می ملی

لگا کر اسی تلو جنس یا لے دے دے

کر لی جاوے گی -

دھڑکی جس نہ رہ سے سرکاری جنس کی

۷۳

داشتی لیرا نہ کے واسے دھڑکی

میں لیرا گیا ہے اسی نہ رہ سے جو جنس

نہ اور شاد سے کی امان نہ مہی جو

بطور سند کے لیرا دے وہ اس
دفعہ کی سند میں شمار نہ کی جاوے گی
بھی نمبر ۱۸ یا دداشت

دفعہ ۱۸ ایک بھی یا دداشت کی رکھی جاوے

اس بھی میں یا دداشتی جنس

کے نام سے کہتا ہے دوطرفہ ڈال کر

اور ملی لگا کر جو جنس سرکاری

زر نقد کے موجود ہو دے اور

جس میں کی سپردگی میں ہو

کر لیرا دے اور بعد میں جنس

کہ نہی آوے یا دیرا دے یا

واپس آوے وہ بھی ملی لگا

وہی اس طرح جمع یا لیرا درج کر لیرا

دفعہ ۱۸ جس طرح سے سرکاری جنس کے

یا دداشتی کہنے کے واسطے

بالا میں کہا گیا ہے اس طرح

سے جو جنس اور شخصوں کی

اور کوئی سند دیجاوے تو وہ

اس کہانتہ میں درج کیجاوے گی۔

۲۹۔ اس بھی کا سالیانہ بدلنا ضرور

پنچ سال میں بدلی جاوے گی

اور جو جگہ چھوڑی جاوے وہ

پانچ سال کے اندازہ پر چھوڑی

جاوے لیکن جو جگہ چھوڑی

ہوئی پوری ہو جاوے تو

چلو کہانتہ اور جگہ پر اسی جہاں

میں جہاں مناسب ہو ڈال

لیا جاوے اور حوالہ دو تو

کہانتہ میں ایک دوسرے

کے کہانتہ کے پڑنے کا درج

کر دیا جاوے اس ہی میں

کا ردائی حسب نمونہ نمبر ۱۳

کی جاوے۔

تنبیہ جو رسید روپیہ کی تھی

اور کوئی سند دیجاوے تو وہ

اس کہانتہ میں درج کیجاوے گی۔

۲۹۔ اس بھی کا سالیانہ بدلنا ضرور

پنچ سال میں بدلی جاوے گی

اور جو جگہ چھوڑی جاوے وہ

پانچ سال کے اندازہ پر چھوڑی

جاوے لیکن جو جگہ چھوڑی

ہوئی پوری ہو جاوے تو

چلو کہانتہ اور جگہ پر اسی جہاں

میں جہاں مناسب ہو ڈال

لیا جاوے اور حوالہ دو تو

کہانتہ میں ایک دوسرے

کے کہانتہ کے پڑنے کا درج

کر دیا جاوے اس ہی میں

کا ردائی حسب نمونہ نمبر ۱۳

کی جاوے۔

تنبیہ جو رسید روپیہ کی تھی

اُتل ہدا اُتل ہدا ہاٹھ جیل مونا

سب جگہ ڈھونڈ ڈھونڈ کر ڈالے

وہی اور نکل کاغذات کی

فیہ فیہ کی جاوے گی اور نمبر

ہر سکرابتے میں اُتل ہدا اُتل ہدا

سلسل کاغذات کا لگایا جائے

گا - سدرا ان کے گاؤں کے پتے

ہو کم ناما ب بंधا اور پر وانی

کے کاغذات -

کھولا کے کاغذات

فرور و جی جی میں سرکاری کے کاغذ

فرور و جی جی میں ریاضی کے کاغذ

ٹیکا دے دات یا نوسکرات وغیرہ

کے کاغذات -

گاہ کی चौدر کے کاغذات -

رہ کے کاغذات -

موت فیکٹری میں تباہی اور لیکچر

قسم کے علیحدہ علیحدہ حسب ذیل

مناسب جگہ چھوڑ چھوڑ کر ڈالے

جاوین گے اور نقل کاغذات

کی حرفت بکرت کیا وے گی اور

نمبر ہر ایک کہاتے میں علیحدہ علیحدہ

سلسل کاغذات کا لگایا جائے

مزداران کے گاؤں کے پتے

دھکمت مسہ و نیدھا اور پروانوں

کے کاغذات -

کہو کہے کاغذات -

فروری زمین سرکاری کے کاغذ

فروری زمین رعایا کے کاغذ

ٹھیکہ و یہاں یا مسکرات وغیرہ

کے کاغذات -

گانوں کے چودھر کے کاغذات

ریٹھ کے کاغذات -

سفر قات سوا سے اوپر لیکچر

رخصت پر جاوے تو بخود

اُسکی بوقت واپسی بآ

ہوگی لیکن اگر اتنے کنسے

منظوری حاصل کر لی ہو تو بطور

پیشگی کے مل سکے گی۔

تہا مقیم منفردات

اس مد منفردات کے تعلق میں

واحد رجسٹر رکھا جاوے گا

اسی نمبر پر انقوال سندات

اسی نمبر پر یادداشت - وہی

نمبر پر نقل کا قذات روزگاری

رجسٹر روزگاری کا قذات -

وہی نمبر پر نقل سندات

وہی نمبر پر نقل سندات

وہی نمبر پر نقل سندات

وہی نمبر پر نقل سندات

وہی نمبر پر نقل سندات

وہی نمبر پر نقل سندات

وہی نمبر پر نقل سندات

सका हाल उसी मुलाजिम के खाते के बा-
 ईतरफ एक सल बही का छोड़कर वह
 शियालगा कर वह हाल बहवाला न-
 म्बर वतारिख हुक्म वनाम महकमे
 के दर्ज कर लिया जावेगा और जो कि
 ती मुलाजिम पर जुर्माना होकर वगैर-
 हाजिरी की तनुरबाह वजै होने का हुक्म
 हो तो उसी मुलाजिम के खाते के दहनी
 तरफ बहवाला नम्बर वतारिख हुक्म
 वनाम महकमे के दर्ज कर दिया जावेगा
 और जो वादाद जुर्माना या वज्रात की हो
 वे वह सिरे पर दर्ज कर दी जावेगी -
 एवज्ञानची की चाहिये कि जो मिल-
 गया मुलाजिम नाल - नाला जंख
 मंजूर होकर महकमे शिवाय मुलाजिम
 से दोब - वमूलि बहामंजरी को रफ
 मंजूर मुलाजिम के खाते के दहनी

حال उसी ملازم کے کہاتہ کے بائیں
 طرف ایک سَل بھی کا چھوڑ کر
 وحاشیہ لگا کر وہ حال بحوالہ
 نمبر و تاریخ حکم و نام محکمہ کے
 درج کر لیا جائیگا اور جو کسی ملازم
 پر جرمانہ ہو کر وغیرہ حاضری کی تخطی
 و ضعی ہوئے کے حکم ہو تو اسی
 ملازم کے کہاتہ کے دہنی طرف
 بحوالہ نمبر و تاریخ حکم و نام محکمہ
 کے درج کر دیا جائے گا اور
 جو وعدہ و جرمانہ یا وندجات کی
 وہ سسر کر یہ درج کرو یا وینگی -
 یہ قرار ہے کہ چاہئے کہ ہر ملازم
 سے ملے جو ملازم نہ ہو
 حسب ذیل حالت میں
 جس شخص سے
 ملازم کے کہاتہ کے بائیں

جسکے ذریعہ سے وہ اس عہدہ پر
 سے وہ اس عہدہ پر
 متحرک کیا گیا ہوا اور جس عہدہ سے
 تبدیل ہو کر آیا ہو یا بنا کر رکھا گیا
 ہو تحریر کر دیا جاوے گا اور جو لازم
 تبدیل ہو کر کسی دوسرے عہدہ پر
 بھیجا جاوے یا برخاست کیا گیا
 یا اسنے استعفا دیا ہو و س کے لوا
 حال بھی معہ حوالہ نمبر و تاریخ حکم
 نام محکمہ کے اسکے کہاتہ کے بائیں
 طرف حاشیہ لگا کر لکھ دیا جائے گا
 گا اگر وہ عہدہ خالی رہا ہو و س کے تو
 میں ایام تک خالی رہے و
 اس اسامی کے کہاتہ کے نیچے
 حاشیہ دیکر لکھ دیا جاوے گا
 کبھی عہدہ کی ترقی یا تنزیل یا
 بدلی یا خصمت رعایتی یا بدل
 تنخواہ کی اطلاع آوے تو اسکا

سے وہ اس عہدہ پر
 سے وہ اس عہدہ پر
 متحرک کیا گیا ہوا اور جس عہدہ سے
 تبدیل ہو کر آیا ہو یا بنا کر رکھا گیا
 ہو تحریر کر دیا جاوے گا اور جو لازم
 تبدیل ہو کر کسی دوسرے عہدہ پر
 بھیجا جاوے یا برخاست کیا گیا
 یا اسنے استعفا دیا ہو و س کے لوا
 حال بھی معہ حوالہ نمبر و تاریخ حکم
 نام محکمہ کے اسکے کہاتہ کے بائیں
 طرف حاشیہ لگا کر لکھ دیا جائے گا
 گا اگر وہ عہدہ خالی رہا ہو و س کے تو
 میں ایام تک خالی رہے و
 اس اسامی کے کہاتہ کے نیچے
 حاشیہ دیکر لکھ دیا جاوے گا
 کبھی عہدہ کی ترقی یا تنزیل یا
 بدلی یا خصمت رعایتی یا بدل
 تنخواہ کی اطلاع آوے تو اسکا

۱۔ مندرجہ تہ سے کمی یا
 بیشی ملنے کے لئے کوئی حکم
 ہو تو بجا رہ حکم کے تحریر کیا جائے
 گا اس ہی کی کارروائی بموجب
 نمونہ نمبر ۱۲ کے کیجاو گی۔
 جب کسی ملازم کی بددی ہو تو
 تو اس کی عوض میں دوسرا شخص
 تبدیل ہو کر اسے یا مقرر
 کیا جاوے تو اس شخص
 کا کہنا اسی عہدہ کے پیٹے
 میں اور اسی شخص کے کہنا
 کے نیچے جسکی عوض وہ رکھا
 جاوے ڈال لیا جاوے گا۔
 اور ایسے کہنا کے ڈالنے
 میں ملازم اس ملازم کے
 نام و ولدیت و قومیت و سن
 و عمر و تاریخ و تاریخ کے
 نمبر ۱۲ کے ملازم کے لئے

۲۔ مندرجہ تہ سے کمی یا بیشی
 ملنے کے لئے کوئی حکم
 ہو تو بجا رہ حکم کے تحریر کیا جائے
 گا اس ہی کی کارروائی بموجب
 نمونہ نمبر ۱۲ کے کیجاو گی۔
 جب کسی ملازم کی بددی ہو تو
 تو اس کی عوض میں دوسرا شخص
 تبدیل ہو کر اسے یا مقرر
 کیا جاوے تو اس شخص
 کا کہنا اسی عہدہ کے پیٹے
 میں اور اسی شخص کے کہنا
 کے نیچے جسکی عوض وہ رکھا
 جاوے ڈال لیا جاوے گا۔
 اور ایسے کہنا کے ڈالنے
 میں ملازم اس ملازم کے
 نام و ولدیت و قومیت و سن
 و عمر و تاریخ و تاریخ کے
 نمبر ۱۲ کے ملازم کے لئے

تھیں کہ دو طرفہ عہدہ کے لئے

وہ دوا کے پیٹے میں عہدہ والا

داغ لکھا جائے گا اور ایک

کھاتہ کے شروع میں خواہ اس

عہدہ کی مندرجہ تھوڑی کیجا

گی ہر ایک عہدہ دار کھاتہ کے

پیٹے میں اسم دار کھاتہ ڈالے

جاوینگے اور ہر ایک عہدہ دار

کے کھاتہ کے پیٹے میں اول کھاتہ

جو سال گذشتہ کے اخیر پر ملازم

رہا ہوا اور جس کے تبادلہ کا حکم نہ

ہوا ہو تو اس کے نام کا کھاتہ اول

لیا جاوے گا اور جہاں نام

ملازم کا لکھا جاوے وہاں اس کا

سکونت و ولایت و عمر و قوت

جہاں تک دریافت ہو تحریر

کر دیا جائیگا اور جو اس کو ذاتی

تھیں کہ دو طرفہ عہدہ کے لئے

وہ دوا کے پیٹے میں عہدہ والا

داغ لکھا جائے گا اور ایک

کھاتہ کے شروع میں خواہ اس

عہدہ کی مندرجہ تھوڑی کیجا

گی ہر ایک عہدہ دار کھاتہ کے

پیٹے میں اسم دار کھاتہ ڈالے

جاوینگے اور ہر ایک عہدہ دار

کے کھاتہ کے پیٹے میں اول کھاتہ

جو سال گذشتہ کے اخیر پر ملازم

رہا ہوا اور جس کے تبادلہ کا حکم نہ

ہوا ہو تو اس کے نام کا کھاتہ اول

لیا جاوے گا اور جہاں نام

ملازم کا لکھا جاوے وہاں اس کا

سکونت و ولایت و عمر و قوت

جہاں تک دریافت ہو تحریر

کر دیا جائیگا اور جو اس کو ذاتی

بعد اگر کوئی رقم صدر کے حکم سے
 تھوڑی یا سب معاف کیجاو
 تو بحوالہ حکم و نمبر صدر کے اسی
 صیفون کے اوپر تھمنا سے
 لکھ کر اُس دیتا یا اسامی کے
 جمع کر لی جاوے اس ہی کی
 کارروائی بموجب نمونہ نمبر
 کے کی جاوے گی۔

بادشاہ گار کوئی رقم صدر کے حکم سے
 پوڈی یا سب معاف کیجاو
 ہوا لہا حکم و نمبر صدر کے اسی
 سیفون کے اوپر تھمنا سے
 لکھ کر اُس دیتا یا اسامی کے
 جمع کر لی جاوے اس ہی کی
 کارروائی بموجب نمونہ نمبر
 کے کی جاوے گی۔

وہی نمبر ۱۹۱۳ء کا رکن و اگلی

دفعہ ۱۳۸ اس کتابت میں کل کہاتہ و درجہ
 ڈالے جاوینگے اول کہاتہ جمع کے
 صیف و وار مع پیٹہ کے نمبر کے
 حسب ضرورت ڈالے جاوینگے
 اور پھر مناسب جگہ چھوڑ کر کہاتہ
 تحصیل کا ڈالا جاوینگا اور پھر یہ
 واسا میوار کہاتہ ڈالے جاوینگے
 اور وہیہ وار واسا میوار کے

دفعہ ۱۳۸ اس کتابت میں کل کہاتہ و درجہ
 ڈالے جاوینگے اس وقت لکھنا جاتا کہاتہ کی
 گے وار پٹہ کے نمبر کے ہر صفحہ ج
 رت ڈالے جاوینگے اور پھر مونا سی
 ب جگہ چھوڑ کر کہاتہ تھ ل
 کا ڈالنا جاوینگا اور پھر دے وار ب
 تانی وار کہاتہ ڈالے جاوینگے اور
 دے وار ب تانی وار کے کہاتہ کے

اور جب ایسی رقومات تحصیل میں
و معمول ہو کر اس ہی کی جمع کیجا
تب اسی تہی میں اس ہی میں درجہ
تحصیل کے نام لکھ کر دیہات
و اسمیان کی تفصیل و ارجع
کریوین -

ر ج م ا کر لے وے -

جو سود بہ سبب دیر سے رقم
داخل ہونے یا اور کسی وجہ سے
لگا یا جاوے تو وہ بیلج کے
میں دو رتھ میں جمع کر کر دیا
و اسمیان کے نام لکھا جاوے
اور جبے معمول ہووے تب
دیہات و اسمیان کے جمع
ہو کر چھ بیاض کے میں
اور رتھ نام لکھ کر
جاوے -

نمبر ۹۰

اس میں تین تہی ہیں

نمبر

اس میں تین تہی ہیں

میں بھی کر لیا جاوے یا نہیں اس سلسلے
 سب گروں کے نام لکھ کر دے ہاتھ کا
 تمام گروں کے جमा کر لیا جاوے
 مگر اس سلسلہ پر جमा کرنے میں
 گروں کے نام لکھنے میں یہ ہوا
 دیکھ کر دے کہ وہی سلسلہ
 میں اس سلسلے گروں میں جमा کر
 دے ہاتھ کا اس سلسلے کے نام کا
 کی نیکالی گرو ہے اس لیے یہاں
 گروں کے نام لکھ کر اس سلسلے
 یہ دے ہاتھ کے جमा کیے گئے۔

خرچ اس ہی میں لکھا گیا
 یعنی اصلی صیغوں کے نام
 دیہات و اسامیان کے جمع
 کر کے جاوین لیکن اس طرح
 کرنے میں صیغوں کے نام لکھے
 میں یہ عوالہ درج کر دین کہ یہاں
 تحصیل میں اصلی صیغوں میں
 جمع کر دے دیہات و اسامیان
 نام باقی نکالی گئی ہے اس لیے یہاں
 صیغوں کے نام لکھ کر اس سلسلے
 دیہات کے جمع کیے گئے۔

۱۵۹ اور کرمات دے ہاتھ کا اس سلسلے
 میں اس سلسلے کی دیکھتے ہیں باقی
 کالیاں جہاں انکا جما کر دے ہاتھ
 ہے کہ کرنے میں اس سلسلے کے
 اس سلسلے کے دے ہاتھ کا
 اس سلسلے کے دے ہاتھ کا

دفعہ جو قومات دیہات یا اسامیان
 میں تحصیل کی دیہات میں باقی
 نکالی جاوے ان کا جمع خرچ
 اس ہی میں کرنے میں تحصیل کے
 اور تمام جمع کر دے دیہات
 کے تفصیل وار نام لکھ دین

• देवता व आत्मानि पान से वस्तु हो

دریہات و اسامیان سے وصول

परतहसीलमेंअसलीसोकेआमदनी

پیشتر تفصیل میں اصل صیغہ آمد فی مینا

मैं जमा होवे वह जिन जिन सीगे कि व

جمع ہووین وہ جن بن مسیغون کے

तू लहो वह उसी रोज की मित्ती में उन

و معمولاً ہون وہ اسی روز کی مٹی

सीगों के नाम लिखकर देहस्त वः

مین آن مسیون کے نام لکھ کر

ताम्रियान के जमा कर लिये जावें

حزبِ اہل سنت و اہل ایمان کے جمع

और सींगों के नाम लिखने में यह

زریعے جاوین اور معینوں کے

इत्यादिदिवा जावे किरूपया

نام ایجنسی میں یہ حوالہ لکھ دیا

वह सील में वसूल होकर जमा कि-

جاوے کہ روپیہ تحصیل میں

या गया है -

موصول ہو کر جمع کیا گیا ہے۔

अभीरसात पर जब कोई रूम

غیر مسلموں پر جب کوئی مرقوم

किमी देहे या भासामी में दाकी र

کسی دیکھو یہ ذرا سامی نہیں باکو

इजावे और बहियाततइसीलमें

یہ تو اسے اور بیات میں

बहुसंख्य सीमाओं में जमा कर रहे हैं।

یہ سب کچھ دیکھ کر میں نے سوچا کہ میں نے کیا کیا ہے؟

राम कृष्ण मिश्र के नाम बरम्भ

[Faint handwritten notes at the bottom of the page]

बाराकुर के बाकी निहाल...

1990

निबन्ध समकालीनता

کر دیئے جاوینگے جو رقم کہیں
 سال اخیر پر باقی رہ جاوے گی
 وہ تحصیل کی بھی میں باقی نکالینگے
 اس گہرڑہ میں جمع خرچ و منجمنہ
 نمبر ۱ کے کیا جاوے گا اور جس
 سٹی میں جمع خرچ کیا جاوے گا
 اُس سٹی کے نیچے کا شتہ تحصیل
 کا دستخط کیا جاوے گا -
 جو رقم و رکاز وغیرہ سال روان کی
 فہرست محکمہ مالدار سے تجویز اور
 محکمہ حساب سے تصدیق ہو کر آوے
 تو بموجب اُس کے سینور و سینور کے بیٹے
 کے نام سے جن کر لیا وے اور جو
 دارا سالی و زر نام لپی جاوے
 اور جن کرنے میں سوانہ نمبر و کام
 محکمہ حساب کا تحریر کر دیا جاوے

دہلی ۶۷
 جو رقم و رکاز وغیرہ سال روان کی

فہرست محکمہ مالدار سے تجویز اور

محکمہ حساب سے تصدیق ہو کر آوے

تو بموجب اُس کے سینور و سینور کے بیٹے

کے نام سے جن کر لیا وے اور جو

دارا سالی و زر نام لپی جاوے

اور جن کرنے میں سوانہ نمبر و کام

محکمہ حساب کا تحریر کر دیا جاوے

جو رقم و رکاز وغیرہ سال روان کی

ہر ایک جنس کے لگا کر اس

پہینے کے سرے پر درج کر دیا

گی جس سے معلوم رہے کہ

قد جنس کس کس صنف وارانہ

پیٹے کے نمبر و نمین خرچ ہوئی

ہے و نیز ہر ایک جنس تمام

پہینے میں کس قدر خرچ ہوئی ہے

تاکہ باہواری حساب خیر و زریعہ

میں سہولیت رہے اس

بھی میں کارروائی حسب نمبر

نمبر کے کیجا دے گی۔

مذکورہ قسم رقم و ادوگاہی

دفتر اس کے تعلق دو ہی بات

کہی جائیگی اول کہ وہ

کہتا ان دونوں میں خرچ

غیر ادو رقم کے کیا جاوے گا

ساتھ تمام پر سب باتیں

ہر ایک جنس کے لگا کر اس

پہینے کے سرے پر درج کر دیا

گی جس سے معلوم رہے کہ

قد جنس کس کس صنف وارانہ

پیٹے کے نمبر و نمین خرچ ہوئی

ہے و نیز ہر ایک جنس تمام

پہینے میں کس قدر خرچ ہوئی ہے

تاکہ باہواری حساب خیر و زریعہ

میں سہولیت رہے اس

بھی میں کارروائی حسب نمبر

نمبر کے کیجا دے گی۔

مذکورہ قسم رقم و ادوگاہی

دفتر اس کے تعلق دو ہی بات

کہی جائیگی اول کہ وہ

کہتا ان دونوں میں خرچ

غیر ادو رقم کے کیا جاوے گا

ساتھ تمام پر سب باتیں

میں نے کون سا کام کیا ہے جس سے

تیرے جانے کو ڈر کر رہا ہوں

اور میں نے کون سا کام کیا ہے جس سے

تیرے جانے کو ڈر کر رہا ہوں

بہنو -

اور بعد ازاں نکلی کہاتہ کہاتہ

کے مناسب پائے چھوڑ کر

میں دور اور غائب ہو کر

پیشے میں مامور کیا گئے تھے

جاؤ گے -

دکھائی دیا کہ اس نے کون سا کام کیا ہے

۵۶

میں نے کون سا کام کیا ہے جس سے

تیرے جانے کو ڈر کر رہا ہوں

میں نے کون سا کام کیا ہے جس سے

تیرے جانے کو ڈر کر رہا ہوں

میں نے کون سا کام کیا ہے جس سے

تیرے جانے کو ڈر کر رہا ہوں

میں نے کون سا کام کیا ہے جس سے

تیرے جانے کو ڈر کر رہا ہوں

میں نے کون سا کام کیا ہے جس سے

تیرے جانے کو ڈر کر رہا ہوں

کہاتہ کہاتہ سے مستند رہا

خارج روز ترہ مندرجہ ہو

کا بموجب قاعدہ دفعہ ۳۳

کے لکھا جائے گا ہر اول کہاتہ

میں نے کون سا کام کیا ہے جس سے

تیرے جانے کو ڈر کر رہا ہوں

میں نے کون سا کام کیا ہے جس سے

تیرے جانے کو ڈر کر رہا ہوں

میں نے کون سا کام کیا ہے جس سے

تیرے جانے کو ڈر کر رہا ہوں

میں نے کون سا کام کیا ہے جس سے

نمبر ۷ کے کی جانے گی -

بہن تھیں لہذا کو چاہیے

کی جب رोज مرے ہر دستاویز بھ

جی بدمعاشی کے روبرو کی وہی

کو بہت بڑی پدکار یا سونکار

اس میں نہ کرے کی جی نہ سب مہ

بہن یا بچی کے بھائی کے

ہر گھر کے دیہی دے کی گئی ہے اور

بہن کو دیہی دے کی گئی ہے انہوں نے

بہن کا ہے -

بہن کا ہے مہر کے رोज

بہن کی بہن کی -

اس میں نہ لے لے لے لے لے

اور اس کے پتے میں اس کے پتے

کے نمبر وار اور اس کے پتے

بہن وار اور اس کے پتے

بہن وار اس کے پتے

نمبر ۷ کے کی جانے گی -

تہیہ عقیدہ کو چاہیے کہ جب

روز مرہ دستاویز موجب دفعہ

بالا کے خرچ کی ہی میں کرے

وہ بخوبی پڑھ کر یا ستر طہین

کرے کہ جنس موجب تہہ

یا بدھیک موجب اسکے علم

کے دی ہوئی درج کی گئی ہے

اور دیگر جگہ دی ہوئی درج ہے

انہوں نے برابر پائی ہے -

بہن نمبر ۷ مود بخانہ کے روضہ

کی بہن کی

اس میں نہ لے لے لے لے لے

اور اس کے پتے میں اس کے پتے

کے نمبر وار اور اس کے پتے

بہن وار اور اس کے پتے

بہن وار اس کے پتے

اور جو جنس دیکھا دے وہ عینہ
 ر ب پتے کے نمبر وار اور اسکے
 پتے میں تفصیل در درج کیجاو گی
 اگر کوئی جنس پیٹ سے بدھیک
 دیا دے تو بدھیک کے
 والد سے تحریر کر دی جاوے
 ئی اور کل جنس تحریر ہونیکے
 بعد اسکے نیچے روز متی سرب
 ہیک جنس کی لگا دیکھاو گی
 یعنی جو جنس متفرق خچ کے
 صیفون میں دی گئی ہو وہ ہر ایک
 جنس اکٹھی جوڑ کر درج کر دیکھاو گی
 اور اسکے نیچے صوفی روز مرہ اپنے
 دستخط کر کر تحفیلہ لایا اسکی
 غرض جو کام کرتا ہو وہی اور اسکے
 دستخط بھی کرا لیا کریگا اس ہی
 میں کارروائی بموجب نمونہ

اور جو جنس دی جاوے وہ عینہ
 ر ب پتے کے نمبر وار اور اسکے
 پتے میں تفصیل در درج کیجاو گی
 اگر کوئی جنس پتے سے بدھیک
 دی جاوے تو بدھیک کے ہوالا سے
 تہریر کر دی جاوے گی اور کل
 جنس تہریر ہونے کے بعد اسکے
 نیچے رोज مہتی سرب ہیک جنس
 کی لگا دیکھاو گی یا نہی جو جنس
 جنس متفرق خچ کے صیفون میں
 دی گئی ہو وہ ہر ایک جنس اکٹھی
 جوڑ کر درج کر دیکھاو گی اور
 اسکے نیچے صوفی روز مرہ اپنے
 دستخط کر کر تحفیلہ لایا اسکی
 غرض جو کام کرتا ہو وہی اور
 اسکے دستخط بھی کرا لیا کریگا
 اس ہی میں کارروائی بموجب نمونہ

اور جو جنس دی جاوے وہ عینہ
 ر ب پتے کے نمبر وار اور اسکے
 پتے میں تفصیل در درج کیجاو گی
 اگر کوئی جنس پتے سے بدھیک
 دی جاوے تو بدھیک کے ہوالا سے
 تہریر کر دی جاوے گی اور کل
 جنس تہریر ہونے کے بعد اسکے
 نیچے رोज مہتی سرب ہیک جنس
 کی لگا دیکھاو گی یا نہی جو جنس
 جنس متفرق خچ کے صیفون میں
 دی گئی ہو وہ ہر ایک جنس اکٹھی
 جوڑ کر درج کر دیکھاو گی اور
 اسکے نیچے صوفی روز مرہ اپنے
 دستخط کر کر تحفیلہ لایا اسکی
 غرض جو کام کرتا ہو وہی اور
 اسکے دستخط بھی کرا لیا کریگا
 اس ہی میں کارروائی بموجب نمونہ

[illegible]

میں جمار خیرے اس بھی میں کیا جاوے گا

اس پر روزانہ دستخط سودی اور

تھمیلدار کیا جائیگا۔

بھی نمبر ۱۰ کہا کہ سودی خانہ کی ابتدا

کے۔

دفعہ ۶۱ اس بھی نمبر ۱۰ میں کہا کہ دو طرفہ

اول تحصیل کا بعد میں ہر ایک خیرے

اور اسکے بعد اور تھم کہا کہ

اگر ضرورت ہو ڈالے جاوے گا

اور اس بھی میں رقومات بھی

نمبر ۱۰ سودی خانہ کے کہڑے سے

بموجب قاعدہ مندرجہ دفعہ ۱۰

کے کتائی جاوے گی۔

دفعہ ۶۲ دفعہ جس کے کہا کہ میں جو رقومات

بموجب دفعہ بالا کے کہتائی جائیگا

انہیں قیمت و وزن مال کی دونوں

کہتائی جائیے اور ان کہتوں

तो बमूजि व उसके जमा खर्च करील-

पाजावेगा और जो रुपया भराने के लिए

ये हुक्म आवे तो रुपया भरकर उध

त खाते जमा किया जावेगा--

अखीर साल पर जो माल पोतार है

वह अखीर महिने के औसत से सि

रे पर तहसील के नाम लिखकर

जिन्सवार खातों के जमा कर

कर सबर खातों के उत साल की

बोहियात में चेबाक यानी बूकता

कर दिया जावेगा और साल आंश

का की इत बही में तहसील की उसी प्रा

रह से उधरत पोता माल साल गुजि

रता की वाबन जमा कर (कर जिन्सवार

खातों के नाम लिख दिया जावेगा--

उसमें काररवाई बमूजि व नमूना

नम्बर दी जावेगी और जिन्सवारी

तो بموجب उसके जमा खर्च कर लिया जा

और रुपया भराने के लिए

तो रुपया भरकर उधरत पोता माल साल गुजि

किया जावेगा -

दफ्तेर अखीर साल पर जो माल पोतार है

वह अखीर महिने के औसत से

सरे पर तहसील के नाम लिखकर

जिन्सवार खातों के जमा कर

कर सबर खातों के उत साल की

बोहियात में चेबाक यानी बूकता

कर दिया जावेगा और साल आंश

का की इत बही में तहसील की उसी प्रा

रह से उधरत पोता माल साल गुजि

रता की वाबन जमा कर (कर जिन्सवार

खातों के नाम लिख दिया जावेगा--

उसमें काररवाई बमूजि व नमूना

नम्बर दी जावेगी और जिन्सवारी

<p>کرتا ہستی نام کے نام لکھی جاوے گی۔</p>	<p>تخصیص کے نام لکھی جاوے گی۔</p>
<p>۲۴ جن کو کسی جینس کے کہاتے</p>	<p>جب کبھی کسی جنس کے کہاتے</p>
<p>بڑا جاتے یا نئی بڑھوتر ہووے تو یہ</p>	<p>سین مال بڑھ جاوے یعنی بڑھوتر</p>
<p>تہسلیل کے بڑھوتر باوالت جما</p>	<p>ہووے تو وہ تخصیص کے</p>
<p>کر کے اسی جینس کے نام لکھوا</p>	<p>بدھوتر یا بے تبع کر کے اسی جنس</p>
<p>دیا جاتے گا تاکہ جینس کے نام</p>	<p>کے نام لکھ دیا جاوے گا تاکہ</p>
<p>ن کی تیل بٹ دھو کر رہ جائے</p>	<p>جنس کے وزن کی ٹیٹو</p>
<p>اسی طرح سے جو</p>	<p>رہے اور اس طرح سے جو</p>
<p>ہو جاتے تو یہ بڑھوتر یا بے</p>	<p>کوئی جنس کم ہو جاوے تو</p>
<p>تہسلیل کے نام لکھ کر اسی جینس</p>	<p>گھٹوتری یا بے تخصیص کے نام</p>
<p>ن کے نام لکھ کر اسی جینس</p>	<p>اس جنس کے نام لکھ کر اسی</p>
<p>تہسلیل کی بھینس ۱۰ میں سے</p>	<p>تخصیص کی بھی نمبر ۱۰ میں سے</p>
<p>تہسلیل کا روپ یا موہیروانی کی بھینس</p>	<p>گھٹوتری کا روپ یا موہیروانی کی</p>
<p>کا نام لکھ کر اسی جینس کے نام</p>	<p>بھی کا نام لکھ کر اسی جینس کے</p>
<p>ن کے نام لکھ کر اسی جینس</p>	<p>گھٹوتری کے نام لکھ کر اسی</p>
<p>اس کی منجری کے لیے رپورٹ کی</p>	<p>اور اس کی منظوری کے لیے رپورٹ</p>

उधारा जमा करके जिन्स खरीद शुद्धा

के नाम लिखी जायेगी और जब तह-

सील तेउसका रूप पा दिला या जाने

उस वक्त तहसील के त्याते में जमा

कहते उस शायर के उधारत नाम

सिखी जादेगी संक्षिप्त जहां तक

मुमकिन होरु वाल रहे किवा सत

गालकी नहसील से उसी दत्त दिया-

दी जावे ताकि द्वारा जनार्षचन

करना है -

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

होव जिनकारो उताना हिमाद दफन

नानाबाद, मुतगल्लिक नरियत

मन्थरे विष्णुस्मृत्याजीवितम्

मन्त्रालय, नया दिल्ली

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

10-11-68

کے اور رقم جمع کر کے ہنس خریدی شہر

کے نام لکھی جاوے گی اور جب

تخصیص سے اُسکا روپیہ دلایا

جاوے اسوقت تکمیل کے

کہاتہ میں جمع کر کے اس شخص

کے اودھ نام لکھی جاوے گی لیکن

جہاں تک ممکن ہو خیال رہے کہ

نیت ماں کی تحصیل سے اسی وقت

دلادیکجا وست تاکه دوباره بیج

میں نے زینا پر۔

1990

کتابخانه و مرکز اسناد و کتابخانه ملی
جمهوری اسلامی ایران

1990

1990

Chrysomelidae

[illegible]

یا تو رکھی جاوے گی —

رکھی جاوے گی —

^۱ ^۲ ^۳
جہاں رکھی جاوے گی — رکھی جاوے گی — رکھی جاوے گی —

جمع خرچ کا کھڑا — کہا — روز

رہی کی جنس کے رکھی جاوے گی — رکھی جاوے گی —

کی جنس کے خرچ کی ہی — روز

رہی کی جنس کے رکھی جاوے گی —

کی جنس کے رکھی جاوے گی —

دکھائی دے رہی تھی کہ وہ دیوانہ کا رکھی جاوے گی

بھی نمبر ۶ مودینا کا کھڑا جنس

۲۷

جنس رکھی د کی جاوے وہ رکھی جاوے گی

خرید کیا وے وہ اول اس کھڑا

رکھی د میں بکے دتا رکھی د و جن مال م

میں بقید تاج و وزن مال سے شرح

رکھی د ہونا م فرہشند کے جس سے جس

و نام فروشنده کے جس سے جس

نس رکھی د کی گئی ہو م رکھی د کی م

خرید کی گئی ہو م رکھی د کی م

کے جہاں رکھی د کی جاوے گی یا نیل رکھی د کی

جمع خرچ کیا وگی یعنی اگر قیمت مال

م رکھی د کی تھیل سے تھیل سے تھیل سے

کی تحصیل سے اس وقت دلائی جا

رکھی د تو تھیل سے رکھی د میں جہاں

تو تحصیل کے کہاتہ میں جمع کر رکھی د

کر رکھی د مال رکھی د کیا گیا ہو اس کے

مال خرید کیا گیا ہو اس کے

اس مال کے نام رکھی د کی جاوے گی اور جو قیمت

نام لکھی جاوے گی اور جو قیمت

کی م رکھی د کی سب سے اس وقت تھیل سے

کسی سبب سے اس وقت تحصیل

ل سے نہ دلائی جاوے گی تو بجا ہے

سے نہ دلائی جاوے گی تو بجا ہے

رکھی د کے اس وقت اس شخص

تحصیل کے اس وقت اس شخص

اور اسے سٹامپ کی بیکری کا ہوا

سٹامپ کی وہی نمبر ۲ میں لکھا جاوے

اور اس کی قیمت سٹامپ کی بھی روز

نمبر ایک میں اسٹامپ

کے منفعہ جمع کیا و گئی اور

جب ایسا سٹامپ فروخت

کیا جاوے گا تو اس پر سٹامپ

نمبر ۱۰ ہونے اور قیمت بھی نمبر

۱۰ میں جمع کئے جانے کی تھی و سید

کے نمبر ۱۰ اور اسوات مندرجہ

دفعہ ۱۰ کے کتبہ جاوے گا اور

سید جو تعمیل سے قیمت سٹامپ

کی نمبر ۱۰ دفعہ ۱۰ کے دیا جائی

وہ سٹامپ کے ماتر

میں سے

میں سے

میں سے

اسٹامپ کی بیکری کا ہوا

کی بھی نمبر ۱۰ میں لکھا جاوے

اور قیمت سٹامپ کی بھی روز

نمبر ایک میں اسٹامپ

کے منفعہ جمع کیا و گئی اور

جب ایسا سٹامپ فروخت

کیا جاوے گا تو اس پر سٹامپ

نمبر ۱۰ ہونے اور قیمت بھی نمبر

۱۰ میں جمع کئے جانے کی تھی و سید

کے نمبر ۱۰ اور اسوات مندرجہ

دفعہ ۱۰ کے کتبہ جاوے گا اور

سید جو تعمیل سے قیمت سٹامپ

کی نمبر ۱۰ دفعہ ۱۰ کے دیا جائی

وہ سٹامپ کے ماتر

میں سے

میں سے

میں سے

جاوے گی اور نہ کسی کو اور

دیا جاوے گا ہر ایک تحصیل اور

رینجامت میں گنما رتا سٹامپ

رہ کر کیا کرے گا - تاکہ لوگوں کو

کو خریدنے میں پہنچا دے -

دفعہ ۲۲ تب کسی کے سٹامپ تھیں لیکن

کا کافی تین مہینے کی بکری کے لئے

راجا کے پوتا رکھے جاوے گی جس کی

س کسی کی سٹامپ اس اندازہ

جا سے کم ہو جاوے فوراً اس کے

لیوے رپورٹ تدر کو کر کے مंगा

لیا جاوے گا لیکن اگر کسی

بکری کسی کی سٹامپ موجود

ن ہووے تو جائز ہوگا کہ سفید

کا گن پر مقرر اس تھیں لیکن

نہ کر کے اور نہ اس تھیں لیکن

دار کے لئے اور نہ اس تھیں لیکن

لیا جاوے گی اور نہ کسی کو اور

پر دیا جاوے گا ہر ایک تحصیل اور

نفاست میں گنما رتا سٹامپ

فروخت کیا کرے گا - تاکہ لوگوں کو

خریدنے میں پہنچا دے -

قسم کے سٹامپ تھیں لیکن

کافی تین مہینے کی بکری کے لئے

کے پوٹ رکھے جاوے گی جس کی

قسم کا سٹامپ اس اندازہ

کے کم ہو جاوے فوراً اس کے

لئے رپورٹ تدر کو کر کے مंगा

جاوے گا لیکن اگر کسی

قسم کا سٹامپ موجود

ن ہووے تو جائز ہوگا کہ سفید

کا غنیر مہر اس تھیں لیکن

نہ کر کے اور نہ اس تھیں لیکن

دار کے لئے اور نہ اس تھیں لیکن

کی کرور لگی کی وہی میں دے کر

مہاراجہ مندر سے لے لیا

مہاراجہ کے لئے آویں گے

تو اس میں نہ کون کون

بے سکونت رہی دار

مہاراجہ کے لئے آویں گے

تو اس میں نہ کون کون

مہاراجہ کے لئے آویں گے

تو اس میں نہ کون کون

مہاراجہ کے لئے آویں گے

تو اس میں نہ کون کون

مہاراجہ کے لئے آویں گے

تو اس میں نہ کون کون

مہاراجہ کے لئے آویں گے

تو اس میں نہ کون کون

مہاراجہ کے لئے آویں گے

تو اس میں نہ کون کون

دفعہ ۵۲ اسٹامپ کی فروخت کی یہی میں مرج

کون میں امورات مندر سے لے لیا

نمودہ نمبر ۵ کے لئے جاوین گے

قیمت اسٹامپ معہ قلعہات

نام و سکونت فریدار

دفعہ ۵۳ اسٹامپ کی فروخت کی یہی میں مرج

جاوین انکی پشت پر مندر سے

بیجا لکھا گیا ہو یا نمبر لکھا گیا ہو

اس کے نیچے سب ذیل لکھا جاوگا

قیمت اسٹامپ رقم اور حروف

میں - نام و سکونت فریدار

وائے کی - نام و نمبر

قیمت اسٹامپ کی فروخت کی یہی میں مرج

دفعہ ۵۴ اسٹامپ کی فروخت کی یہی میں مرج

جاوین انکی پشت پر مندر سے

بیجا لکھا گیا ہو یا نمبر لکھا گیا ہو

کرنے کا پوتا باقی نکالنے میں

اس کا نام سٹامپ کی اصل ہدا

ہدا مقرر ہوا کہ کتنی سال کی

مات سٹامپ کا ایک قسم کے

کی کول کی مات اصل ہدا

دا ہدا نمونا نمبر ۲ کے تھری

ر کی جاوے گی۔

دفعہ ۴۰ میں تھری ر کیا گیا ہے کہ

کی جب کبھی سٹامپ کی فروخت کی

ہوئی ہو یا سدر سے آئی ہو

لیکھ کر جمع کرنا چاہیے

لیکن شروع سال و شروع

روز اگر سٹامپ کی فروخت کی

ہوئی ہو یا سدر سے آئی ہو

تو بھی سٹامپ کی فروخت کی

سٹامپ کی فروخت کی

نی چاہیے۔

کے جمع کرنے کے لئے

اسٹامپ کی فروخت کی

مات سٹامپ کی فروخت کی

سٹامپ کی فروخت کی

سٹامپ کی فروخت کی

سٹامپ کی فروخت کی

سٹامپ کی فروخت کی

سٹامپ کی فروخت کی

سٹامپ کی فروخت کی

سٹامپ کی فروخت کی

سٹامپ کی فروخت کی

سٹامپ کی فروخت کی

سٹامپ کی فروخت کی

سٹامپ کی فروخت کی

سٹامپ کی فروخت کی

کہا دینے ہر گناہ تہ پھر ہونے سے رکھا

مادری کی جاوے گی -

مہ سوتی مہ سوتی ستامپ

ہر سوتی ستامپ میں جن کا مہ ستامپ

مہ سے جاوے یا کونے ستامپ

مہ سے فرور ہونے ہووے تو مہ لگا

کا مہ لگا جو ستامپ ستامپ کا مہ

تا ہووے وہ لکھا جاوے گا اور

کا مہ لگا جس کا مہ ستامپ

مہ سے اس مہ لکھا ہو گا

کا لکھا جاوے گا اور مہ لکھا ہوگا

کی مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

کا مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

کا مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

کا مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

کا مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

کا مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

سے مہ لکھا ہوگا اور مہ لکھا ہوگا

مہمان نمبر ۲ کے تھپا کر کر کے مہمان جیوگا	ظہار کر کے بھیجا جاوے گا
دفعہ ۱۱۱ جو آٹھ کڑا سا لانا ہر دفعہ والا	۲۰ انگریز سالانہ حسب دفعہ بالا
۪۱۱	کے صدر میں بھیجا جاوے گا
کے صدر میں بھیجا جاوے گا	اوسکی ایک نقل تحصیل میں کریں
کول تھسیل میں رکھی جاوے گی اور	جاوے گی اور اس نقل کے بھی کے
رہت نہ کول کے وہی کے پانچ بھی	پانچ بھی شمول ہی نمبر ۳ ماہواری
مہمان وہی نمبر ۳ ماہواری ہر سال	حالیہ سالہ انگریز کے رنگ لائے جاوے گئے
سا لانا آٹھ کڑا کے سب لائیے جاوے گئے	ماہواری حساب و سالیانہ انگریز حسب
دفعہ ۱۱۲ ماہواری ہر سال سالیانہ آٹھ کڑا	دفعات بالا کے ظہار کے جاوے گئے
۪۱۲	اور اول کہا ہے ہی نمبر ۲ سے مختصر کرتے
مہمان بد دفعہ والا کے تھپا کر کے جاوے	چوتھے میں انگریز اوتار و میلان کر کے
مہمان اور انہی کے تھپا کر کے جاوے	ہی نمبر ۳ میں اوتار سے جاوے گئے
مہمان اور انہی کے تھپا کر کے جاوے	ماہواری غلطی نہ ہے اور یہ کچھ چوتھے
مہمان اور انہی کے تھپا کر کے جاوے	تحصیلات میں بنائے جاوے گئے
مہمان اور انہی کے تھپا کر کے جاوے	اور جو نقصان ماہواری جمع ہوگا
مہمان اور انہی کے تھپا کر کے جاوے	مہمان نمونہ نمبر ۱ کے رکھا
مہمان اور انہی کے تھپا کر کے جاوے	جاوے گا وہ اس ہی نمبر ۳

میں شامل کر کے بطور بھی کر رہا تھا
 اور ان حسابوں کا صدر میں جمع
 خراج ہو کر کل ریاست کا ایک سا
 طیار ہو گا لیکن تفصیلات سے اتنا
 ہر ایک مہینے کے اندر ایک انگڑی
 یعنی گوشوارہ افسر خزانہ و خزانچی
 کے تحت ہو کر بجایا جاوے گا۔
 زمین رقومات اسلی آمدنی و خراج
 سمیت کے مطابق سیغہ دار اور
 سیغہ کے پٹے کے مطابق زمیندار
 اور ہر ایک نمبر کے پٹے میں
 ماہواری ایک ایک رقم لکھ کر
 میزان سالنامہ کی ہر ایک سے
 پرکھدی جاوے گی اور جو
 صدر کے اور رقم کہا تو کی جیت
 دیکھ کی ہووے وہ بھی کہا جائے
 و کہتہ دار کے مہینہ ماہوار کر

महोने मे दास गज के जवर नव्या -	से दस रुफ के अन्धे पियार कर
सका भेन दिया जाने -	बिछो दिया जावे -
गनी यानी रवर्च व उधर नवा -	दफ्ते भर्ते यिनी खर्च दाद रतह
कीनेन यानी वाजिबु तलब कीर -	बाती लने लने वाजिब तलब की
भूत के नीचे अन्न हदा सीगा	रकाम के नीचे एलिहद सिफे
गोता वा की यानी मौजूदा त बाद	पुष्ट बाती लने मौजूदा त बाद
मे सि के वार मञ्जु स्टाम्प के नि	सक दारमे स्टाम्प के
तनी चाहिये -	लकखनी जाये -
नाना भां काड़ा यही नम्बर ३ से जोना	दफ्ते सालाना अन्धे नम्बर ३ से जोना
हारे तिसाव के लिए रक्की गई है तय्यार	सब के लिये रक्की है तय्यार
भूमि नम्बूना नम्बर ४ के किया जावेगा -	बुजिब नम्बूना नम्बर ४ के किया जावेगा
शाल में जो सावह मुफ्त से तालतमा	दफ्ते हाल में जो सावह मुफ्त से तालतमा
नके तहसीलात से तय्यार दो कार में जे	सके तहसीलात से तय्यार दो कार में जे
गते हैं भेते सावह भेजे जाने की को ई	जाते हैं भेते सावह भेजे जाने की को ई
महलत नही कोवि। हिसाद बाहवा	कोवि। हिसाद बाहवा
री जो मुफ्त से तालतमा	कोवि। हिसाद बाहवा
के भेजा जावेगा वरु महलत	कोवि। हिसाद बाहवा

को नाहिये कि माहवारी हिसान २. अंको पाये कि माहवारी حساب
 मृजिव दफ्त ४० के तय्यार नितरगजा मजबूब दफ्तर ४० के तय्यार नितरगजा
 ने और मृजिव दफ्त वाला के कुल और मजबूब दफ्तर वाला के कुल
 का गजात उनके साथ होने का और को अंके साथ हो निका और कुली खर्च
 ई खर्च ज्यादा धन ज़रूरत तय्यार तहसाल आखिरा तहसिल का बिलद حصول منظوری
 का बिना हसूल मंजूरी के असली खर्च के اصلی खर्च के सिغने में दर्ज
 के नीचे मे दर्ज नीचे जंग का इतमीनान नहीं के जाने का اطمینان
 पढ़कर वसंभाल कर कर लिया करें और सنبहाल कर कर लिया करें और
 जो तहसीलदार हिन्दी न जानना हो उसको हिन्दी न जانتा हो उसको
 भी गीहिये कि उसका इतमीनान का गजात असका اطمینان का غذات
 पढ़वा कर कर लिया करें बाद उसके कर लिया करें बाद उसके
 स्तर खत खजानची के करा कर और के करा कर और
 पने दस्तर खत कर करा हिसाब भेजा करे - बھیجا کرے -

दफ्त ४३ हिसाब माहवारी सुद १ से बद
 मावस तक जैसा हाल में तय्यार बदमावस तक जैसा हाल में तय्यार
 किया जाता है किया जावे और हिसा किया जाता है किया जावे और
 ब माहवारी बदमावस को महिना ख माहवारी बदमावस को महिना ख

۱
دہریہ دہریہ سیدوں کی پہلی پرت

۲
کدو اس مہینے میں اکٹھی ہوں

۳
بہت نیکال کر مہج دے

۴
میں ہکموں کے ذریعہ سے روپے

۵
ماتھ سہیل سے دیا گیا ہوا اور

۶
سیدین جو علیحدہ کی گئی ہوں

۷
آئین مہینہ می نخواستہ ملا زمان

۸
ماہواری تاننا کھانا مولا جی مان

۹
کا کب جوں لکھو مولا یا اہل ہٹار

۱۰
سید جانی گدی دوشاں مل سہمی لالہ

۱۱
جہاں مہجری مہک مہنیا مہنیا یا اہل

۱۲
کیتی مہک مہنیا دالاد سے واسنیک

۱۳
سہرے کے لگی گدی ہو اہل ہٹار

۱۴
مہینے میں اس سہلی سہلی مہنیا

۱۵
سہلی مہنیا مہنیا مہنیا مہنیا

۱۶
سہلی مہنیا مہنیا مہنیا مہنیا

۱۷
سہلی مہنیا مہنیا مہنیا مہنیا

۱
چھپی ہوئی رسیدوں کی پہلی پرت

۲
جبکہ اس مہینے میں اکٹھی ہوں

۳
کتاب سے نکال کر بھیج دیوں

۴
جن حکموں کے ذریعہ سے روپے

۵
خزانہ تحصیل سے دیا گیا ہوا اور

۶
رسیدین جو علیحدہ کی گئی ہوں

۷
آئین مہینہ می نخواستہ ملا زمان

۸
کافینٹل روپوں یا علیحدہ رسید

۹
ہوئی اسی ہوش میں بھیجا دے گی

۱۰
بہشت میں بھیج دے گی یا اور

۱۱
سہلی مہنیا مہنیا مہنیا مہنیا

۱۲
سہلی مہنیا مہنیا مہنیا مہنیا

۱۳
سہلی مہنیا مہنیا مہنیا مہنیا

۱۴
سہلی مہنیا مہنیا مہنیا مہنیا

۱۵
سہلی مہنیا مہنیا مہنیا مہنیا

۱۶
سہلی مہنیا مہنیا مہنیا مہنیا

۱۷
سہلی مہنیا مہنیا مہنیا مہنیا

सरेलिरव देवे और जो कुछ जमा हुआ

आ हो तो लेखकी रकम का जोड़

देकर उसके नीचे वाद यानी मिनहा

ईकरके रकूमात जमा की मित्ती वार

मअ हाल खुलासा जमा के लिरव व

जोड़ देकर बाकी सरेलिरव देवे -

नोट अव्वल जो रकूमात रकम व उगाही की

वही के रवाते में जिस मित्ती में जमा होवे या न

मलिरवी जावे या मुआफी की जीवे तो उसमें

तफसील गांव वार होवे तो गांव वार और आ

सामी वार होवे तो आ सामी वार लिरवनी वा

हिये ताकि सदर की रकम व उगाही की वह

यात में गांव वार या आ सामी वार रकूमात

खसाने में सहूलियत रहे -

अब हिसाब माह वारी नमूनी जबदफ़्त

याता के भजा जावे तो उस के माह का

गज हत्व जैल भजने चाहिये -

सरे लकंदियून और जो कچه جمع

होवा हो तो लिखने की रकम का जोड़

असके निचे बाद یعنی सनहाई करके

रकूमात जम की मित्ती वार मउ हाल

खलासे जम के लकंदियून और जोड़

बाकी सरे लकंदियून -

नोट आल जो रकूमात रकम व उगाही की

वही के रवाते में जिस मित्ती में जमा होवे या न

मलिरवी जावे या मुआफी की जीवे तो उसमें

तफसील गांव वार होवे तो गांव वार और आ

सामी वार होवे तो आ सामी वार लिरवनी वा

हिये ताकि सदर की रकम व उगाही की वह

यात में गांव वार या आ सामी वार रकूमात

खसाने में सहूलियत रहे -

अब हिसाब माह वारी नमूनी जबदफ़्त

याता के भजा जावे तो उस के माह का

गज हत्व जैल भजने चाहिये -

सरे लकंदियून

होवा हो तो लिखने की

रकम का जोड़

असके निचे बाद

बाकी सरे लकंदियून

नोट आल जो

रकूमात रकम व

उगाही की वही

के रवाते में

जिस मित्ती में

जमा होवे या न

मलिरवी जावे

या मुआफी की

जीवे तो उसमें

तफसील गांव

वार होवे तो

गांव वार और

सुमनसो जगदीश्वर्योऽयं भगवत्पुत्र उग्र

सहितमें सुख दिखन नया केना पड़ा

[illegible]

जिनजिन खातों में लेना होवे वह

भारती यानी स्वर्च की। स्वर्मात के

धड़े के नीचे बाकी लेने के नाम से

लिखकर उसके पेट में रखा तब वार

दर्ज कर देवे और हर एक खाते के

पेट में जो रक्तम पिछले नहिने

की उसमें बाकी होये तो वह पक्ष

मोहने के हवाला सड़क द्वाला सड़क

पञ्जरिजरकुमानेति

संकेतनाम

... ५

असंख्यतेनैककृजमानेहृष्याति

لکھدیا وین اور اگر اس پہنچے

کچھ دیا نہ گیا ہو تو دھڑا دیکر ہے

لکھدیا جاوے۔ - دویم جن میں

کہا تو میں لینا ہووے وہ

بہر تے یعنی خرچ کی رقومات کے

دھڑے کے نیچے باقی لینے کے

نام سے دیکھ کر اسکی پیٹھ میں کھینچ

درج کردیوین اور ہر ایک کہانہ
کہ مشہور ہے۔

کے لیے جو رخصت ہوئے، اپنے کی

مہمند کے حوالہ سے اکثر کتب میں

اور جو رقومات اُس سے ملے ہیں

کہا کہ نام لکھی گئی ہوں :-

متی اور مصنفہ خانہ صہ عمالی کے نام

لکھنؤی جادین اور جو اس میں

میں اس کہانے میں بڑھ چمٹ نہ ہوا

ہدایت ان رسومات : درمیان

مستلجما یا رخصہ کا ایسی ترہ پرست
جمع یا خرچ کا اسی طرح تحریر کیا جاوے

ہرگز کیا جاوے کہ بخلی جہان
کہ اول جن جن کہا توں میں دنیا ہو

رہا توں میں دینا ہو وہی توں کے میں
انگو جمع کے نیچے باقی دینے کے

واکی دینے کے نام سے لکھ کر پتے میں
نام سے لکھ کر پتے میں کہا تہ دار

تہ وار لکھ کر دے وہی اور اس کے پتے میں
لکھ کر یوں اور اس کے پتے میں جو

جو پتے میں مہینے میں اسی کہا تہ دار
پتے میں مہینے میں اسی کہا تہ دار

کا دینا ہو وہی جب تو ایک رقم
کا دینا ہو وہی جب تو ایک رقم

بجو الہ پتے میں مہینے کے وہ جمع کر
بجو الہ پتے میں مہینے کے وہ جمع کر

بجو دین اور اس کے نیچے جو قومات
بجو دین اور اس کے نیچے جو قومات

اس مہینے میں جمع ہوئی ہوں تو
اس مہینے میں جمع ہوئی ہوں تو

وہ مہینے وار مہینہ خلاصہ حال جمع کے
وہ مہینے وار مہینہ خلاصہ حال جمع کے

لکھ کر دین اور اس مہینے میں
لکھ کر دین اور اس مہینے میں

کچھ دیا گیا ہو تو اوپر کی قومات
کچھ دیا گیا ہو تو اوپر کی قومات

کی میزان یعنی دھڑا و کیرا اس میں
کی میزان یعنی دھڑا و کیرا اس میں

وہ مہینے وار مہینہ خلاصہ حال کے
وہ مہینے وار مہینہ خلاصہ حال کے

لکھ کر دین اور اس مہینے میں
لکھ کر دین اور اس مہینے میں

اور باقی سکون اور اس میں
اور باقی سکون اور اس میں

जिस महिने में उसका काम पड़े

स महिने को अव्वल उस राते के पेटे

में कायम कर लेवें और जो सकया

कई रकूमात उस महिने में उस रा

ते की आवें वह उस महिने के पेटे

में रबत्या कर अव्वल कुल महिने की

रकूमात की रुकरकम बूक ही उस म

हिने के सिरे पर दर्ज कर दी जावें कि

जिससे माहवारी हिसाब तय्यार

करने में सहूलियत रहे—



मददोयम हिसाब माहवारी और

रक्षा कड़ा सालि याना तय्यार

कगने और भेजने का तरीका —

माहवारी हिमाद के लिये मफ बही

रक्षा जावेगी दूम बही में हिमाद

माहवारी बही नम्बर १५२ में दान

ن میں جس مہینے میں اسکا

پرے اُس مہینے کو اول اُس

کے پیٹہ میں قائم کر لیوین اور

ایک یا کئی رقومات اُس مہینے

اُس کہاتہ کی آوین وہ اُس

لینے کے پیٹہ میں کہتیا کر اول

مہینے کی رقومات کی ایک

م اکتھی اُس مہینے کے سرے

پر درج کر دی جاوین کہ جس سے

ماہواری حساب طیار کرنے میں

سہولیت رہے —

مَدَدِ یَمِ حسابِ ماہواری اور

اگرہ سالیانہ طیار کرتے

نے کا طریقہ —

اب کے لیے ایک

اس بھی میں

بھی نمبر اور

روزنامہ میں نمبر کہا ہے کہ پانچ
 جہاں میں نہ سہارے کے پانچ کا
 جس میں وہ رہا کہم رہا تھا وہ جاوے
 کر دیا جاوے گا - اور ایک
 خط کا نشان حاشیہ پر دیا جاوے
 گا کہ اس رقم کے بہت جانے
 کا خیال رہے اور کہاتے ہیں
 رقم ہتھائی جاوے اول روزنامہ
 کے پانچ کا نمبر ورج کر دیا جاوے
 تا کہ موت اس رقم کے دیکھنے
 کی ضرورت ہو وہ آسانی سے
 دیکھ لیا کہ جیسا کہ نمونہ
 نمبر ۱۲ میں کیا گیا ہے -
 دفعہ ۱۲ کہا ہے مندرجہ دفعہ ۱۲ میں
 روزنامہ کے ہتھائی کے
 دفعہ ۱۲ میں ذکر کیا گیا
 ہے کہین وقت ہتھائی کے
 جو کہ ہتھائی کے ہتھائی کے

نے کے پانی پر بند لے رکھتا ہے اور

رخصت کی رخصت کے اور بعد اسکے

سدر کے بموجوب اوپر کے کہاتے

ڈالے جاویں اور پھر مناسب

گھٹو ڈھک کر دھڑکا رکھتا ہے اور

بہیوں کا اور بعد میں بھی بہیوں کا

یوں کا اور پھر اور تھکے کہاتے حسب

ضرورت بموجوب نمونہ نمبر ۱ کے

ڈالے جاویں تھکے نمونہ نمبر ۲

میں واسطے سمجھانے کے صرف

چند کہاتے ڈالے گئے ہیں لیکن

اس کہاتے بھی میں حسب ضرورت

کہاتے ڈالے جاویں -

اس کہاتے بھی مندرجہ ذیل

میں رقعات روزنامہ بھی نمبر ۱

کے اہتمامی جاوینگی اور یہ وقت

خرچ کے یعنی اول کہاں سے

اصلی خرچ کے اور بعد اسکے

کے بموجب اوپر کے کہاتے

ڈالے جاویں اور پھر مناسب

جگہ پر ڈھک کر دھڑکا رکھتا ہے اور

بہیوں کا اور بعد میں بھی بہیوں کا

یوں کا اور پھر اور تھکے کہاتے حسب

ضرورت بموجوب نمونہ نمبر ۱ کے

ڈالے جاویں تھکے نمونہ نمبر ۲

میں واسطے سمجھانے کے صرف

چند کہاتے ڈالے گئے ہیں لیکن

اس کہاتے بھی میں حسب ضرورت

کہاتے ڈالے جاویں -

اس کہاتے بھی مندرجہ ذیل

میں رقعات روزنامہ بھی نمبر ۱

کے اہتمامی جاوینگی اور یہ وقت

क़त्तल से जारी कर दी जावे और जो	माल से जारी कर दिया और
आमदनी व खर्च पालेन दैन चल्ता	आमदनी व खर्च पालेन दैन चल्ता
लका हो वह इन बहियात में लि-	माल का हो वह इन बहियात में
खा जावे - वही नम्बर खाता -	लेखा जावे - वही नम्बर २ खाता -
इस खाता वही में अबल खाता ज-	इस खाता वही में अबल खाता ज-
मा के सी गे वार बह चालानम्बर व-	मा के सी गे वार बह चालानम्बर व-
जट के मुतवा तिर हस्ब जूरत मु-	जट के मुतवा तिर हस्ब जूरत मु-
नासि च जगह छोड़ छोड़ कर डाले	नासि च जगह छोड़ छोड़ कर डाले
जावे और हर एक सी गे के पेटे	जावे और हर एक सी गे के पेटे
में जो बजर में पेटे के सी गे काय-	में जो बजर में पेटे के सी गे काय-
म किये गये हैं उनके खाते भी	म किये गये हैं उनके खाते भी
हस्ब जूरत डाले जावे और खा-	हस्ब जूरत डाले जावे और खा-
द उस के मुनासि च जगह छो-	द उस के मुनासि च जगह छो-
डकर खाता सदर का खर्च	डकर खाता सदर का खर्च
सके से दे नो सी गे वार खाते	सके से दे नो सी गे वार खाते
ने जावे और खाते वही मु-	ने जावे और खाते वही मु-
शुद्ध जगह छोड़ छोड़ कर डाले	शुद्ध जगह छोड़ छोड़ कर डाले

اور تھناے یا جمع لکھ کر یہ۔ رت نامہ یا جمانا لکھ کر یہ۔

اور تمہ کہاتے دونو بیٹوں میں

برابر کر دیا جاوے اور جس قدر
 کر دیا جائے اور جس قدر

پچھلے سال کی تہی بند کی جاوے |
 کھڑے سال کی تہی بند کی جاوے |

اِس روز چلو سال کی بھی کی منی میں

پچھلے سال کی بہیات کا رویہ

بانی کا جمع کر لیا جاوے اور یوں

پہیوں میں جس روز مٹی بند

کیجاوے اسی روز یوطہ کا پتہ

نئی بیہیون کے نام کچوالہ اس

متنی کے جمیع رویہ نئی بہمنوں

مین جمع کیا گیا ہو لکھا جاوے۔

۱۰۰ سال میں شروع سال میں

سال کا روزنامہ پندرہ

۱۔ کہلار کہنے اور لکھنے

لکھی بہیہ سے مشورہ

لکھی بہیہ سے مشورہ

کینیت کدر تپوں کی زکھرت ہو

وہ یا جیت کدر سونا سبب تہم

کا جاوے پھلے سال کے پوتا کے

اُپر رت جگا کر کر رپ والے

لیا جاوے اور پھلے سال کی

ہیلا تہم نر سال کے پوتا کے

اُپر رت نامہ لیت دیا جاوے اور

رہی تہم سے آگار گنج پتا سا

ل کی بھیا تہم میں رپے کی زکھرت

رت ہووے تو نر سال کے پوتا کے

اُن بھیا تہم میں جگا کر کر

گیا ہر زکھرت لے لیا جا

وہ اور بھیا تہم میں

پھلے سال کے پوتا کے اُپر رت

میں لیت کر دے دیا جاوے اور

ب پڑھتے جگہ تہم میں

نہی بھرت لے لیا جاوے اور

ہندوین کو چاہئے کہ حقد رپے

کی ضرورت ہووے یا حقد رپے

بجھا جاوے پھلے سال کے

پوتا کے اُپر رت جمع کر کر

لے لیا جاوے اور پھلے سال

کی بھیا تہم میں نر سال کے پوتا

کے اُپر رت نامہ لیت دیا جاوے اور

اور اسی طرح سے اُپر رت

سال کی بھیا تہم میں رپے کی

ضرورت ہووے تو نر سال کے

پوتا کے اُن بھیا تہم میں

جگا کر کر رپے کی ضرورت

لے لیا جاوے اور پھلے سال کی

بھیا تہم میں پھلے سال کے پوتا کے اُپر

رت نامہ لیت دیا جاوے اور

جب بندہ روئے مقررہ کے

تحتی بندہ لے لیا جاوے اور

باد پندرہ روز کے متی بند کر کے

جو پوٹا باقی ہو وہ چلو سال کی بہت

ہیانت میں جما کر لیا جائے اور اس

کے بعد جو چار سال گزشتہ کا

کا ہو وہ چلو سال کی بہت

میں جما کیا جائے۔

بعد پندرہ روز کے متی بند کر کے

جو پوٹا باقی ہو وہ چلو سال کی بہت

میں جما کر لیا جائے اور اس کے

بعد جو چار سال گزشتہ کا

ہو وہ چلو سال کی بہت

میں جما کیا جائے۔

دفعہ ۳۳ سال آخر کی پر پندرہ روز تک

۳۳

جیو دفعہ والا کے پورانی بیوں میں

نیتو رولی رکھی جاسکتی ہے لیکن

سیرے پر مٹی چیت بدی اما دس کی لگی

تیرے گی جو پندرہ روز تک لین

ہو گا وہ بوالہ ہر ایک متی کے اسی

کے ہستی حساب میں لکھنا ہو گا۔

سال آخر کی پر پندرہ روز تک

دفعہ والا کے پورانی بیوں میں

کبھی رکھی جاسکتی ہے لیکن

پر مٹی چیت بدی اما دس کی لگی

رہی گی جو پندرہ روز تک لین

ہو گا وہ بوالہ ہر ایک متی کے اسی

حساب میں لکھنا ہو گا۔

دفعہ ۳۴ اگر چلو سال میں خیر کے لئے

۳۴

پے کی جرت ہو وہ اور اس سال

کے پے جرت سے کم ہو وہ یا

اگر چلو سال میں خیر کے لئے

روپیہ کی ضرورت ہو وہ

اور اس سال کے روپیہ ضرورت

کے کم ہو وہ یا بالکل ہو

فصل ۲۲ میں جی کر لیا گیا ہے کہ

ن رکھتا ہے کہ اس کی جی

میں وہی جی کر لیا گیا ہے کہ

مندر جی کر لیا گیا ہے کہ

مندر جی کر لیا گیا ہے کہ

یا با د میں جی کر لیا گیا ہے کہ

ہو گیا ہے کہ

رخ کر لیا گیا ہے کہ

رہی کر لیا گیا ہے کہ

کے بھالہ ن مکر تارہ مکر

اپنے اپنے جی کر لیا گیا ہے کہ

رخ کے اوپر کر لیا گیا ہے کہ

کر لیا گیا ہے کہ

فصل ۲۳ میں جی کر لیا گیا ہے کہ

۳۳

مکر تارہ مکر تارہ مکر

مکر تارہ مکر تارہ مکر

مکر تارہ مکر تارہ مکر

دفعہ ۲۲ میں ذکر کیا گیا ہے لیکن

رقوات خج کے صرف اصلی

میں وہی جی کر لیا گیا ہے کہ

مندر جی کر لیا گیا ہے کہ

خرچ کرنے کی کماغت نہ ہو یا بعد

میں جی کر لیا گیا ہے کہ

علاوہ اس کے باقی رقومات جو

کی ہو دین اور تھم کر لیا گیا ہے کہ

جاوین اور بعد حاصل کرنے منظور

کے بجاوہ نمبر و تاریخ منظوری کے

اپنے اپنے اصلی معیون میں خج

لکھ کے اور تھم کر لیا گیا ہے کہ

میں کر لے جاوین -

۲۴ آخر سال پر تہی بندہ روز تک

آخر مہینے کے پہلی رکھی با د

اور جو مہینے خج سال گذشتہ کا ہو

وہ بھی یہاں میں کیا جاوے

میں کیا گیا ہے اور نمونہ ہذا میں

واٹسے سمجھانے کے صرف مجموع

خرچ میں رد و کا کیا گیا ہے اسی

طرح سے تمام مہینے کا کیا جاوے

دفعہ ۳۰ سرکاری خرج پر جو سور و غیرہ نہیں

لپار جہے اُس کے لئے اور مودعی بنائے

کی جنس کی خرید کے لئے دور کے

خرچ وغیرہ کے لئے جو روپیہ پیشگی

دیا جاوے وہ اود تھ نام لکھا

جاوے اور جب اسکا حساب

داخل کیا جاوے تو اود تھ خرج

ہو کر اصلی خرج کے مستحق میں

کیا جاوے جبکہ نمونہ نمبر ۱

میں کیا گیا ہے۔

میں کیا گیا ہے اور نمونہ ہذا میں

واٹسے سمجھانے کے صرف مجموع

خرچ میں رد و کا کیا گیا ہے اسی

طرح سے تمام مہینے کا کیا جاوے

سرکاری خرج پر جو سور و غیرہ نہیں

پر جاوے اُس کے لئے اور مودعی بنائے

کی جنس کی خرید کے لئے دور کے

خرچ وغیرہ کے لئے جو روپیہ پیشگی

دیا جاوے وہ اود تھ نام لکھا

جاوے اور جب اسکا حساب

داخل کیا جاوے تو اود تھ خرج

ہو کر اصلی خرج کے مستحق میں

کیا جاوے جبکہ نمونہ نمبر ۱

میں کیا گیا ہے۔

دفعہ ۳۱ جو تو مبالغہ اصلی جمع یا خرچ تھانے

میں کہیں کے ہووے وہ اصلی

سیفون میں جمع خرچ کرنے کے

کین سال آخری پر جس کا درجہ کما

باقی رہ جائے وہ ان کا مجموعہ اس

ہے اس طرح کر لیا جاوے کہ وہ

رقومات آمدنی میں صدیقہ وار

جمع کر کے نئے یعنی آئندہ سال

کی بیانات کے لئے لکھ کر اٹکے پٹے

میں دیہہ واریہ سامی وار مفصل

درج کر لیا جاوے جیسا کہ نمونہ

نمبر ۱ میں کی گئی ہے۔

جیلانی کے قیدیوں کی خوراک

اور تولید کے اسیان کے

دانہ وغیرہ کے خرچ کا حساب

روزانہ کی ضروریات کی بیانات

میں سے لے کر دیگر چیزیں

کیا جائے گی ان بیانات سے

معلوم ہوگا کہ جس قدر

کے لئے کیا گیا ہے۔

لیکن سال اخیر جس قدر رقومات باقی

رہ جائیں ان کے مجموعہ اس

میں اس طرح کر لیا جاوے کہ وہ

رقومات آمدنی میں صدیقہ وار

جمع کر کے نئے یعنی آئندہ سال

کی بیانات کے لئے لکھ کر اٹکے پٹے

میں دیہہ واریہ سامی وار مفصل

درج کر لیا جاوے جیسا کہ نمونہ

نمبر ۱ میں کی گئی ہے۔

جیلانی کے قیدیوں کی خوراک

اور تولید کے اسیان کے

دانہ وغیرہ کے خرچ کا حساب

روزانہ کی ضروریات کی بیانات

میں سے لے کر دیگر چیزیں

کیا جائے گی ان بیانات سے

معلوم ہوگا کہ جس قدر

کے لئے کیا گیا ہے۔

۲۴

देहे धार जमावे रक्च रकम वसगा-

ही की बहियात में जिसका जिक्र

पाँच होगा किया जावे और इस वही

में से सी रकूम त रकम व उगाही की

बहियात के नाम से दर्ज कर ली जावे

और उसके पेटे में कुल न फ़ सील द

ज कर दी जावे जैसा कि नमूना न-

म्बर ९ में किया गया है -

दफ़्त २८ रकूम त माल मिसल बन्धा सरदार

न व जर ठे का दे हात खाल साव जकात

वगैरः जो सालाना सदर से कायम हो

कर फ़ि हरिल्ल जावे उत्त का ग़बल

जमा रक्च तो बहियात रकम व उगाही

में होगा कि जिसका जिक्र मद पाचवीं

में किया जावेगा और इस वही में सबल

और रकूम त व तल होंगी सिर्फ वही

उत्तली सींगे में जना की जावेगी ने-

दीये दारिज व خرج रकम दावगा

की बीयात में जिसका जिक्र पाँच होगा

किया जावे और इस बीयात

रकूम त रकम दावगा की बीयात

के नाम से दर्ज कर ली जावे

और उसके पेटे में कुल न फ़ सील द

कर दी जावे जैसा कि नमूना न-

म्बर ९ में किया गया है -

रकूम त माल मिसल बन्धा सरदार

न व जर ठे का दे हात खाल साव जकात

वगैरः जो सालाना सदर से कायम हो

कर फ़ि हरिल्ल जावे उत्त का ग़बल

जमा रक्च तो बहियात रकम दावगा

में होगा कि जिसका जिक्र मद पाचवीं

में किया जावेगा और इस वही में सबल

और रकूम त व तल होंगी सिर्फ वही

उत्तली सींगे में जना की जावेगी ने-

जमा करके जिन जिन आतामियान

में बाकी हों उनके नाम लिखना चा-

हिये और जो बहियात साल गुजिस्ता

में किसी का देना हो तो बहियात साल.

हालमें उनपिछले साल की बाकी के

नाम लिखकर उन शरवों के नाम से

जमा की जावे-

جمع کر کے جن جن اسمیان میں

باقی ہوا انکے نام لکھنا چاہئے اور

جوہیات سال گذشتہ میں کیے

دنیا ہو تو بہیات سال حال میں

اُن پچھلے سال کی باقی کے نام ٹکھنکر

ان شخصوں کے نام سے جمع

کیجاوے۔

۲۷ دفعہ جو کہ دفعہ بالامین کھپائی ہو میں کے

لین دین کا صحیح خرچ اسامی و در

تحریر کرنے کے لئے وجہ کیا گیا ہے

لیکن رقومات مال کی بقایا اکثر

دیہات میں رہا کرتی ہے اور

ہر ایک وسیعہ کا غلیظہ علیہ

کہاتے ہوئے سے اس بیہوش

من کنز الدقائق و البحر المحیط

! سواری حساب تیار کرنے

میں وقت ہو گا۔ سنے انا

दफ़्तर जोकि दफ़्तरवाला में पिछली बहि-

२७
यों के लेनदेन का जमा खर्च खासामि

बारतहरि करन केलिये दर्ज किया

गया है लेकिन एक मात माल की बका

या शब्दों से दाव में गदा काती है

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

आर्य समाज के अंगीकार

हृदयस्थानां डालिन स उन बाह्य बा-

त म कार र बाइ दद जीवि मी जीर

महामारि विनाशक व्यापारक

۲۵ میں رہے گا جس میں تمام کروڑوں

دا کی تاداد مقرر کی گئی ہے۔

۲۶ وہی اس کا دوسرا روزہ ہے۔

۲۷ جس میں سے پوٹا ہوا اسٹامپ

۲۸ کا نیکالے جاوے گا۔

۲۹ وہی اس کا دوسرا روزہ ہے۔

۳۰ اس کے بعد اس کی

۳۱ میں جمع کر لیا جائے۔

۳۲ جو کسی لینا یا دینا سال گذشتہ

۳۳ میں رہا ہو اور اس کا جمع خرچ اس

۳۴ سال یعنی سال روان کی ہی

۳۵ میں کیا جاوے تو وہ قریب

۳۶ اگر یہ بات سا گذشتہ میں کی

۳۷ اس میں ہو تو اس میں

۳۸ سال روان کی ہی ہو جائے

۳۹ یعنی سا گذشتہ کی ہو جائے

۴۰

۴۱

۴۲

۴۳

۴۴

۴۵

۴۶

۴۷

۴۸

۴۹

۵۰

۵۱

۵۲

۵۳

۵۴

۵۵

अलावह रकूमात मुंदरजैद फ० प्र० २२

व० २३ के जो रुपया किसी को पेश-

गी दिया जावे या किसी का प्रमानत

जमा किया जावे तो उसका जमा रच

उसके नाम से बहवाला उधरत के ब

मूजबन मूना नम्बर १ के किया जावे

लेकिन जो रकूमात असली सीगा आम

दनी की होवे वह जहां तक हो सके उ-

धरत जमा न की जावे क्योंकि उध-

रत में जमा करने में फिर दुबारा

जमा रच करना पड़ता है -

जो स्ताम्य तहसीलात में सदर से आ

वे वह असली सीगे में जमा करें

और रोज मरह पोता बाकी में नि

कालें जैसा कि नयद का जमा त

च किया जाता है और स्ताम्य का त

फतील बार जमा रच बहानम्बर

२२ एलावह रकूमात सदर जैद دفعه २२

२३ के जो रुपया किसी को पेश

दिया जावे या किसी का प्रमानत

जमा किया जावे तो उसका जमा रच

उसके नाम से बहवाला उधरत के ब

मूजबन मूना नम्बर १ के किया जावे

लेकिन जो रकूमात असली सीगा आम

दनी की होवे वह जहां तक हो सके उ-

धरत जमा न की जावे क्योंकि उध-

रत में जमा करने में फिर दुबारा

जमा रच करना पड़ता है -

जो स्ताम्य तहसीलात में सदर से आ

वे वह असली सीगे में जमा करें

और रोज मरह पोता बाकी में नि

कालें जैसा कि नयद का जमा त

च किया जाता है और स्ताम्य का त

फतील बार जमा रच बहानम्बर

۵۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

دا کی تا دا د مقرر کی گئی ہے۔

۶۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۷۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۸۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۹۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۱۰۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۱۱۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۱۲۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۱۳۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۱۴۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۱۵۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۱۶۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۱۷۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۱۸۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۱۹۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۲۰۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۲۱۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۲۲۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۲۳۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۲۴۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۲۵۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۲۶۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۲۷۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۲۸۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۲۹۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۳۰۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۳۱۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۳۲۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۳۳۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۳۴۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۳۵۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۳۶۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۳۷۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

۳۸۰ میں رہے گا جس میں ستامپ کروڑ روپے

अलावह रकूमात मुंदर जेद फ० २२

व २३ के जो रुपया किसी को पेश-

गी दिया जावे या किसी का प्रमानत

जमा किया जावे तो उसका जमा खर्च

उसके नाम से बहवाला उधरत के ब

मूजिवन मूना नम्बर १ के किया जावे

लेकिन जो रकूमात असली सीगा आम

दनी की होवे वह जहां तक हो सके उ-

धरत जमा न की जावे क्योंकि उध-

रत में जमा करने में फिर दुबारा

जमा खर्च करना पड़ता है -

जो स्टाम्प तहसीलात में सदर से जा

वे वह असली सीगे में जमा करें

और रोज मरह पोता बाकी में नि

कालें जैसा कि नकद का जमा ख

र्च किया जाता है और स्टाम्प का त

फसील बार जमा खर्च वही नम्बर

२२ व २३ के जो रुपया किसी को पेश-

गी दिया जावे या किसी का प्रमानत

जमा किया जावे तो उसका जमा खर्च

उसके नाम से बहवाला उधरत के ब

मूजिवन मूना नम्बर १ के किया जावे

लेकिन जो रकूमात असली सीगा आम

दनी की होवे वह जहां तक हो सके उ-

धरत जमा न की जावे क्योंकि उध-

रत में जमा करने में फिर दुबारा

जमा खर्च करना पड़ता है -

जो स्टाम्प तहसीलात में सदर से जा

वे वह असली सीगे में जमा करें

और रोज मरह पोता बाकी में नि

कालें जैसा कि नकद का जमा ख

र्च किया जाता है और स्टाम्प का त

फसील बार जमा खर्च वही नम्बर

२२ व २३ के जो रुपया किसी को पेश-

गी दिया जावे या किसी का प्रमानत

५ में रहेगा जिसमें स्ताम्प फ़रोर हू

दा की तादाद मज़ कीमत लिखी जा.

वेगी उसका मुकाबला रोज़ मरिह नम

२९ जिसमें से पोता बाकी स्ताम्प रोज़

मरिह का निकाले जावे किया जा.

वेगा और जो स्ताम्प बमूजिब द-

फ़ ५५ के बेचा जावे उसकी की

मत असली सीगा आमदनी स्ताम्प

में जमा कर ली जावे -

दफ़्तर जो किसी कालेना या देना साल गुज़ि

२६

इता में रहा हो और उसका जमा खर्च

इस चलू साल यानी साल रवां की ब-

ही में किया जावे तो वह रकू साल

अगर वह साल ताल गुज़ि इता में कि

सी में लेनी बाकी हो तो इस चलू पा-

नी साल रवां की वही में पुगने पनी

साल गुज़ि इता की वही की बाकी को

میں رہیگا جہیں اسٹامپ فروٹ

شدہ کی تعداد مع قیمت لکھی جائیگی

اسکا مقابلہ روزمرہ بھی نمبر

جہیں سے پورے باقی اسٹامپ

روزمرہ نکالے جاوین کیا جایا

کرے گا اور جو اسٹامپ بموجب

دفعہ ۵۵ کے بیچا جاوے اسکی

قیمت اصلی صیفہ آمدنی اسٹامپ

میں جمع کر لیجاوے

جو کسیکالینا یا دنیا سال گذشتہ

میں رہا ہو اور اسکا جمع خرچ اس

چلو سال یعنی سال روان کی ہی

میں کیا جاوے تو وہ رقمات

اگر بہیات سال گذشتہ میں کسی

میں یعنی باقی ہو تو اس چلو یعنی

سال روان کی ہی میں پورے

گذشتہ کی ہی کی باقی کو

५ में रहेगा जिसमें स्ताम्प फ़रोर शु

दा की तादाद मज़ कीमत लिखी जा

वेगी उसका मुकाबला रोज़ मरहम

२९ जिसमें से पोता बाकी स्ताम्प रोज़

मरह का निकाले जावे किया जा

वेगा और जो स्ताम्प बमूजिब द

फ़ ५५ के बेचा जावे उसकी की

मत असली सीगा आमदनी स्ताम्प

में जमा कर ली जावे -

दफ़्तर जो किसी कालेना या देना साल गुजि

२६

इता में रहा हो और उसका जमा खर्च

इस चलू साल यानी साल रवां की व

ही में किया जावे तो वह रकू साल

अगर बहियात साल गुजि इता में कि

सी में लेनी बाकी हो तो इस चलू पा

नी साल रवां की वही में पुराने पमो

साल गुजि इता की वही की बाकी को

میں رہیگا جمین اسٹامپ فرو

شدہ کی تعداد معتمیت لکھی جائیگی

اسکا مقابلہ روزمرہ بھی نمبر

جمین سے پورے باقی اسٹامپ

روزمرہ نکالے جاوین کیا جایا

کر لیگا اور جو اسٹامپ بموجب

دفعہ ۵۵ کے بیچا جاوے اسکی

قیمت اصلی صیفہ آمدنی اسٹامپ

میں جمع کر لیجاوے

جو کسیکالینا یا دنیا سال گذشتہ

میں رہا ہو اور اسکا جمع خرچ اس

چلو سال یعنی سال روان کی ہی

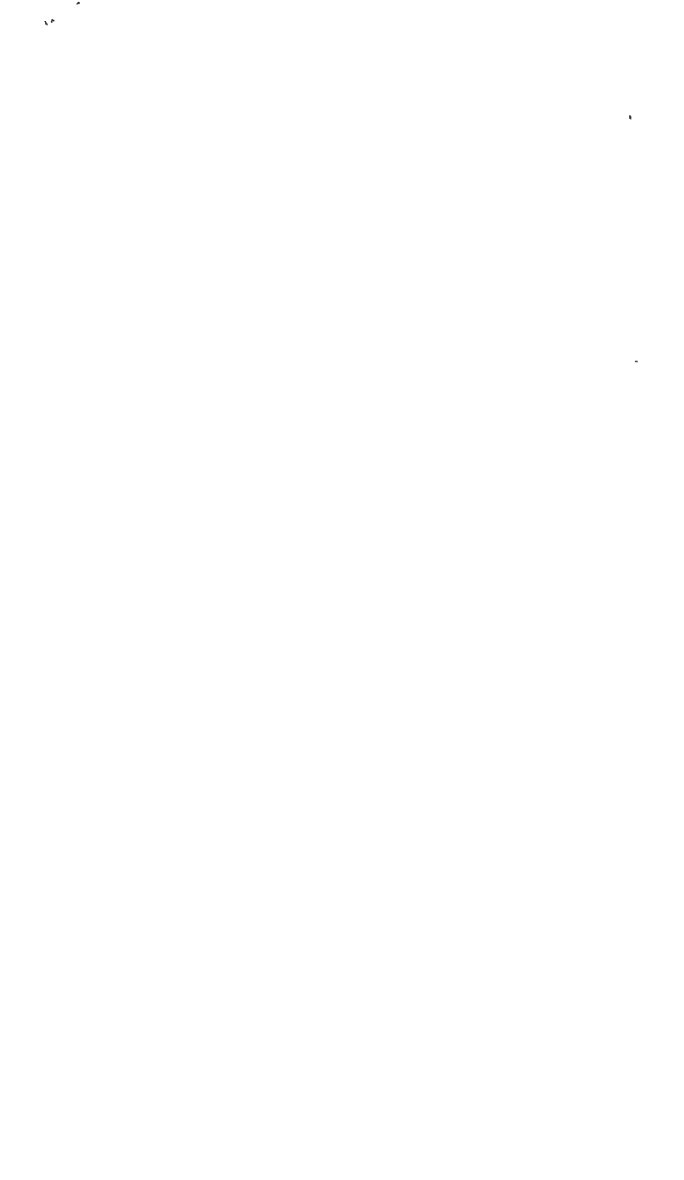
میں کیا جاوے تو وہ رقومات

اگر ہیات سال گذشتہ میں کسی

میں لینی باقی ہو تو اس چلو یعنی

سال روان کی ہی میں پورے

بشتہ کی ہی کی باقی کو



५ में रहेगा जिसमें स्ताम्प फ़रोर झु

दा की तादाद मज़ कीमत लिखी जा

वेगी उसका मुकाबला रोज़ मरहूम

११ जिसमें से पोता बाकी स्ताम्प रोज़

मरह का निकाले जावे किया जा

वेगा और जो स्ताम्प बमूजिब द

फ़ज़ ५५ के बेचा जावे उसकी की

मत असली सीगा आमदनी स्ताम्प

में जमा करली जावे -

दफ़्तर २६ जो किसी कालेना या देना साल गुज़ि

स्तामें रहा हो और उसका जमा खर्च

इस चलू साल यानी साल खांकी ब

ही में किया जावे तो वह रक़ मात

مین رہیگا جسین اسٹامپ فرو

شدہ کی تعداد و معہ قیمت لکھی جائیگی

اسکا مقابلہ روزمرہ بھی نمیشے

جسین سے پورے باقی اسٹامپ

روزمرہ نکالے جاوین کیا جایا

کرئیگا اور جو اسٹامپ بموجب

دفعہ ۵۵ کے بیچا جاوے اسکی

قیمت اصلی صیفہ آمدنی اسٹامپ

میں جمع کر لیجاوے

فہم جو کسیکالینا یا دینا سال گذشتہ

میں رہا ہو اور اسکا جمع خرچ اس

چلو سال یعنی سال روان کی ہی

کے کیا جاوے تو وہ رقمات

تیرا جاوے اور جو بال بالائی

نی پرہارا جمار خیر ہووے وہ

ت بھئی میں رोज مرہ کیا جاوے

م بھئی میں رोज مرہ مہتی بند کر کے

پوتا باکی نکالنے کے دستر و تار

ماہلا اپنے کر کے تہسلیل دار یا اس کے

سب ج جو کام تہسلیل کا کرتا ہووے اس کے

سے دستر و تار کرالیا کرے اس کے کا

رر وارڈ ب مہی ج بن مہنا مہنہ ۱۱ مہنہ

ل کا کا ی دا ہا ج کے کی جاوے -

خیر لکھا جاوے اور جو بال بالائی

پرہارا جمع خیر ہووے وہ

بھی اس ہی میں روز مرہ کیا جاوے

اس ہی میں روز مرہ مہتی بند کر کے

پوٹہ باقی نکال کے دستخط گماشتہ

اپنے کر کے تحصیلدار یا اس کے

جو کام تحصیل کا کرتا ہووے اس کے

دستخط کرالیا اس کے اس کے کارروائی

بموجب نمونہ نمبر انسداد

ہذا کی کیا جاوے -

دفعہ ۲۰ جب کسی گاؤں یا جہاں میں راج کے

کے کسی کے متعلقہ یا کی دے دے

ر گاؤں یا جہاں میں راج کا راج

کرنے کے لئے تحصیلدار حکم صادر

دیر کرے تو اس کو پابند کرے

ر و پیر میں مشالہ میں

تین تین تین تین تین

تین تین تین تین تین

تین تین تین تین تین

جب کسی گاؤں یا جہاں میں راج کے

کئی قسم کے مشالہ باقی ہووے

اور گاؤں یا جہاں میں راج کا راج

کرنے کے لئے تحصیلدار حکم صادر

کرے تو اس کو پابند کرے

روپیہ میں مشالہ میں

تین تین تین تین تین

تین تین تین تین تین

[illegible]

لکھا جاوے اور جو بال بال لکھنی
 پر بہارہ جمع خرچ ہووے وہ
 بھی اس ہی میں روزمرہ کیا جاوے
 اس ہی میں روزمرہ ہی بند کر کے
 پورہ باقی نکال کے دستخط لکھتے
 اپنے کر کے تحویل دے دیا اس کی غرض
 جو کام تحویل کا کرتا ہووے اس کے
 دستخط لکھ کر اس کی کارروائی
 بموجب نمونہ نمبر انسٹیکٹ کا
 بڑائی کیا دے -
 ن کا کا پدا ہا ج کے کی جاوے -

دفعہ ۲۰ جب کسی کانو یا آسامی میں ایجنٹ
 کسی قسم کے مطالبہ باقی ہووے
 اور کانو یا آسامی کا رویہ میں
 کہتے ہیں کہ تحویل دے دیا اس کی غرض
 کہ جسے تو مستند چاہئے کہ وہ
 روپیہ جسے مطالبہ میں تھا
 جسے میں چاہئے کہ وہ

مہدیشیشو مہستاجمان کو ہاجیرہ

سکے مہتاجلیک سکے مہنمبر ۱۲ ہے۔

مہدیشو مہتاجلیک سکے مہنمبر

تلیک تین دہیان و سکے راجستر

ہستجیل ہے۔

بہی نمبر ۱۳ نکل تین دات۔

بہی نمبر ۱۴ یادداشت۔

بہی نمبر ۱۵ نکل کام جات رواج

مہنمبر ۱۶ راجستر رواج کام جات۔

مہنمبر ۱۷ راجستر رواج کام جات

دکھ ۱۲ اس مہد کے مہتاجلیک دہیان

رک کام جات ہے۔ بہی نمبر ۱۷ راجستر

مہنمبر ۱۸ رواج۔

دکھ ۱۳ بہی نمبر ۱۸ رواج

مہنمبر ۱۹ رواج

مہنمبر ۲۰ رواج

مہنمبر ۲۱ رواج

مہنمبر ۱۲ رواج

مہنمبر ۱۳ رواج

مہنمبر ۱۴ رواج

مہنمبر ۱۵ رواج

مہنمبر ۱۶ رواج

مہنمبر ۱۷ رواج

مہنمبر ۱۸ رواج

مہنمبر ۱۹ رواج

مہنمبر ۲۰ رواج

مہنمبر ۲۱ رواج

مہنمبر ۲۲ رواج

مہنمبر ۲۳ رواج

مہنمبر ۲۴ رواج

مہنمبر ۲۵ رواج

مہنمبر ۲۶ رواج

مہنمبر ۲۷ رواج

مہنمبر ۲۸ رواج

نکشنہ ہے۔

نکشنہ ہوا۔

نکشنہ کا نمبر ۱۔

نکشنہ کا نمبر ۲۔

نکشنہ کا نمبر ۳۔

نکشنہ کا نمبر ۴۔

نکشنہ کا نمبر ۵۔

نکشنہ کا نمبر ۶۔

نکشنہ کا نمبر ۷۔

نکشنہ کا نمبر ۸۔

نکشنہ کا نمبر ۹۔

نکشنہ کا نمبر ۱۰۔

نکشنہ کا نمبر ۱۱۔

نکشنہ کا نمبر ۱۲۔

نکشنہ کا نمبر ۱۳۔

نکشنہ کا نمبر ۱۴۔

نکشنہ کا نمبر ۱۵۔

نکشنہ ہے۔

نکشنہ ہوا۔

نکشنہ کا نمبر ۱۔

نکشنہ کا نمبر ۲۔

نکشنہ کا نمبر ۳۔

نکشنہ کا نمبر ۴۔

نکشنہ کا نمبر ۵۔

نکشنہ کا نمبر ۶۔

نکشنہ کا نمبر ۷۔

نکشنہ کا نمبر ۸۔

نکشنہ کا نمبر ۹۔

نکشنہ کا نمبر ۱۰۔

نکشنہ کا نمبر ۱۱۔

نکشنہ کا نمبر ۱۲۔

نکشنہ کا نمبر ۱۳۔

نکشنہ کا نمبر ۱۴۔

نکشنہ کا نمبر ۱۵۔

نکشنہ کا نمبر ۱۶۔

یانی جیس کدر روپ یا ب ستانم بگو

ر: پوتا ہووے وہ سناں لیا ک

ر -

کاسل دوم کار روائی

دکار ہندی

دکار تھسیلات کے دکار ہندی کی کار

۲۰

روائی سات مہوں میں تکسیم کی

جاتی ہے کول چوہہ وھیات و

سکر راجسٹر و سکر نکشاہ

سب ذیل مدار رکھے جائیگے -

مدرجہ اول کار روائی جما رکھے

جیس کے تہہ تلک دہا ہیات -

وہی نمبر ۱ رج ناما چا و وہی -

نمبر ۲ رواتا - ہ -

مدرجہ دوم حساب ماموری و انکڑہ

سالانہ طیار کرنے اور بھینچنے کا

طریقہ جس کے متعلق ایک بھی دیکھ

یعنی بقدر روپیہ واسٹا سب

و غیرہ پوٹہ ہووے وہ سناں

لیا کرے -

فصل دوم کار روائی

دفتر ہندی

تھسیلات کے دفتر ہندی کی

کار روائی سات مہوں میں تقسیم

کیجاتی ہے کل چوہہ بہیات و

ایک حبسٹر و ایک نقشہ

سب ذیل مدار رکھے جائیگے

مدرجہ اول کار روائی جمع خرچ جس کے

تعلق دو بہیات -

بھی نمبر ۱ روزنامہ و بھی نمبر ۲

کہاتہ - ہین

مدرجہ دوم حساب ماموری و انکڑہ

سالانہ طیار کرنے اور بھینچنے کا

طریقہ جس کے متعلق ایک بھی دیکھ

تو جی مکتی پوتا جاکی نکال۔

نہ نہ ہڈے لے دھک و بھل لے دھک

کے تپ دے ازل ہوا ازل ہوا

تو جاوینگے۔

جاوینگے اور روتی ہوئے باقی

نکالنے میں بڑی تندہی و تپ

مندی کے روپہ علیحدہ ہو

لکے جاوینگے۔

۱۹۴۵
۲۵
تو جی لے دھک کو باقی نکال

تو جی لے دھک کو باقی نکال

کسی مہر کا نام نہ کسی کے

کسی مہر کا نام نہ کسی کے

تو جی لے دھک کو باقی نکال

تو جی لے دھک کو باقی نکال

کسی مہر کا نام نہ کسی کے

کسی مہر کا نام نہ کسی کے

تو جی لے دھک کو باقی نکال

تو جی لے دھک کو باقی نکال

کسی مہر کا نام نہ کسی کے

کسی مہر کا نام نہ کسی کے

تو جی لے دھک کو باقی نکال

تو جی لے دھک کو باقی نکال

کسی مہر کا نام نہ کسی کے

کسی مہر کا نام نہ کسی کے

تو جی لے دھک کو باقی نکال

تو جی لے دھک کو باقی نکال

کسی مہر کا نام نہ کسی کے

کسی مہر کا نام نہ کسی کے

۱۹۴۵
۲۵
تو جی لے دھک کو باقی نکال

تو جی لے دھک کو باقی نکال

کسی مہر کا نام نہ کسی کے

کسی مہر کا نام نہ کسی کے

تو جی لے دھک کو باقی نکال

تو جی لے دھک کو باقی نکال

मंजूर कर दिया हो -

نظر کر لیا ہو -

दृष्ट
२४

खजानची की तुलसी में एक हजार पांच

خزانچی کی سپردگی میں ایک ہزار پانچ

सौ रुपये से जयादह न रक्खे जावेंगे जो

روپیہ سے زیادہ نہ رکھے جاوینگے

रुपया इस तादा से जयादह होवे वह

جو روپیہ اس تعداد سے زیادہ

दूसरे संदूक में रक्खे जावेंगे जिसके

ہو دے وہ دوسرے صندوق

दो ताले लगाये जावेंगे एक ताले

میں رکھے جاوین گے جسکے دو

की कुंजी अफसर खजाने के पास

ताले لگائے जावین گے

और दूसरे ताले की कुंजी ख-

ایک تالے کی کُنْجی افسر خزانہ

जानची के पास रहा करेगी औ

के पास اور دوسرے ताले

र जब जरूरत इस संदूक

کی کُنْجی خزانچی کے پاس رہا کرے

में से रुपया वास्ते चलू रख

گی اور جب ضرورت اس صندوق

के हो निकाल दिये जावेंगे

میں سے روپیہ واسطے چلو خرچ

और जो रुपया पांच सौ से ज

के ہونکال دیئے जाوینگے اور

यादह होवे वह रख दिया

جو روپیہ پانسو سے زیادہ ہو

जावेगा लेकिन बड़े यानी

وہ رکھ دیا جاوے گا لیکن بڑے

दो ताले के संदूक में रुपया

یعنی دو تالے کے صندوق میں

पर सैंकडे रक्खे जावेंगे और

روپیہ پورے سینکڑہ رکھے

पर नम्बर सदर से लग कर आ.

या हो जमा रोज नामचा में न कि

या जावे -

जैसी हुئی کے جس پر صدر سے

لگ کر آیا ہو جمع روز نامچہ میں لکھا

جاوے -

دफتر १३ अक्षर खजाना को चाहिये कि ज.

यादा रुपया खजाने में इकट्ठा न होने देवे

अगर मुअ्तबिर साहिब जायदाद की हुं

डी बीकानेर की बिलात गने हुंडावन के

मिले तो जिस तिक्के का रुपया हो उसी

तिक्के की हुंडी दस रोज तक की मिला

रकी खरीद कर सदर में भेज देवे अगर

हुंडी इस मुबाफिक न मिल सके तो

रुपयानक सदर में जाब्तो के साथ

भेज देवे - और जहां तक मंजूरी

कंसल हो उस तादाद तक हुंडी

ली जावेगी -

नोट

जैसे सादर का तादद की है तिसके से कल

افسر خزانہ کو چاہئے کہ زیادہ روپیہ

خزانہ میں اکٹھا نہ ہونے دے

اگر معتبر صاحب جائداد کی ہنڈی

بیکانیر کی بلا لگنے ہنڈاؤن کے

ملے تو جس سکے کا روپیہ ہو اسی

سکے کی ہنڈی دس روز تک کی

سیجاد کی خرید کر صدر میں بھیج دیں

اگر ہنڈی اس موافق نہ مل سکے

تو روپیہ نقد صدر میں منسلک کے

ساتھ بھیج دیں - اور جہاں تک

مشورہ کی کونسل ہو اس تعداد تک

ہنڈی لیا جائے گی -

نوٹ

جیسے یہاں تک کہ یہ سکے کونسل

دفعہ ۱۳

تو ہے تب تک رسید کی کتاب
سال گزشتہ کی جاری کی
باوے اور چلو سال کے لئے
پچھلے کتاب رسید کی جاری
لیجاوے اور پچھلے سال کی رسید
میں مئی جس روز روپیہ جمع
کیا گیا ہو لکھی جاوے لیکن
اس میں حوالہ حیات بدماوس
سدا چھپے سالوں کا لکھنا
کرین۔

یہ رسید کی کتاب چھپنے
کے خرچ کے اندازہ کی تحصیل
میں موجود رکھی جاوے جب
اس اندازہ سے رسیدوں
کے فارم کم ریجا وین کو ریوٹ
کر کے صدر سے منگوا لیا دی
اور کوئی روپیہ ملاوٹ نہ

دکان پر یہ رسید کی کتاب چھپنے
۹۲ کے رجب کے گنڈاڑے کی تھ سیل
میں نہ جڑ رکھی جاوے جب اس
درجہ سے رسیدوں کے فارم کم رہ
تو وہ نہ رپوٹ کر کے صدر سے من
گا لیا جاوے اور کوئی روپیہ
ملاوٹ نہ

یہ رسید کی کتاب چھپنے
کے خرچ کے اندازہ کی تحصیل
میں موجود رکھی جاوے جب
اس اندازہ سے رسیدوں
کے فارم کم ریجا وین کو ریوٹ
کر کے صدر سے منگوا لیا دی
اور کوئی روپیہ ملاوٹ نہ

हालात निखनेकेलिये जगहरखा	हونगे और उसके हालात लिखने
सी छोड़ी जावेगी उनकी खाना	के लिये जगह ताली जेठूरी जा
पुरी हाशायरी के साथ दोनो प.	अन्की खाने पुरी होशियारी के
उतों में बराबर की जावे -	साथ दोनो पुरतोन में एक प्याद
नम्बर रसीद सिलसिलेवार सालाना	नम्बर रसीद सिलसिलेवार सालाना -
नाम तहसील - सम्बल व मिति -	नाम तहसील - سمت و مिति -
नाम व नम्बर सीगा व पट्टे के सी-	नाम व नम्बर सीगा व पट्टे के सी-
गा के नाम व नम्बर - नाम जिसके	के नाम व नम्बर - नाम जिसके
हाथ रुपया जमा कराया गया व प्रा-	रुपये جمع कराया गया व آخر में नाम
खिर में नाम लाने वाले रुपये का - दस्तखत	लाने वालों रुपये का - دستخط
खजानची यानी गुमास्ता तहसील का	یعنی گماشته تھسیل کا - دستخط
دستخات प्रफूसर खजाना यानी तहसीलदार का	افسر خزانہ یعنی تحصیلدار کا
दफ्तर वाजह हो कि चैत सुदी १ को साल	دفعہ ۱۱ دفع ہو کہ چیت سدی ایکم کو
۱۹	سال شروع اور چیت بداموس
موجود اور چैत बदमावत को	کو سال ختم ہوتا ہے سال اخیر
سال खतम होता है साल अखीर	دا یوم تک مٹی بموجب دفعہ
पर १५ फौजत कमिती व मजिब	۲۲ کے اسمی کی جاسکتی
دफ्तर ۳۲ کے खुली रखी जात	

نوٹ # دس دھڑ میں سٹامپ کی رسی دے

نے کے لیے لیا گیا تھا ہے لیکن جو سٹامپ

تھ سٹیل کی گھر بدستور سے بمبئی

دھڑ ۲۲ کے بے جا جابے اس کی قیمت کی

رسی دے دی جابے -

دھڑ ۲۰ راجا کی تھ سٹیل کو چاہیے کہ

س کی سٹیل کو روپا راجا نے دے دیا جابے

اس کی رسی دے اس کے حکم کے نیچے

ہوا کا گڑھ پر روپا لےنے والے سے

لیرا کر روپا دیا کرے اور

سٹامپ رسی دے شامل اس کے حکم

کے کر دیا کرے جو رسی دے راجا نے

میں روپا جما اس کی بمبئی

دھڑ ۲۱ کے دی جابے گی ان کی

دھڑ ۲۱ سے دھڑ ۲۱ کے دی جابے

دھڑ ۲۱ کے دی جابے

نوٹ * اس دفعہ میں اس کے رسی

دے دینے کے لیے لیا گیا ہے لیکن جو

تھ سٹیل کے ہر دو سٹیل سے بمبئی

کے بے جا جابے اس کی قیمت کی

دیا دے فقط -

نیز اپنی تھ سٹیل کو چاہیے کہ جس کے

روپیہ خزانہ سے دیا جابے اس کی

رسی اس حکم کے نیچے یا علی

کا غد پر روپیہ لینے والے

سے لیا کر روپیہ دیا کرے اور

ایسی اصل رسی شامل اس حکم

کے کر دیا کرے جو رسی

خزانہ میں روپیہ جمع ہو

کی بمبئی دفعہ ۹ کے دی جابے

ان کی کتاب صدر سے دھڑ ۲۱

چھپی ہوئی آیا کرے گی ان رسی

میں اس کے دھڑ ۲۱ کے

چاہے یا نہ چاہے یا خیر است
 لینا چاہے اسکو چاہے کہ اسکی
 بارہ حکم بار پورٹ یا کیفیت تحصیل میں
 بھیجو یا پیش کرے اور تحصیلدار
 اگر روپیہ جمع کرنا یا دلانا مناسب
 سمجھے تو حکم بنام خزانچی تحصیل کے
 واسطے جمع کرنے یا دینے روپیہ کے
 صادر کرے اور جس صیفہ یا گاہ
 پیٹھ کے صیفہ میں روپیہ جمع
 کرنا چاہے یا دلانا چاہے
 اس کے نمبر یا نام بھی اسنے حکم
 میں تحریر کر دیا کرے اگر کسیکا اور
 جمع کرنا ہو یا دلانا ہو تو حکم میں اور
 کا حوالہ لکھ دیا کریں -

دکن
 ۷
 راجان کی تہسیل کو چاہیے کہ بلا تحریر حکم
 تہسیر حکم کے کوئی روپیہ نہ جمع کرے اور
 نہ دیوے اور اگر حکم میں صیفہ کا

دفعہ ۵ اس دستور العمل میں کوئی ترمیم یا ترمیم نہ

کئی پیشی سوائے حکم محکمہ پستی کوئٹہ

کے نہ کیجاو گی اور جب تک ایسے حکم

کے ساتھ ترمیم نہ کیجاوے تب تک

پورے طور پر پابندی و تعمیل اس

دستور العمل کی کرنی ہوگی محکمہ حساب

سے وقتاً فوقتاً تجویزات دربارہ ترمیم

یا ترمیم وغیرہ قواعد سندرجہ دستور العمل

ہذا محکمہ عالیہ کوئٹہ میں برائے صدور

حکم مناسب پیش ہوتے رہیں گے۔

دفعہ ۶ حصہ اول دستور العمل ہذا کا تعلق محملوں

پر حسب ذیل منقسم ہے

فصل اول دربارہ کارروائی خزانہ

فصل دوم دربارہ کارروائی دفتر محکمہ

فصل سوم دربارہ ہدایات متفرقات

فصل اول کارروائی خزانہ

دفعہ ۷ ہر کوئی ریویز خزانہ تحصیل سے

دفعہ ۸ جس کے تحت رقم خزانہ محکمہ میں

یا ناب تحصیلدار یا کسی اور شخص سے
 یہ ہے جسکو چاہے تحصیل کا بحکم محکمہ
 کونسل کے دیا جاوے۔

۲۔ خزانچی سے مراد گائشیہ تحصیل
 یا کسی دوسرے شخص سے ہے جسکی
 سپردگی میں خزانہ تحصیل کا بحکم محکمہ
 رجنسی کونسل کے رکھا جاوے۔

۳۔ حصہ سے مراد اس دستور العمل
 کے حصہ کی ہے۔

۴۔ دفعہ سے مراد اس دستور العمل
 کی دفعہ کی ہے۔

دفعہ ۸ تمام بھڑا حکام جو متعلقہ کارروائی

۸

رہا دیہیسا بٹ دسلیا تک پہلے جاری کی

یہ گھر ہوں اور ریلوے اس

لکھنؤ کے ہو وہ تاریخ

ہوئے اس دستور العمل

سمت کے جاویں گے۔

تمام وہ احکام جو متعلقہ کارروائی

حساب تحفیلات کے پہلے جاری

کئے گئے ہوں اور خلاف اس

دستور العمل کے ہو وہ تاریخ

جاری ہونے اس دستور العمل

سے منسوخ سمجھے جاویں گے۔

کارروائی خزانہ و دفتر ہندی وغیرہ کی دیکھ کر کارر بارے میں جاننا و دیکھ کر ہندی وغیرہ کی

تحریر کی جاوے گی کیونکہ ریاست ہذا میں یہ تحریر کی جاوے گی کیونکہ ریاست ہذا میں یہ

میں سے متعلقہ حساب کے بین اویسی میں سے متعلقہ حساب کے بین اویسی

لیاٹھ سے پہلے بھی ایسے قاعدہ کا لیاٹھ سے پہلے بھی ایسے قاعدہ کا

نام یادداشت کارروائی حساب نام یادداشت کارروائی حساب

زبان لیا تھا اسلئے اسکا نام بھی لکھ لیا تھا اسلئے اسکا نام بھی لکھ

محمد حساب کے سری بیکانیر لکھا جاتا محمد حساب کے سری بیکانیر لکھا جاتا

ہے اور حصہ اول سے متعلقہ حساب کے ہے اور حصہ اول سے متعلقہ حساب کے

تخصیلات کا تہی جیت سدی ایکم تخصیلات کا تہی جیت سدی ایکم

بار سوم ۱۹۴۶ء مطابق تاریخ یکم مارچ بار سوم ۱۹۴۶ء مطابق تاریخ یکم مارچ

۱۹۴۹ء کے کچھ تخصیلات ریاست ۱۹۴۹ء کے کچھ تخصیلات ریاست

ہذا میں جاری کیا جاوے گا - ہذا میں جاری کیا جاوے گا -

دفعہ حصہ اول دستور العمل ہذا میں جہاں پر دفعہ حصہ اول دستور العمل ہذا میں جہاں پر

کوئی عبارت متن قصہ نہ ہو تو فہم کوئی عبارت متن قصہ نہ ہو تو فہم

نیچر کے تحت ہوئے نام اور غرضوں سے نیچر کے تحت ہوئے نام اور غرضوں سے

مب و فہم غرضوں سے ہوئے گئے - مب و فہم غرضوں سے ہوئے گئے -

۱۰ - دفتر خزانہ سے مقررہ ضمیمہ ۱۰ - دفتر خزانہ سے مقررہ ضمیمہ

دستور العمل محکمہ حساب راج

سری پیکا پتھر

حصہ اول متعلقہ حساب و کتاب

تخصیلات

دستور العمل محکمہ حساب راج

۹

مہکمہ محکمہ حساب کی طیار کی گئی اور پھر وہ

یادداشت محکمہ مال کے دستور العمل

کے شامل اسی سمت میں چھپو اگر جاری

کی گئی اٹمین نسبت کارروائی حساب

تخصیلات کے لکھا گیا تھا لیکن اٹمین

ہدایت صاف طور سے نہیں لکھی گئی

اور بعد میں اٹمین کی بخشی بھی کی گئی

اس کے حصہ اول دستور العمل ہدایت

ترتیب حساب تخصیلات کے حسب

ذیل جاری کیا جاتا ہے -

دستور العمل محکمہ حساب راج

۲۰ اس دستور العمل میں غلطیوں سے بچنے کے

دستور العمل محاسب راج سری بکانه

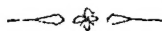
حصہ اول

متعلقہ حساب و کتاب تحصیل

۱۸۹۹ء

دستور العمل اسم لکھنؤ محاسب راج سری بکانه

ہیسسا اہول



موتہر لکھنؤ محاسب راج سری بکانه

سہ ماہ ۱۸۹۹ء

مطبوعہ صدر جیل پریس راج سری بکانه

مناظرہ سدر جیل پریس راج سری بکانه

